NEET Bulletin Helpline No.
8800265682
Completely NEET Counselling Guidance
specially for
MBBS BDS BAMS BHMS BUMS
B.Sc Nursing GNM D./ B. Pharma
BPT MPT D/BMLT D.Optometry
OT Technician Clinical Research
B.Sc Ag. Micro Bio Bio Chem
Bio tech. BNYS etc.

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक
विजडम इंडिया
निर्भीक और बेबाक अभिव्यक्ति
EMAIL: sheelshukla100@gmail.com
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
लखनऊ से प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 126 लखनऊ, मंगलवार 19 दिसंबर 2023 मूल्य: 02 रुपये पृष्ठ- 08

मेरी कहानी मेरी जुबानी कार्यक्रम के दौरान महिला का आत्मविश्वास देख गदगद हुए पीएम मोदी

संवाददाता।

वाराणसी। प्रधानमंत्री ने पूछा कि आप इतना बढ़िया भाषण देती हैं, क्या पहले चुनाव लड़ चुकी हैं? इसपर चंदा देवी ने इनकार किया। इसके तुरंत बाद प्रधानमंत्री ने चंदा देवी से पूछा कि क्या आप चुनाव लड़ेंगी? वाराणसी। विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान हर कोई उस समय आश्चर्य चकित रह गया जब एक लाभार्थी महिला से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूछ लिया कि क्या वो चुनाव लड़ेंगी। दरअसल, सोमवार को वाराणसी के सेवापुरी ब्लॉक स्थित बरकी ग्राम सभा में आयोजित विकसित भारत

संकल्प यात्रा के दौरान मेरी कहानी मेरी जुबानी कार्यक्रम में पीएम मोदी के सामने लाभार्थी महिला चंदा देवी अपने अनुभवों को साझा कर रही थीं। चंदा देवी के आत्मविश्वास से प्रभावित प्रधानमंत्री ने उनसे पूछा कि आपकी पढ़ाई कितनी हुई है। चंदा देवी ने बताया कि वो इंटर तक पढ़ी हुई हैं। इसपर प्रधानमंत्री ने पूछा कि आप इतना बढ़िया भाषण देती हैं, क्या पहले चुनाव लड़ चुकी हैं? इसपर चंदा देवी ने इनकार किया। इसके तुरंत बाद प्रधानमंत्री ने चंदा देवी से पूछा कि क्या आप चुनाव लड़ेंगी? चंदा देवी ने कहा कि वो चुनाव नहीं लड़ेंगी मगर वो प्रधानमंत्री से प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि आपके प्रयासों से हम कदम मिलकार चलना चाहते हैं। आपके सामने उपस्थित होना और दो बातें कहना मेरी लिए सौभाग्य की बात है। प्रधानमंत्री ने चंदा देवी से उनके बच्चों की पढ़ाई के बारे में भी पूछा। यह भी पूछा कि कामकाजी महिला होने पर परिवार का ध्यान रखने में कोई दिक्कत तो नहीं।

पीजीआई लखनऊ में शार्ट सर्किट से लगी भीषण आग, एक महिला व बच्चे की दर्दनाक मौत

संवाददाता।

लखनऊ लखनऊ पीजीआई के ओटी में स्पार्क से आग लगने की घटना में दो मरीजों की मौत हो गई। हादसे में एक महिला व एक बच्चे की मौत हुई है।राजधानी लखनऊ के पीजीआई अस्पताल में सोमवार को शॉर्ट सर्किट से भीषण आग लग गई। हादसे में एक महिला व एक छोटे बच्चे की दर्दनाक मौत हो गई। मामले में उच्चस्तरीय जांच के आदेश दिए गए हैं। शहर के संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान के ओटी एक में अपराह्न 12.40 पर मॉनिटर में स्पॉर्क होने के कारण आग लग गई और पहले वर्क स्टेशन और फिर पूरी ओटी में फैल गई। ओटी में धुआं भर जाने से एक महिला रोगी, जिसकी

एन्डोसर्जरी ओ टी में सर्जरी चल रही थी व एक बच्चे को जिसकी ह्रदय की सर्जरी हो रही थी की मौत हो गई। हालांकि, इस दौरान अन्य मरीजों को दूसरे वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया है। प्रदेश में उपमुख्यमंत्री व स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक ने घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए जांच के आदेश दिए हैं। आग किन कारणों से लगी है उसकी जांच की जाएगी और पीड़ित परिजनों की हरसंभव सहायता की जाएगी।

माता सीता का विवाह को खैलार मैं विवाह पंचमी के रूप में मनाया गया

झांसी! रविवार विवाह पंचमी पर खैलार मै संपन हुआ राम और माता सीता का विवाह में को खैलार मैं विवाह पंचमी के रूप में मनाया गया इस अवसर पर मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री रामचंद्र और माता सीता जी का विवाह संपन्न हुआ जिसमें बबीना विध

ायक राजीव सिंह परिछा जिला अध्यक्ष हेमंत परिहार और कस्बे के सभी समाजों के लोगों एक साथ एकजुट दिखाई दिए कार्यक्रम को भव्यता प्रदान करने के लिए सभी समाजों के लोगों ने अपना सहयोग प्रदान किया संपूर्ण नगर को दुल्हन की तरह सजाया गया था सुबह से ही राम जानकी मंदिर को भक्तों के द्वारा सजाया गया राम जानकी मंदिर से मर्यादा श्री प्रभु रामचंद जी की बारात पुरी भव्यता के साथ निकल गई बारात में जुलूस में के खैलार कस्बे के इस अवसर पर नगर में नगर में मौजूद धर्म संगठनों ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया बैंड बाजे और डीजे के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चंद्र की बारात का शुभारंभ राम जानकी मंदिर से किया गया जो भ्रमण करते हुए भेल पावर हाउस से में रोड होते हुए वापस राम जानकी मंदिर पर समापन किया गया बारात के दौरान रामचंद्र जी के भक्ति डीजे पर बज रहे धार्मिक गीतों पर नाचते गाते रहे थे प्रभु राम के जयकारे लगाकर नगर में जयकारा लगा रहे थे रास्ते में लोगों द्वारा जमकर आतिशबाजी भी की जा रही थी और फूल बरसा रहे थे और जुलूस में बागी और घोड़े पर विभिन्न देवी देवताओं केस्वरूप विराजमान थे राम जी की बारात का स्वागत करने के लिए भी राम भक्ति अत्तूर थे और जगह–जगह बारात में शामिल लोगों का स्वागत व जलपान किया जा रहा था

फल वितरित कर मनाया आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज का जन्म महोत्सव

झांसी! नगर के गांधी रोड स्थित श्री दिगम्बर जैन पंचायती बड़ा मंदिर के मुख्य द्वार से दिगम्बर जैन श्रमण परम्परा के महान आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महामुनिराज के 52 वें जन्मपर्व (अवतरण दिवस) के शुभ अवसर पर श्री दिगम्बर जैन पंचायत समिति झांसी

के संवैधानिक अध्यक्ष अजित कुमार जैन की अध्यक्षता में आम जनमानस के लिए फल वितरित किए गए। इस अवसर पर पंचायत कनिष्ठ उपाध्यक्ष वरुण जैन,प्यावल तीर्थ मंत्री खुशाल जैन, करगुंवा मंत्री संजय सिंघई,ऑडिटर राजकुमार भण्डारी,मनोनीत सदस्य गौरव जैन ष्नीमष्, सौरभ जैन सर्वज्ञ,पुलक जन चेतना मंच मुख्य शाखा के अध्यक्ष दिनेश जैन डीके, अलंकार जैन,मनोज सिंघई,रविंद्र जैन षचिरगांवष, दीपांक सिंघई,अंशुल जैन मेडिकल,सजल जैन चौनू, आनन्द जैन वारे, राजीव जैन मुंगावली, आदि उपस्थित रहे। इस दौरान कार्यक्रम का संचालन कर युवा समाजसेवी सौरभ जैन सर्वज्ञ ने कहा कि दिगम्बर जैन श्रमण परम्परा के महान आचार्य जन–जन के सर्वोदयी संत,अध्यात्मयोगी, चर्या शिरोमणि राष्ट्र गौरव आदि अनेक उपाधियों से विभूषित आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महामुनिराज दीर्घायु शतायु होकर सदैव अपनी ज्ञान रूपी गंगा से संसार के समस्त प्राणियों को अभिसिंचित करें। कार्यक्रम के अंत में गौरव जैन नीम ने आभार व्यक्त किया।

नीतीश कुमार को घोषित करें पीएम का चेहरा, इण्डिया गठबंधन की बैठक से पहले किसने कर दी ये मांग

एजेंसीं

नई दिल्ली इंडिया गठबंधन की बैठक के एक दिन पहले ही नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड के नेता ने एक ऐसी मांग कर दी है, जिससे कांग्रेस पार्टी का जायका बिगड़ सकता है। भारतीय राष्ट्रीय जनतांत्रिक अखंडता गठबंधन इंडिया) के नेता 19 दिसंबर को दोपहर 3 बजे नई दिल्ली में अपनी चौथी बैठक के लिए तैयारी कर रहे हैं। क्षेत्रीय दलों वाले गठबंधन का लक्ष्य आगामी 2024 लोकसभा चुनावों के लिए रणनीति बनाना है। सभी की निगाहें बिहार के मुख्यमंत्री (सीएम) नीतीश कुमार और राजद प्रमुख और पूर्व सीएम लालू प्रसाद यादव पर हैं। दोनों बैठक में भाग लेंगे और संभवतरू 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा से मुकाबला

करने के लिए सीट बंटवारे और एजेंडे को अंतिम रूप देने में निर्णायक भूमिका निभाएंगे। इस बीच इंडिया गठबंधन की बैठक के एक दिन पहले ही नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड के नेता ने एक ऐसी मांग कर दी है, जिससे कांग्रेस पार्टी का जायका बिगड़ सकता है। जदयू के विधायक ने नीतीश कुमार को प्रधानमंत्री का चेहरा घोषित करने की मांग की है। जेडीयू के बाल्मिकी नगर विधायक और नीतीश कुमार के बेहद करीबी रिंकू सिंह ने बयान जारी किया है। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि नीतीश कुमार स्वच्छ और ईमानदार छवि के व्यक्ति हैं। उनको छोड़कर इंडिया गठबंधन में कोई ऐसा चेहरा नहीं है, जिसको आगे करके लोकसभा का चुनाव जीता जा सकता है। राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव, बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के साथ, महत्वपूर्ण सभा से पहले चुनाव के लिए विपक्षी गुट की संभावनाओं पर विश्वास व्यक्त किया। बिहार के पूर्व सीएम लालू प्रसाद यादव ने कहा कि हम इंडिया बैठक के लिए एक साथ आए हैं। इसका (गठबंधन) उज्ज्वल भविष्य है। हम जीतेंगे और इंडिया गठबंधन इस बार सरकार बनाएगा और एकजुट होकर पीएम मोदी की सरकार को उखाड़ फेंकेंगे। तेजस्वी यादव ने बैठक के एजेंडे पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हर चीज पर चर्चा होगी. समिति अपना काम देख रही है। हम सार्वजनिक रूप से यह नहीं बता सकते कि क्या काम किया जा रहा है. चुनाव के लिए जो भी तैयारी होनी चाहिए हम कर रहे हैं।

मुठभेड़ में दो बदमाशों के पैर में लगी गोली,,तीसरा बदमाश मौके से फरार

झांसी! बरुआसागार लूट की घटना के बाद पुलिस और एसओजी टीम लगातार बदमाशों को पकड़ने के लिए दे रही थी दबिश,, लूट की पिकअप बेचने मध्य प्रदेश की तरफ जा रहे थे बदमाश,,इसी दौरान सूचना मिलने पर पुलिस व एसओजी टीम ने घेराबंदी कर बदमाशों को ललकारा,, जिसके बाद बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग कर दी ,,जिसके बाद पुलिस ने आत्म सुरक्षा हेतु जवाबी फायरिंग की जिसमे दो बदमाशों के पैर में गोली लगी है,, मुठभेड़ में घायल दोनों बदमाशों को इलाज के लिए अस्तपाल भेजा गया है,, वही बदमाशों से लूट की पिकअप बरामद कर पूछताछ की जा रही है,,लूट में शामिल तीसरे बदमाश की तलाश जारी

केजरीवाल से मिलेंगी ममता बनर्जी, किन मुद्दों पर होगी बात ?

एजेंसी

नई दिल्ली इंडिया ब्लॉक की बैठक 19 दिसंबर (मंगलवार) को नई दिल्ली में होने वाली है। यह विपक्षी गठबंधन की चौथी बैठक होगी और पांच विधानसभा चुनावों – तेलंगाना, मिजोरम, छत्तीसगढ़, राजस्थान और मध्य प्रदेश के नतीजे घोषित होने के बाद पहली बैठक होगी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी आज दिल्ली में इंडिया ब्लॉक की बैठक से पहले अपने दिल्ली समकक्ष अरविंद केजरीवाल से मुलाकात कर सकती हैं। सूत्रों के मुताबिक, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सुप्रीमो आज शाम 5 बजे दिल्ली में आम आदमी पार्टी (आप) प्रमुख से मुलाकात करेंगी। यह बैठक दिल्ली में भारतीय गठबंधन की बैठक से कुछ घंटे पहले हो रही है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री चार दिवसीय दौरे पर रविवार को दिल्ली पहुंचीं। इंडिया ब्लॉक की बैठक 19 दिसंबर (मंगलवार) को नई दिल्ली में होने वाली है। यह विपक्षी गठबंधन की चौथी बैठक होगी और पांच विधानसभा चुनावों – तेलंगाना, मिजोरम, छत्तीसगढ़, राजस्थान और मध्य प्रदेश के नतीजे घोषित होने के बाद पहली बैठक होगी। सूत्रों के मुताबिक, तृणमूल कांग्रेस प्रमुख को बुधवार, 20 दिसंबर को सुबह 11 बजे संसद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने का समय भी मिल गया है। वह केंद्र से पश्चिम बंगाल के लंबित फंड के मुद्दे पर चर्चा करने वाली हैं। इससे पहले, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव सहित गठबंधन के शीर्ष नेताओं के फैसले के बाद बैठक 17 दिसंबर तक के लिए स्थगित कर दी गई थी।

पहले से निर्धारित बैठक को छोड़ना। कांग्रेस ने 6 दिसंबर को मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और राजस्थान के चुनाव नतीजे घोषित होने के दिन बैठक बुलाई थी। जैसे ही भाजपा ने तीन राज्यों में आधे का आंकड़ा पार किया, विपक्षी गुट की बैठक की घोषणा की गई।

निलंबित विपक्षी सांसदों का संसद के बाहर प्रदर्शन, पीयूष गोयल ने सदन बाधित करने की पूर्व नियोजित रणनीति बताया

एजेंसी।

नई दिल्ली शीतकालीन सत्र के शेष समय के लिए राज्यसभा से कई विपक्षी सांसदों के निलंबन पर राज्यसभा में सदन के नेता पीयूष गोयल ने कहा कि 34 सांसदों को निलंबित कर दिया गया है। 11 सांसदों का मामला विशेषाधिकार समिति को भेजा गया है। कांग्रेस के जयराम रमेश, के.सी. वेणुगोपाल और रणदीप सिंह सुरजेवाला समेत कुल 34 विपक्षी सांसदय टीएमसी के सुखेंदु शेखर रे और शांतनु सेनय राजद के मनोज कुमार झा को आज शेष सत्र के लिए राज्यसभा से निलंबित कर दिया गया। राज्यसभा से निलंबित कई विपक्षी सांसदों ने संसद के बाहर मकर द्वार पर विरोध प्रदर्शन किया। शीतकालीन सत्र के शेष समय के लिए राज्यसभा से कई विपक्षी सांसदों के निलंबन पर राज्यसभा में सदन के नेता

पीयूष गोयल ने कहा कि 34 सांसदों को निलंबित कर दिया गया है। 11 सांसदों का मामला विशेषाधिकार समिति को भेजा गया है। आज कुल 45 राज्यसभा सांसदों को निलंबित कर दिया गया है। वे नहीं चाहते थे कि सदन सुचारू रूप से चले, ये उनकी पूर्व नियोजित रणनीति थी। राज्यसभा से निलंबित किए जाने पर आरजेडी सांसद मनोज कुमार झा ने कहा कि मैं भी उनमें शुमार हूं। इसे गर्व की तरह ले रहा हूं कि मैं निलंबित हूं। जब काला दौर होता है ना तब तानाशाहों को ऐसी ही संसद चाहिए.... आपसे हम सवाल पूछ रहे हैं, मसला सिर्फ देश की सुरक्षा का है संसद की इमारत का नहीं है। एक आधिकारिक बयान नहीं दे सकते? आप क्या चाहते हैं? विपक्ष मुक्त संसद आपने बना लिया। जो बचे हैं उन्हें कल कर(निलंबित) देना। ये दौर याद रखा जाएगा कि जबसे प्रधानमंत्री मोदी अपने दूसरे कार्यकाल में आए हैं बहुत कमजोर हो गए हैं। कमजोर व्यक्ति ही संसदीय कार्य मंत्री द्वारा इस प्रकार की हरकतों को प्रोत्साहित करता है और करवाता है। शिवसेना (उद्धव गुट) सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि ऐसी तानाशाही नहीं चलेगी। यह देश को स्वीकार्य नहीं है। जनता के विश्वास पर उन्हें यह जनादेश मिला है। उन्हें जनादेश इसलिए मिला क्योंकि उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा को एक महत्वपूर्ण मुद्दा माना था। लेकिन आज सबसे सुरक्षित इमारत पर हमला हो रहा है। इस पर न तो प्रधानमंत्री बोलते हैं और न ही गृह मंत्री, अगर हमने आपका बयान मांगा तो आपने हमें सदन से निलंबित कर दिया– यह किसी को स्वीकार्य नहीं है। हम इसके लिए लड़ना जारी रखेंगे...अगर हमें निलंबित किया जा रहा है क्योंकि हम (बयान) मांग रहे हैं, तो यह हमारे लिए सम्मान का प्रतीक है।

संसद की सुरक्षा में चूक को लेकर विपक्ष का हंगामा जारी, राज्यसभा चार बजे तक के लिए स्थगित

एजेंसी। नई दिल्ली हालांकि, सभापति ने उनकी मांग खारिज करते हुए शून्य काल आरंभ कराया और इसके लिए पहले भाजपा की कांता कर्दम और फिर कांग्रेस के प्रमोद तिवारी का नाम पुकारा। कर्दम उस वक्त अपने स्थान पर नहीं थीं। तिवारी ने कहा कि वह महत्वपूर्ण मुद्दा उठाना चाहते हैं लेकिन पहले विपक्ष के नेता खरगे को बोलने का मौका दिया जाए। सभापति ने जब खरगे को बोलने का मौका नहीं दिया तो विपक्षी सदस्य हंगामा और नारेबाजी करने लगे। इसी दौरान, धनखड़ ने कुछ विपक्षी सदस्यों के आचरण पर आपत्ति जताई। कुछ विपक्षी सदस्यों के हाथों में 'प्ले कार्ड' भी देखा गया। इसके तत्काल बाद सभापति ने सदन की कार्यवाही 11.30 बजे तक के लिए स्थगित कर दी। संसद की सुरक्षा में चूक मुद्दे पर तत्काल चर्चा कराने और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बयान की मांग को लेकर सोमवार को भी राज्यसभा की कार्यवाही बाधित हुई। इन मुद्दों पर विपक्षी दलों के हंगामे के कारण उच्च सदन की कार्यवाही दो बार के स्थगन के बाद अपराह्न चार बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। हंगामे की वजह से उच्च सदन में शून्य काल और प्रश्न काल नहीं हो सके। हालांकि, भोजनावकाश के बाद हंगामे के बीच ही सदन ने जम्मू–कश्मीर और पुडुचेरी की विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करने के प्रावधान वाले दो अहम विधेयकों को मंजूरी प्रदान कर दी। राज्यसभा ने जम्मू–कश्मीर पुनर्गठन (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2023 और संघ राज्य क्षेत्र शासन (सशोधन) विधेयक, 2023 को संक्षिप्त चर्चा के बाद ध्वनिमत से मंजूरी दी। लोकसभा ने पिछले दिनों इन विधेयकों को मंजूरी दी थी। दो बार के स्थगन के बाद उच्च सदन की कार्यवाही जब दोपहर दो बजे आरंभ हुई तो गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने दोनों विधेयकों को चर्चा एवं पारित करने के लिए सदन में पेश किया।

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, मंगलवार 19 दिसंबर 2023
sheelshukla100@gmail.com

लेडीज विदआउट महरम श्रेणी में इच्छुक महिलाओं को आवेदन करने हेतु प्रोत्साहित किया जाए –धर्मपाल सिंह

हज-2024 के इच्छुक हज आवेदकों के पासपोर्ट के प्रकरण शीघ्र निस्तारित कराए जाएं

संवाददाता।

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ एवं हज विभाग के कैबिनेट मंत्री धर्मपाल सिंहद्वारा आज यहां मौलाना अली मियां मेमोरियल हज हाउस, सरोजनीनगर, लखनऊ में राज्य हज समिति की वेबसाइट का शुभारम्भ किया गया। इस वेबसाइट में अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, काउन्सल जनरल आफ इण्डिया जदाह, अल्पसंख्यक कल्याण विभाग, उ०प्र० व हज कमेटी आफ इण्डिया मुम्बई की वेबसाइट की महत्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध रहेंगी, जिससे हज यात्रियों को सहायता व मार्गदर्शन प्राप्त होगा। यह वेबसाइट अंग्रेजी व हिन्दी में कार्य करेगी।वेबसाइट पर हज कमेटी आफ इण्डिया का लॉगइन पेज उपलब्ध है जहां से हज यात्रा के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इससे आपको यात्रा के लिए रजिस्टर करने में सुविधा मिलती है। कहा कि इस वेबसाइट से हज यात्रा से जुड़े महत्वपूर्ण परिपत्र, प्रमुख अपडेट्स, एक्शन प्लान उड़ान शिड्यूल आदि सूचनाएं भी उपलब्ध हैं।वेबसाइट में दिव्यांगजन फीचर्स एवं दिव्यांग हितैषी मानकों का उपयोग किया गया है। जिससे कोई भी दिव्यांग वेबसाइट का प्रयोग कर सकता है। उ0प्र0 राज्य हज समिति की वेबसाइट भारत सरकार और प्रदेश सरकार द्वारा निर्धारित डोमेन पर संचालित की गई। इससे पूर्व अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री धर्मपाल सिंह की अध्यक्षता में उ०प्र० राज्य हज समिति की बैठक आहूत की गयी जिसमें उ०प्र० के हज यात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान किये जाने हेतु विचार–विमर्श किया गया व सुझाव लिये गये। मंत्री द्वारा हज–2024 हेतु किये गये प्रयासों से अवगत कराया, जिसमें प्रत्येक जिले में जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारियों की देख–रेख में कुल 199 हज ई–सुविधा केन्द्र स्थापित किये गये हैं, जहां से इच्छुक हज यात्री ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी बरेली, गाजियाबाद व लखनऊ को हज–2024 के इच्छुक हज आवेदकों के पासपोर्ट के प्रकरण शीघ्र निस्तारित करने के निर्देश दिये गये हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के हज यात्रियों के आला हजरत हज हाउस गाजियाबाद से समस्त प्रपत्रों को तैयार करवाने व वहीं से सीधे दिल्ली एयरपोर्ट के लिए प्रस्थान करने का प्रबन्ध करने हेतु व पूर्वी उत्तर प्रदेश के यात्रियों की सुविधार्थ वाराणसी को उड़ान स्थल बनाये जाने हेतु हज कमेटी आफ इण्डिया से अनुरोध किया है। महरम श्रेणी की महिलाएं जिनकी आयु 45 वर्ष से अधिक हैं चार महिलाओं के ग्रुप में हज पर जा सकेंगी। अकेली विदआउट महरम श्रेणी में आवेदन करे सकेंगी, हज कमेटी उनको एक साथ चार के ग्रुप में करने में सहयोग महिलाओं को एक साथ उड़ान में जिसमें महिला खादिमुल हुज्जाज भी होंगी, भेजने व सऊदी अरब में उनको ए सुविधा दी जायेगी। उनके लिए विशेष बसों की व्यवस्था रहेगी, उनकी सुरक्षा व स्वास्थ्य हेतु महिला चिकित्सक, नर्स, असिस्टेंट हज आफिसर, हज असिस्टेंट, खादिमुल हुज्जाज तैनात रहेंगे। मंत्री जी द्वारा लेडीज विदआउट महरम श्रेणी में इच्छुक महिलाओं को आवेदन करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। बैठक में अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री दानिश आजाद अंसारी जी ने राज्य हज समिति की वेबसाइट तैयार किए जाने पर बधाई दी और कहा कि उ0प्र0 राज्य हज समिति की वेबसाइट भारत सरकार द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरुप नयी तकनीक के साथ तैयार की गयी है। वेबसाइट पर हज यात्री के सुझाव, प्रश्न, और समस्याओं के लिए ऑनलाइन फीडबैक का विकल्प दिया गया है। जो हज यात्रियों के लिए उपयोगी साबित होगा। इस अवसर पर उ०प्र० राज्य हज समिति के सदस्यगण उपस्थित रहे। बैठक में अपर मुख्य सचिव, अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ एवं हज श्रीमती मोनिका एस गर्ग ने कहा कि हज यात्रा के संबंध में मंत्री जी से प्राप्त दिशा निर्देशों का पालन सुनिश्चित किया जाएगा और सभी व्यवस्थाएं ससमय पूर्ण की जाएंगी।

अल्पसंख्यक अधिकार दिवस पर बोले अनीस मंसूरी अल्पसंख्यकों को एहसान नहीं सामान अधिकार दो कई मुद्दे अभी भी जीवित

संजीव कुमार शुक्ला

लखनऊ, पसमांदा मुस्लिम समाज कार्यालय स्थिति लालबाग लखनऊ में अल्पसंख्यक अधिकार दिवस का आयोजन किया गया, जिस में मुख्य अतिथि के रूप में संगठन के संस्थापक, राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मंत्री अनीस मंसूरी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि अल्पसंख्यक अधिकार दिवस भाषाई, धर्म, जाति और रंग के आधार पर अल्पसंख्यक समुदाय से संबंधित लोगों के अधिकारों को बढ़ावा और संरक्षित करने के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। भारत में बहुमत–अल्पसंख्यक मुद्दों पर अक्सर असहमति और चर्चा धार्मिक और राजनीतिक असंतोश पैदा करने के लिए उभरती है। भले हीभारतीय संविधान हमेशा अल्पसंख्यकों समेत सभी समुदायों को समान और न्यायपूर्ण अधिकार प्रदान करता था और प्रदान करता रहेगा लेकिन अल्पसंख्यकों के अधिकारों से संबंधित कुछ मुद्दे अभी भी जीवित हैं।अनीस मंसूरी ने कहा कि भारत में अल्पसंख्यक अधिकार दिवस मना कर प्रत्येक राज्यअल्पसंख्यकों से संबंधित मुद्दों पर पूरी तरह से केंद्रित है और अच्छी तरह से यह सुनिश्चित करता है कि अल्पसंख्यकों के अधिकार उनके प्रांत के भीतर सुरक्षित हैं।

अनीस मंसूरी ने कहा कि अल्पसंख्यक षब्द अल्प और संख्यक जैसे दो श ब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है दूसरों के अपेक्षा संख्या में कम होना। अल्पसंख्यक होने के कई पहलू हो सकते परन्तु मुख्यत इसमें धार्मिक, भाशायी, जातीय पहलुओं को प्रमुखता से देखा जाता है। इसमें सबसे प्रमुख होता है धार्मिक रुप से अल्पसंख्यक होना, कई सारे देशों में धार्मिक अल्पसंख्यकों को विशेष सुविधाएं प्रदान की जाती है ताकि इनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव ना हो और बहुसंख्यक समाज के साथ यह भी समान रुप से विकास कर सकें हालांकि कई सारे देशों में इसके विपरीत धार्मिक अल्पसंख्यकों को विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित भी किया जाता है और उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है।अनीस मंसूरी ने कहा कि हमारे देश में हिन्दू धर्म को बहुसंख्यक माना जाता है और इसके अलावा मुस्लिम, सिख, पारसी, जैन, ईसाई, बौद्ध धर्म के लोगों को अल्पसंख्यक माना जाता है। सरकार देश भर में अल्पसंख्यकों के लिए कई तरह की विशेष योजनाएं चलायी जाती है और इसके साथ ही अल्पसंख्यकों के विकास के लिए सन् 1992 में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग का भी गठन किया गया था। अल्पसंख्यक समुदाय विशेषकर मुसलमान समुदाय के लोग अपनी इच्छा से भारतीय हैं न की किसी मजबूरी की वजह से और उन्हें अपनी वफादारी या देषभक्ति का कोई सबूत पेष करने की आवश्यकता नहीं है।मुस्लिम या किसी अन्य समुदाय से होना और भारत में रहना पर्याप्त सबूत है जो यह साबित करते हैं कि वे देशभक्त हैं।

एकता के विचार बचपन में ही बच्चों को देने चाहिये - डा. जगदीश गाँधी, संस्थापक, सी.एम.एस.

लखनऊ, 17 दिसम्बर। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, इन्दिरा नगर द्वितीय कैम्पस द्वारा आयोजित 'एनुअल पैरेन्ट्स डे' समारोह उमंग व उल्लास से सराबोर वातावरण में आज सी.एम.एस. गोमती नगर द्वितीय कैम्पस ऑडिटोरियम में सम्पन्न हुआ। सी.एम.एस. संस्थापक

व प्रख्यात शिक्षाविद् डा. जगदीश गाँधी ने दीप प्रज्जवलित कर समारोह का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में डा. गाँधी ने कहा कि एकता के विचार बचपन में ही बच्चों को देने चाहिए। उन्होंने माताओं एवं शिक्षकों का आह्वान किया कि वे बच्चों को नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का वातावरण घर व विद्यालय में उपलब्ध कराकर आदर्श विश्व समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करें।

इससे पहले 'एनुअल पैरेन्ट्स डे समारोह में सी.एम.एस. इन्दिरा नगर द्वितीय कैम्पस के छात्रों ने शिक्षात्मक–साँस्कृतिक कार्यक्रमों की ऐसी अद्भुद छटा बिखेरी कि अभिभावक अपने बच्चों की कलात्मक प्रतिभा देख गद्गद हो गये एवं जोरदार तालियां बजाकर छात्रों का उत्साहवर्धन किया। समारोह का शुभारम्भ बच्चों द्वारा प्रस्तुत सर्व–धर्म प्रार्थना से हुआ इसके अलावा, स्कूल प्रार्थना, वंदे मातरम, सर्वधर्म प्रार्थना, विश्व एकता प्रार्थना एवं वर्ल्ड पार्लियामेन्ट का शानदार प्रदर्शन कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर सी.एम.एस. इन्दिरा नगर द्वितीय कैम्पस की प्रधानाचार्या श्रीमती कनिका कपूर ने बच्चों की प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए कहा कि सी.एम.एस. में शिक्षा के माध्यम से ऐसे प्रयास किये जा रहे है जिसके द्वारा प्रत्येक बालक इस बात को आत्मसात कर सकें कि मानव जाति की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। उन्होंने स्कूल की गतिविधियों में सहयोग हेतु अभिभावकों का आभार व्यक्त किया।

शिक्षात्मक-साँस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा हरी-भरी खुशहाल धरती का अलख जगाया सी.एम.एस. छात्रों ने

लखनऊ, 18 दिसम्बर। सिटी मोन्टेसरी स्कूल के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय सी.आई.एस.वी. मिनी कैम्प का 'ओपेन डे समारोह' सी.एम.एस. कानपुर रोड ऑडिटोरियम में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सी.एम.एस. के मेधावी छात्रों ने शिक्षात्मक–साँस्कृतिक प्रस्तुतियों से वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को साकार रूप देने के साथ ही एकता, शान्ति व सौहार्द से परिपूर्ण हरी–भरी खुशहाल धरती का अलख जगाया। सी.आई.एस.वी. ओपेन डे समारोह का शुभारम्भ सर्वधर्म व विश्व शान्ति प्रार्थना से हुआ। इस अवसर पर छात्रों ने विभिन्न शिक्षात्मक–साँस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा विश्व एकता एवं विश्व शान्ति का अलख जगाया।

इससे पहले, सी.एम.एस. संस्थापक व प्रख्यात शिक्षाविद् डा. जगदीश गाँधी ने 'ओपेन डे समारोह' का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में डा. गाँधी ने कहा कि सी.एम.एस. केवल किताबी ज्ञान न देकर बच्चों को जीवन मूल्यों की शिक्षा से भी ओतप्रोत कर बच्चों का सम्पूर्ण विकास करने को प्रतिबद्ध है और आज का यह कार्यक्रम इन्हीं विचारों का साकार रूप है। बाल शिविर की डायरेक्टर सुश्री मोनिका एरोन ने सभी प्रतिभागी छात्रों व टीम लीडरों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह बाल शिविर अपने आप में एक लघु विश्व की झलक है। यह एक साथ रहकर छात्रों ने मित्रता व सद्भाव की जो शिक्षा प्राप्त की है, वह पूरी जिन्दगी उनके साथ रहेगी। विदित हो कि यह तीन दिवसीय मिनी कैम्प 'इन्वार्यनमेन्टल सस्टेनबिलिटी'थीम पर आयोजित किया गया, जिसमें सी.एम.एस. के 18 कैम्पसों के 10 से 11 वर्ष उम के छात्रों ने अपने टीम लीडर के नेतृत्व में प्रतिभाग किया एवं तीन दिनों तक एक साथ एक छत के नीचे साथ–साथ रहकर प्रेम, शान्ति, एकता, सहयोग और भाईचारे का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कैम्प में पर्यावरण जागरूकता से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन सम्पन्न हुआ।

विहिप की सूचना पर कराया घायल गौवंश का इलाज

संवाददाता।

रामसनेहीघाट, बाराबंकी । विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष की सूचना पर मौके पर पहुंची श्री गोपाल जी गौ सेवा नारायण सेवा टीम ने घायल निराश्रित गौवंश का इलाज कराया, जिसके बाद टीम की लोगो द्वारा प्रसंसा की जा रही है। विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह मुन्ना को लखनऊ अयोध्या हाईवे से थोड़ी दूर स्थित मठ गॉव के पास सड़क के किनारे एक निराश्रित गोवंश गंभीर हालत में घायल अवस्था में पड़ा दिखा, इसके बाद तत्काल जिला अध्यक्ष श्री सिंह मौके पर घायल गौवंश के पास पहुंचे, काफी घायल होने के बाद श्री सिंह ने तत्काल इसकी सूचना निराश्रित गौवंश के लिए वरदान बनी श्री गोपाल जी गौ सेवा नारायण सेवा टीम के जिला अध्यक्ष अजय तिवारी को दी, सूचना मिलने के बाद तत्काल श्री तिवारी अपनी टीम के साथ डॉक्टर को लेकर के मौके पर पहुंचे तथा स्थानीय लोगों की मदद से उस गौवंश का उपचार कराना शुरू किया, उसके उपचार में विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह मुन्ना ने अपना पूर्ण सहयोग किया इस दौरान टीम के पदाधिकारी शिवशंकर तिवारी आदि मौजूद रहे। आपको बता दें कि निराश्रित गौवंशो की सेवा के लिए श्री गोपाल जी गौ सेवा नारायण सेवा ट्रस्ट टीम लगातार बरदान साबित हो रही है किसी भी तरह की सूचना मिलने पर उसकी सेवा टीम कर रही है। टीम के अध्यक्ष अजय तिवारी ने बताया कि अब तक हजारों निराश्रित गौवंशो की सेवा टीम द्वारा की जा चुकी है, सूचना मिलने के बाद बिना किसी देरी के टीम मौके पर पहुचती है तथा गौवंशो का उपचार डॉक्टरों के माध्यम से कराती है, इस दौरान कई बार हमारी टीम व हम निराश्रित गौवंशो के हमले का शिकार भी हो चुके है इसके बाद भी घायल अवस्था मे होने के बाद भी हमारी टीम गौवंशो की सेवा करती रहती है।

बाल कल्याण संरक्षण समिति की बैठक संपन्न

संवाददाता।

बाराबंकी । सोमवर को ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों के साथ समन्वय एवं बाल कल्याण संरक्षण समिति की बैठक का आयोजन बंकी ब्लॉक में महिला कल्याण विभाग एवं विकासखंड अधिकारी के निर्देशन में यूनिसेफ और एक्शन–एड के सहयोग से संचालित नई पहल परियोजना के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से श्रम विभाग से लेबर कमिश्नर मयंक सिंह, बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष बाला, जिला कार्यालय महिला प्रोबेशन से बाल संरक्षण अधिकारी हरिश्चंद्र, सहायक विकास अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम सचिव, बाल विकास परियोजना अधिकारी, सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी, पुलिस बाल कल्याण अधिकारी, ग्राम प्रधान, सामाजिक कार्यकर्ता आदि उपस्थित रहे। जिला कोऑर्डिनेटर मीना पाल ने बाल सरंक्षण समिति एवं विद्यालय प्रबंधन समिति की भूमिका के विषय में बात करते हुए, बाल सरंक्षण, बाल श्रम, बाल विवाह, स्कूल से ड्रॉपआउट बच्चे, बाल श्रमिक विद्या योजना, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना, बाल सेवा सामान्य योजना एवं कन्या सुमंगला योजना, श्रम विभाग द्वारा संचालित योजनाओं को विस्तार पूर्वक बताते हुए टोल फ्री नंबर जैसे–1090, 181, 1098, 176, 112 पर भी चर्चा की। इसके साथ ही एक्शन एड नई पहल परियोजना का उद्देश्य एवं बंकी ब्लॉक के अंतर्गत 25 ग्राम पंचायतों में और 25 नगर क्षेत्र में किशोरी समूह का गठन कर उन्हें सशक्त बनाना तथा ग्रामीण बाल संरक्षण समिति एवं विद्यालय प्रबंधन समिति को सक्रिय बनाने तथा आउट ऑफ स्कूल बच्चों को विद्यालय से जोड़कर उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए सभी से सहयोग की अपेक्षा की गई। बैठक में बाल सभा पर भी चर्चा की गई। जिससे गांव में बाल विवाह, बाल श्रम, बाल तस्करी मुक्ति मिल सके। सभी विभागों ने नई पहल बाल संरक्षण परियोजना की प्रशंसा की। इस मौके पर वालंटियर कोमल, श्वेता, सलोनी, डिंपल सहित किशोरी समूह की बच्चियां उपस्थिति रही।

भाजपा सरकार उपलब्धियां बताई

संवाददाता। सिद्धौर, बाराबंकी । विकसित भारत संकल्प यात्रा के भवनियापुर व बेलिया गजपतीपुर पटखन पुरवा पहुंचने पर जोरदार स्वागत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद प्रतिनिधि अयोध्या परमेन्द्र विक्रम सिंह ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। यात्रा में सम्मिलित होकर मुख्य अतिथि ने प्रधानमंत्री आवास, राशन कार्ड, उज्जवला कनेक्शन, शौचालय, किसान सम्मान निधि सहित विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र वितरित कर उपस्थित जनों को पंचप्रण की शपथ दिलाई। इस अवसर पर मण्डल अध्यक्ष राकेश लोधी, सुरेंद्र मिश्र प्रदीप सिंह कमल किशोर यादव प्रीति सिंह सुरेश सिंह, अभिषेक प्रताप सिंह, गौरीशंकर मिश्र, दीपांशु सिंह, महेश यादव और भगवान ओझा सहित पार्टी के पदाधिकारी व ग्रामवासी उपस्थित रहे।

विरासत और विकास की पटरी पर आज भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा– प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री ने वाराणसी में स्वर्वेद महामन्दिर का उद्घाटन किया

25 हजार कुण्डीय स्वर्वेद ज्ञान महायज्ञ की हर एक आहुति से विकसित भारत का संकल्प और सशक्त होगा

संवाददाता।

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि विरासत और विकास की पटरी पर आज भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। संतों के सान्निध्य में काशी के लोगों ने मिलकर विकास और नवनिर्माण के कितने ही नए कीर्तिमान गढ़े हैं। सरकार, समाज और संतगण सब साथ मिलकर काशी के कायाकल्प के लिए कार्य कर रहे हैं। हर बार की तरह इस बार का भी काशी प्रवास सुखद रहा। काशी में स्वर्वेद मन्दिर के लोकार्पण में शामिल होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। इस पावन अवसर पर यहां 25 हजार कुण्डीय स्वर्वेद ज्ञान महायज्ञ का आयोजन हो रहा है। मुझे खुशी और विश्वास है कि इस महायज्ञ की हर एक आहुति से विकसित भारत का संकल्प और सशक्त होगा। प्रधानमंत्री जी आज जनपद वाराणसी में स्वर्वेद महामन्दिर के उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। इससे पूर्व, प्रधानमंत्री ने 180 फीट ऊंचे सात मंजिला स्वर्वेद महामन्दिर के प्रथम तल का रिमोट से बटन दबाकर उद्घाटन किया और महामन्दिर को श्रद्धालुओं व देशवासियों को समर्पित किया। प्रधानमंत्री ने स्वर्वेद महामन्दिर का अवलोकन भी किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज स्वर्वेद महामन्दिर बनकर तैयार होना, ईश्वरीय प्रेरणा का उदाहरण है। स्वर्वेद महामन्दिर भारत के सामाजिक और आध्यात्मिक सामर्थ्य का एक आधुनिक प्रतीक है। यह महामन्दिर दुनिया का सबसे अनोखा मन्दिर है। महामन्दिर की संगमरमरी दीवारों पर स्वर्वेद के चार हजार दोहे लिखे हैं। महामन्दिर महर्षि सदाफल देव की शिक्षाओं और उनके उपदेशों का प्रतीक है। इस मन्दिर की दिव्यता जितना आकर्षित करती है, इसकी भव्यता हमें उतना ही अचम्भित भी करती है। इसकी दीवारों पर स्वर्वेद को बड़ी सुन्दरता के साथ अंकित किया गया है। वेद, उपनिषद, रामायण, गीता और महाभारत आदि ग्रन्थों के दिव्य संदेश भी इसमें चित्रों के जरिये उकेरे गए हैं। इसलिए यह मन्दिर एक तरह से अध्यात्म, इतिहास और संस्कृति का जीवंत उदाहरण है। 19 साल तक लगातार छह सौ कारीगर, दो सौ मजदूर और 15 इंजीनियर की मेहनत आज महामन्दिर के पूर्ण स्वरूप में साकार हो चुकी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत ने कभी भौतिक उन्नति को भौगोलिक विस्तार और शोषण का माध्यम नहीं बनने दिया। भौतिक प्रगति के लिए भी हमने आध्यात्मिक और मानवीय प्रतीकों की रचना की। हमने काशी जैसे जीवंत सांस्कृतिक केंद्रों का आशीर्वाद लिया। काशी का मतलब स्वच्छता और बदलाव है। पानी की बूंद–बूंद बचाना जरूरी है। वाराणसी में सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है। योग और खेल को जीवन का हिस्सा बनाएं। फिटनेस को जीवन का हिस्सा बनाएं। हम काशी के विकास के लिए काम कर रहे हैं। आज हमारे तीर्थों का विकास हो रहा है। कुछ हफ्तों में श्रीराम मन्दिर का निर्माण पूरा हो जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारी संस्कृति को निशाना बनाया गया। देश अपनी विरासत पर गर्व करना भूल गया था। अब समय का चक्र बदल गया है। देश अब गुलामी की सोच से मुक्त हो रहा है। गुलामी के कालखण्ड में अत्याचार हुआ। देश आधुनिकता में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने अपील की है कि मेड इन इण्डिया प्रोडक्ट का इस्तेमाल करें। लोकल फॉर वोकल को बढ़ावा दें। लोग डिजिटल लेन–देन को बढ़ावा दें। पहले देश घूमें, फिर विदेश जाने की सोचें। एक गरीब परिवार की मदद जरूर करें। भारत एक ऐसा राष्ट्र है, जो सदियों तक विश्व के लिए आर्थिक समृद्धि और भौतिक विकास का उदाहरण रहा है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री का स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने स्वर्वेद महामन्दिर का उल्लेख करते हुए कहा कि जब एक संत की साधना मूर्तरूप लेती है, तो इस प्रकार का एक धाम बनकर तैयार होता है। सद्गुरु सदाफल देव महाराज ने देश की आजादी के लिए संघर्ष किया था। उन्होंने उत्तराखण्ड के कण्वाश्रम के ऊपर शून्य शिखर पर साधनारत होकर आध्यात्मिक जगत की अनुभूतियों के माध्यम से भारत के आध्यात्मिक ज्ञान, वेद, उपनिषदों की परम्परा को बहुत ही सरल व सहज भाषा में अपने अनुयायियों व भक्तों के लिए स्वर्वेद के माध्यम से प्रस्तुत किया। आज उसका मूर्तरूप सबको देखने को मिल रहा है। वर्ष 1954 के कुम्भ में सद्गुरु सदाफल देव जी महाराज ने अपनी भौतिक लीला का विसर्जन करते हुए आध्यात्मिक जगत में शून्य से शिखर पर स्वयं प्रवेश किया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम आज नए भारत की अनुभूति कर रहे हैं। यह नया भारत प्रधानमंत्री के नेतृत्व में दुनिया का मार्गदर्शन कर रहा है। आज देश का हर नागरिक अपनी विरासत पर गौरव की अनुभूति कर रहा है। कुम्भ की उसी महान परम्परा को चाहे वह दुनिया की मूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता देना हो या फिर उत्तराखण्ड में केदारपुरी के पुनर्निर्माण का कार्य हो या महाकाल में महालोक के निर्माण का कार्य हो, 500 वर्षों के इंतजार के बाद अयोध्या में श्रीराम मन्दिर के भव्य निर्माण का कार्य हो, हर भारतवासी का मन अपनी विरासत पर गौरव की अनुभूति करता दिखाई देता है। वाराणसी में काशी विश्वनाथ धाम में विगत एक वर्ष में 13 करोड़ से अधिक देश–विदेश के श्रद्धालु एवं अनुयायी आये हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में प्रधानमंत्री के रूप में एक यशस्वी नेतृत्व अपनी पूरी ऊर्जा व संकल्पों के साथ बिना भेदभाव निरन्तर देश के कार्यों के लिए समर्पित है। इन्हीं संकल्पों के लिए वर्ष 1920 में सद्गुरु सदाफल देव महाराज ने जेल की यातना सहन की थी। आज हम सभी उसी स्वतंत्र भारत के नागरिक के रूप में आजादी के अमृत काल के द्वितीय वर्ष में पूरी ऊर्जा के साथ प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अपनी विरासत पर गौरव की अनुभूति करते हुए उसकी पुनर्स्थापना के कार्यों से जुड़े हुए हैं।

इस अवसर पर स्वर्वेद महामन्दिर के आचार्य सद्गुरु स्वतंत्रदेव , विज्ञान देव ,

केन्द्रीय भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम मंत्री डॉ0 महेंद्र नाथ पाण्डेय, प्रदेश के श्रम एवं सेवायोजन मंत्री अनिल राजभर, शासन–प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

4.38 करोड़ रुपये की धनराशि से बाराबंकी स्थित भगहर झील का होगा विकास

ईको पर्यटन स्थल के रूप में विकास के लिए एक करोड़ रुपये की धनराशि जारी

संवाददाता।

लखनऊ । जनपद बाराबंकी के प्रसिद्ध देवा मंदिर के निकट स्थित भगहर झील को ईको पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए 4.38 करोड़ रुपये स्वीकृत किये गये हैं। प्रारम्भिक चरण में झील के विकास के लिए 01 करोड़ रुपये की धनराशि जारी करा दी गयी है। झील का विकास हो जाने से यहाँ पर पर्यटकों का आना–जाना शुरू होगा और व्यावसायिक गतिविधियां बढ़ेंगी, जिससे स्थानीय लोगों को आमदनी बढ़गी। यह जानकारी आज यहाँ प्रदेश के पर्यटन संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि महादेवा मंदिर में न केवल बाराबंकी बल्कि लखनऊ समेत अन्य जिलों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। यहां से कुछ दूरी पर ही 84 हेक्टेयर में फैली भगहर झील है। पर्यटन विभाग अब इस झील को ईको पर्यटन के रूप में विकसित करने के लिए तैयारी शुरू कर दी है। यहां पहले से ही हरियाली है, इसके आसपास पाथवे बनाया जाएगा। इतना ही नहीं झील के भीतर और किनारे पर वॉक–वे बनाया जाएगा। वॉक–वे बनने के बाद यह बेहद आकर्षक हो जाएगा। बच्चों के लिए खेल स्थल बनेगा। इस स्थान पर झूले भी लगाए जाएंगे। पर्यटक आएंगे तो उनके लिए खाने–पीने की भी जरूरत होगी, तो इसको देखते हुए पर्यटन विभाग कैंटीन भी बनाएगा। यहां प्रवासी पक्षी भी खूब आते हैं, इसलिए मिट्टी का टिला भी बनाया जाएगा। जयवीर सिंह ने बताया कि भगहर झील, महादेवा मंदिर के किनारे है। यहां बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। इसलिए पहले से ही काफी पर्यटक सुविधाएं हैं। झील के किनारे सीढ़ियां बनी हैं, इंटरप्रेटेशन सेंटर, गजिबो, वाच टावर समेत अन्य सुविधाएं हैं। ईको पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होने के बाद पर्यटकों की संख्या में काफी बढ़ोतरी होगी। ईको पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होने के बाद भगहर झील के भ्रमण करने वालों की संख्या में वृद्धि होगी।

सीओ और थानाध्यक्ष पर पुलिसिया दबंगई दिखाने का इल्जाम, अधिवक्ताओं ने दिया एसपी को ज्ञापन

संवाददाता।

सुल्तानपुर । चर्चित सीओ कादीपुर और करौंदीकला थानाध्यक्ष पर गंभीर आरोप लगा है। आरोप है कि अधिवक्ता की दीवार गिराने की धमकी देते हुए उन्हें थाने में जबरन घंटो बैठाया गया। जिसकी शिकायत आज बार एसोसिएशन ने एसपी सोमेन बर्मा से की है। एसपी ने जांच कराकर कार्रवाई की बात कही है। मामला कादीपुर सर्किल क्षेत्र के करौंदीकला थाना अंतर्गत अमरेमऊ गांव से जुड़ा है। गांव निवासी अधिवक्ता फूलचंद तिवारी पुत्र ईश्वरदेव तिवारी ने बताया कि उन्होंने अपनी पुश्तैनी आबादी की जमीन पर बाउंड्रीवाल का निर्माण करा रखा था। उनका आरोप है कि क्षेत्राधिकारी शिवम मिश्रा और थानाध्यक्ष अकरम खान ने उन्हें बाउंड्रीवाल गिराने की धमकी दिया। इसके बाद बीते 13 दिसंबर को जबरन हमें थाने पर बैठा लिया। इसी दिन सीओ की शह पर दबंग राजपति उपाध्याय, सुरेंद्र उपाध्याय उर्फ देवी, विवेक उपाध्याय, गौरव उर्फ गोलू आदि ने रात में दो घंटे के अंदर हमारी बाउंड्रीवाल ढहा दिया। परिवार द्वारा मना करने पर दर्जनों की संख्या में पहुंचे दबंगों ने गाली–गलौज किया। आरोप ये भी है कि गोलू उर्फ गौरव ने फूलचंद के भाई के ऊपर फायर झोका। गोली की आवाज सुनकर गांव वाले दौड़े तो आरोपी जान से मारने की धमकी देकर भाग निकले। मेरे घर वालों को मारपीट में काफी चोटें आई हैं। उन्होंने बताया कि दबंग हत्या तक की वारदात को अंजाम दे सकते हैं। हमने थाने पर तहरीर दिया लेकिन दबंगों से हाथ मिलाई पुलिस ने मुकदमा तक दर्ज नहीं किया। उधर आज बार एसोसिएशन सचिव आर्तमणि मिश्र के नेतृत्व में एसपी को घटना को लेकर ज्ञापन दिए गया। एसपी ने ज्ञापन को संज्ञान में लेते हुए पुलिस अफसरों की कार्यशैली की जांच करने का अधिवक्ताओं को आश्वासन दिया है।

प्रधानमंत्री ने बरेका निर्मित १०,०००वें लोकोमोटिव राष्ट्र को समर्पित किया।

जय प्रकाश मिश्रा । वाराणसी आज विकसित भारत, संकल्प यात्रा के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री ने बनारस रेल इंजन कारखाना द्वारा निर्मित 10,000वां लोकोमोटिव WAP7 का वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये हरी झण्डी दिखाकर राष्ट्र को समर्पित किया। प्रधानमंत्री ने बरकी गांव, वाराणसी में आयोजित सभा स्थल से रिमोट के माध्यम से इस लोकोमोटिव का लोकार्पण किया। विदित हो कि दिसम्बर 2014 में पहली बार प्रधानमंत्री ने डूअल कैब डीजल लोकोमोटिव WDP4D को हरी झंडी दिखाई थी और लोको उत्पोदन में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से "मेक इन इंडिया" का मंत्र दिया था। तबसे बरेका न सिर्फ आत्मनिर्भरता के रास्ते पर तेजी से दौड़ा, बल्कि और शक्तिशाली इंजन बनाने में सफलता भी मिली। जिसका परिणाम है कि आज बरेका 10,000वां लोकोमोटिव बनाकर एक इतिहास रचा है । इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए संपूर्ण बरेका गौरवान्वित महसूस कर रहा है । महाप्रबंधक बासुदेव पांडा सहित समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी में खुशी का माहौल व्याप्त है, खासकर महिला कर्मचारियों में अत्यधिक उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर काफी संख्या में बरेका अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

बनारस रेल इंजन कारखाना जिसे पहले डीजल रेल इंजन कारखाना के नाम से जाना जाता था, ने ALCO लोको तकनीक पर आधारित पहला लोकोमोटिव तैयार करके अपनी यात्रा शुरू कर न केवल रेल इंजनों के उत्पानदन में कीर्तिमान स्थापित किया है, बल्कि रेल इंजनों की अश्वं शक्ति में वृद्धि के साथ ही नयी–नयी तकनीक का भी विकास किया है । वर्ष 2017 से बरेका ने विद्युत लोको का निर्माण शुरू किया। वर्तमान में बरेका रेलवे के लिए यात्री सेवा हेतु WAP7 और मालवाहक हेतु WAG9 इंजनों के निर्माण के साथ ही गैर रेलवे ग्राहकों एवं निर्यात के लिए रेल इंजन का उत्पादन कर रहा है । अब तक बरेका 1687 विद्युत लोकोमोटिव, 7498 डीजल लोकोमोटिव, 172 निर्यातित लोकोमोटिव (11 देशों में), गैर रेलवे ग्राहक हेतु 634 लोकोमोटिव, 01 डुएल (डीजलविद्युत) मोड लोकोमोटिव, 08 डीजल से इलेक्ट्रिक में परिवर्तित लोकोमोटिव का निर्माण किया है।उल्लेखनीय है कि बरेका की नीव प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने 23 अप्रैल 1956 को रखी गयी थी। अगस्त 1961 में बरेका अपने अस्तित्व में आया। 03 जनवरी 1964 में पहला ब्राड गेज ॅक्ड2 का लोकार्पण पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादूर शास्त्री ने एवं नवम्बर 1968 में पहले मीटर गेज रेल इंजन ल्क्ड4 का लोकार्पण पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने किया था । बरेका ने अपनी स्थापना से लेकर अब तक 10,000 रेल इंजन बनाकर अभूतपूर्व इतिहास रचा है। प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्र को समर्पित 10,000वां एसी–एसी 6000 अश्व शक्ति पैसेंजर लोकोमोटिव WAP7–37638 साउथ सेंट्रल रेलवे के लालागुडा इलेक्ट्रिक लोको शेड को भेजा जा रहा है।

आई.पी.एस. एवं सारे.ग.म.पा की उपविजेता का हुआ सम्मान

संवाददाता।

सुलतानपुर। भू–चुम्बकत्व संस्थान मुंबई में रिसर्च स्कालर्स, वैज्ञानिकों को तथा आईआईएम पवई में (भारतीय व्यापार संस्थान) मोटिवेशनल व्याख्यान देने के लिए पधारे सुलतानपुर जनपद पुलिस प्रशिक्षण स्कूल के पुलिस अधीक्षक बृजेश मिश्र तथा सा.रे.गा.मा.पा. की उपविजेता निष्ठा शर्मा को श्रीरामलीला उत्सव समिति अध्यक्ष चंद्रशेखर आर. शुक्ल के द्वारा आयोजित अभिनंदन तथा सत्कार कार्यक्रम सागर पार्क, अमृतनगर घाटकोपर मुंबई में आयोजित किया गया था। जिसमे जनपद सुलतानपुर (पीटीएस पुलिस अधीक्षक) बृजेश मिश्र (आई.पी.एस.) एवं सा.रे.गा.मा.पा. की उपविजेता निष्ठा शर्मा का समिति अध्यक्षध्वरिष्ठ समाज सेवी चंद्रशेखर आर. शुक्ल ने अंग वस्त्र, श्रीफल, पुष्पगुच्छ और संकल्प पत्रिका भेंटकर भव्य स्वागत किया गया। वही आई.पी.एस. बृजेश मिश्र ने कहा कि मुंबई से लेकर गांव तक समाजसेवा में अपना नाम रोशन करने वाले चंद्रशेखर आर. शुक्ल उर्फ बेबी भइया की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है और श्री मिश्र ने अपनी लिखित किताब "सनातन धर्म" श्री शुक्ल को भेंट करते हुए कहा कि इतनी

बड़ी तादात में आप लोगो को देखकर मैं चंद्रशेखर आर शुक्ल सहित आप सभी का आभारी हूँ। साथ ही निष्ठा शर्मा सरगम क्वीन ने अपने सुमधुर गीत से सब का मन मोह लिया। आपको बताते चले कि निष्ठा शर्मा कई चौनलों पर विजेता के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुकी है। विख्यात सरगम क्वीन निष्ठा शर्मा को सुलतानपुर रत्न, दा. वाइस इंडिया किड्स विजेता जी.टी.वी एंड टी.वी., सा.रे.गा.मा.पा. 2023, उप विजेता जी.टी.वी., सुपरस्टार सिंगर फाईनलिस्ट सोनी टी.वी, जी. म्यूजिक कंपनी द्वारा रिलीज तीन ओरिजनल गीत, ब्रांड ऐम्बैसडर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, हीमेश रेशमिया के लिए गाए तीन गीत, अन्नू मलिक के लिए गाया एक गीत, पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और सांसद डिम्पल यादव द्वारा रानी लक्ष्मी बाई वीरता पुरस्कार से सम्मानित, प्रधानमंत्री मोदी के खेलो इंडिया कार्यक्रम की टाइटल प्लेबैक सिंगर, उनके सामने की प्रस्तुति, योनो एसबीआई कार्यक्रम की बेस्ट सिंगर पुरस्कार से सम्मानित, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य द्वारा उत्तरानिया कौथिग में सम्मानित, सुनील बंसल द्वारा उ.प्र. महोत्सव में सम्मानित किया जा चुका है। इस अवसर पर समिति कार्याध्यक्ष प्रभाकर शुक्ल उर्फ रिंकू भैया, पूर्व ब्लाक प्रमुख मंजू शुक्ला, पी.के. शुक्ल, रामबिलास पाठक, उमाकांत दुबे, सुलतानपुर जयसिंहपुर ब्लॉक प्रमुख राहुल शुक्ल, वरिष्ठ पत्रकार नित्यानंद शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार जयप्रकाश सिंह, राजेश सिंह, पत्रकार आदेश मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार सहित अन्य लोग मौजूद रहे और कार्यक्रम के समापन पर समिति अध्यक्ष चंद्रशेखर आर शुक्ल ने आए हुए अतिथियों का तथा उपस्थित सभी गणमान्य लोगों के प्रति हृदय की गहराइयों से धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आभार प्रकट किया।

अब छात्रों को दर दर नही भटकना पड़ेगा

झांसी! शहर में आतिया तालाब स्थित गायत्री मन्दिर के पास केमिस्ट्री पॉइंट कॉचिंग सेंटर की संचालिका नीति शर्मा ने बताया कि छात्रों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में कर रहा है मदत ,नई

शिक्षा नीति को देखते हुए इस कॉचिंग संस्थान में विशेष रूप से छात्रों के लिये एड्यू लैब,केमिस्ट्री लैब प्रोजेक्टर क्लासेस, ऑनलाइन क्लासेस, और रासायनिक विज्ञान की प्रयोगशाला का भी ज्ञान छात्रों को मिल रहा है प्रोफेसर नीति शर्मा जो कि इस संस्थान की संचालिका और रसायन विज्ञान की विख्यात शिक्षका है।

अतुल वेलफेयर ट्रस्ट का स्थापना दिवस दीप प्रज्वलित कर सकुशल संपन्न हुआ।

जय प्रकाश मिश्रा जौनपुर जौनपुर। अतुल वेलफेयर ट्रस्ट परिवार द्वारा स्थापना दिवस पर समारोह कार्यक्रम का आयोजन नगर की एक होटल में दीप प्रज्वलित कर किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में अयोध्या से आई श्रीमती श्वेता राज सिंह एडवोकेट अल्का गुप्ता एवं वरिष्ठ समाजसेवी रही। समान समारोह कार्यक्रम के दौरान महिला सुरक्षा सम्मान, शिक्षक सम्मान, चिकित्सा सम्मान, पत्रकार सम्मान, सामाजिक संस्था सम्मान, ट्रस्ट परिवार सम्मान और लकी ड्रा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के दौरान पूर्व सांसद धनंजय सिंह अंबुजानंद महाराज अतुल वेलफेयर ट्रस्ट की अध्यक्षता उर्वशी सिंह समा किन्नर श्रीमती पदि्मनी सिंह डॉक्टर अंजु सिंह रानी सिगरा मऊ सहित तमाम ट्रस्ट के सहयोगी और समाजसेवी लोग उपस्थित रहे।इस दौरान पूर्व सांसद धनंजय सिंह ने कहा कि अतुल वेलफेयर ट्रस्ट एक ऐसा ट्रस्ट है जी ट्रस्ट की अध्यक्षा श्रीमती उर्वशी सिंह है जिनका पूरा परिवार मिलकर इस ट्रस्ट को चलता। है जौनपुर में जो भी लोग सोसाइटी के लिए अच्छा कार्य करते हैं चाहे वह डॉक्टर हो, समाजसेवी हो, पत्रकार हो, शिक्षक हो या फिर पर्यावरण से जुड़े लोग हो ऐसे सभी लोगों का सम्मान करने का कार्य अतुल वेलफेयर ट्रस्ट परिवार करता है। उनको प्रोत्साहित करते हैं सम्मानित करते हैं एक तरीके से एक अच्छा प्रयास अतुल वेलफेयर ट्रस्ट की तरफ से किया जा रहा है जो समाज में एक अच्छा संदेश जा रहा है।वही ट्रस्ट की अध्यक्षा श्रीमती उर्वशी सिंह ने कहा कि मैं अपने ट्रस्ट परिवार की तरफ से आए सभी लोगों का दिल की गहराइयों से स्वागत एवं सम्मान करती हूं।आप सब इस कार्यक्रम में आए मेरे लिए इससे बड़ा सम्मान और क्या हो सकता है इस मौके पर अतुल वेलफेयर ट्रस्ट परिवार से राधिका सिंह, नागेंद्र सिंह, कंचन सिंह, रजत सिंह, कनक सिंह, पिंकी मौर्या, गुलाबी समिति कि अध्यक्ष बिट्टू किन्नर , आशीष श्रीवास्तव, डॉ अब्बासी, मीरा अग्रहरी से डॉक्टर समाजसेवी सहित तमाम गण लोग उपस्थित रहे।

जीआरपी पुलिस ने यात्रियों के गुम हुए मोबाइलों को किया बरामद, मोबाइल पाकर यात्री हुए खुश

संवाददाता

सुलतानपुर। जीआरपी पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है पुलिस अधीक्षक रेलवे लखनऊ के निर्देश पर जीआरपी सुलतानपुर की टीम यात्रियों के गुमशुदा मोबाइल की बरामदगी हेतु एक अभियान चलाया। अभियान के अंतर्गत जीआरपी सुल्तानपुर की टीम ने यात्रा के दौरान यात्रियों के खोये हुए मोबाइलों के संबंध में प्राप्त प्रार्थना पत्रों के नंबरों को सर्विलांस सेल की मदद से उत्तर प्रदेश के

विभिन्न जनपद एवं अन्य राज्यों से गुम हुए 08 अदद मोबाइल फोनों को बरामद किया। बरामद मोबाइलों की अनुमानित कीमत लगभग 85000–रुपये है, मोबाइल स्वामी को जीआरपी ने थाने पर बुलाकर उनसे आवश्यक प्रपत्र प्राप्त कर उनके खोए मोबाइल सुपुर्द किए गये। मोबाइल मिलने के बाद यात्रियों के चेहरों पर मुस्कान दिखी सभी ने जीआरपी पुलिस के कार्यों की सराहना की।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में विकास कार्यों एवं 50 लाख से अधिक लागत की निर्माणाधीन परियोजनाओं की प्रगति समीक्षा बैठक हुई आयोजित

संवाददाता।

जीएलए विश्वविद्यालय का 12–वां दीक्षांत समारोह हर्षोल्लास के साथ हुआ आयोजित

दीक्षांत समारोह में 3536 उपाधियां एवं 22 गोल्ड और 22 सिल्वर मेडल प्रदान किए

(मथुरा) जीएलए विश्वविद्यालय मथुरा (उ.प्र.) के 12वां दीक्षांत समारोह अत्यन्त गरिमा एवं उल्लास के साथ रविवार को सम्पन्न हुआ। दीक्षांत समारोह में स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की कुल 22 गोल्ड और 22 सिल्वर मेडलिस्ट के साथ 3536 उपाधियां प्रदान की गईं। इसके अलावा 32 छात्रों को मेरिट सर्टिफिकेट प्रदान किए गए। समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष एवं परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव डा. अजीत कुमार मोहंती, कुलाधिपति नारायण दास अग्रवाल के अलावा बतौर विशिष्ट अतिथि कम्प्यूटेशनल सिस्टम्स और साइबर सिस्टम के महानिदेशक एवं प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डा. सुमा वरूधीस एवं कुलपति प्रो. फाल्गुनी गुप्ता, प्रतिकुलपति प्रो. अनूप कुमार गुप्ता, कुलसचिव अशोक कुमार सिंह ने मां सरस्वती एवं प्रेरणास्त्रोत श्री गणेशीलाल अग्रवालजी के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया। इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरूआत शैक्षिक शोभायात्रा के आगमन से हुई, जिसमें मुख्य अतिथि, कुलाधिपति, कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव एवं डीन एकेडमिक, मुख्य परीक्षा नियंत्रक डॉ. अतुल बंसल के साथ विश्वविद्यालय के कोर्ट, एग्जीक्यूटिव काउंसिल एवं एकेडमिक काउंसिल के सदस्य की अगवानी मुख्य सभागार में हुई। तत्पश्चात् कुलाधिपति ने दीक्षांत समारोह के प्रारम्भ की उद्घोषणा की।

समारोह में मुख्य अतिथि डा. अजीत कुमार मोहंती ने दीक्षांत संबोधन की शुरुआत सभी उपाधि ा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन, सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को बधाई देते हुए की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष डा. मोहंती एवं विशिष्ट अतिथि प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डा. सुमा वरूधीस को जीएलए विश्वविद्यालय द्वारा मानद उपाधि ा प्रदान की गई। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कुलसचिव अशोक कुमार सिंह ने सभी का स्वागत किया। प्रतिकुलपति प्रो. अनूप कुमार गुप्ता ने मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया।

विशिष्ट अतिथि ने कहा कि जीएलए विश्वविद्यालय में आना मेरे लिए आनंद का विषय है। मैं यहां खुद को नई ऊर्जा से ओत–प्रोत का अनुभव कर रही हूं। इन युवा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के बीच उनके उत्साह को देखकर मुझे 35 वर्ष पूर्व के अनुभव की स्मृति हो रही कि जब मैं इन्हीं भावनाओं के समुद्र से गुजरी थी। इसलिए मैं आप सभी से आसानी के साथ सबकी भावनाओं को समझ रही हूं। उन पुरानी स्मृतियों को दोबारा याद कराने के लिए मैं जीएलए विश्वविद्यालय का आभार व्यक्त करती हूं।

कुलपति प्रो. फाल्गुनी गुप्ता द्वारा विश्वविद्यालय की प्रगति के साथ–साथ भविष्य की योजनाओं पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि जीएलए विश्वविद्यालय ने पिछले वर्षों कई उपलब्धियां हासिल की हैं। विश्वविद्यालय को मिली यह उपलब्धियां भी छात्रों को बेहतर शिक्षकों द्वारा दी जा रही प्रदत्त शिक्षा का प्रमाण है। विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने रोजगार पाने के लायक छात्रों को तैयार किया। इसके अलावा ट्रेनिंग एण्ड प्लेसमेंट विभाग की टीम ने कंपनियों में जाकर संपर्क साधा। आगे भी विश्वविद्यालय अपने छात्रों को बेहतर अवसर प्रदान करने की तैयारी में जुटा हुआ है। नैक ए श्रेणी को पीछे छोड़कर अब दूसरी बार में नैक से सर्वोच्च 3.46 स्कोर के साथ नैक से ए प्लस ग्रेड हासिल किया है।

कुलाधिपति नारायणदास अग्रवाल ने मुख्य अतिथि डा. अजीत कुमार मोहंती को स्मृति चिन्ह् भेंट कर सम्मानित किया। विशिष्ट अतिथि डा. सुमा वरूधीस को प्रतिकुलाधिपति प्रो. दुर्ग सिंह चौहान ने स्मृति चिन्ह् भेंट किया। कुलपति प्रो. फाल्गुनी गुप्ता ने कुलाधिपति नारायणदास अग्रवाल को स्मृति चिन्ह् भेंट किया। कुलसचिव अशोक कुमार सिंह ने प्रतिकुलाधिपति प्रो. दुर्ग सिंह चौहान को स्मृति चिन्ह् भेंट किया। तत्पश्चात् कुलाधिपति द्वारा दीक्षांत समारोह के सम्पन्न होने की उद्घोषणा की गयी एवं शैक्षिक शोभायात्रा के प्रस्थान से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन डा. विवेक मेहरोत्रा ने किया।

इस अवसर पर चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफीसर नीरज अग्रवाल, चीफ फाइनेंस ऑफीसर विवेक अग्रवाल, जीएल बजाज ग्रुप के एमडी मनोज अग्रवाल, जीएलए के सीओई डा. अतुल बंसल, डीन एकेडमिक प्रो. अशीष शर्मा, सहित विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष सहित आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।

छात्रों की उपाधियों पर एक नजर

जीएलए विश्वविद्यालय, मथुरा (उ.प्र.) से वर्ष 2023 में पीएचडी के 59, बीएससी ऑनर्स एग्रीकल्चर 92, बीएससी ऑनर्स बायोटेक के 31, बीएससी ऑनर्स कैमिस्ट्री के 31, बीएससी ऑनर्स फिजिक्स के 31, बीए ऑनर्स इकॉनोमिक्स के 13, बीबीए के 163, बीबीए ऑनर्स 124, बीबीए फैमिली बिजनेस 27, बीकॉम ऑनर्स ग्लोबल एकाउंटिंग 11, बीकॉम ऑनर्स 80, बीटेक सिविल इंजीनियरिंग 49, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग 45, इलेक्ट्रॉनिक्स 18, मैकेनिकल इंजीनियरिंग 120, बीटेक एमई ऑटोमोबाइल 4, एमई मेकाट्रॉनिक्स 4, इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन इंजी. 94, कम्प्यूटर साइंस के 933, बीटेक सीएस एआईएमएल 105, बीटेक सीएस सीसीवी 29, बीटेक सीएस डीए 28, बीटेक सीएस सीएसएफ 24, बीटेक सीएस आइओटी 10, बीसीए 216, बीफार्म 81, बीएड 40, एमएससी बायोटेक 17, एमएससी माइक्रो एंड इम्यूनोलॉजी 13, एमएससी कैमिस्ट्री 11, एमएससी फिजिक्स 3, एमएससी मैथमेटिक्स 3, एमटेक सीई ट्रांसपोर्टेषन 5, एमटेक सीई स्ट्रक्चरल 2, एमटेक सीएस 6, एमटेक ईई 4, एमटेक ईसी 2, एमटेक एमई प्रोडक्षन 7, एमबीए 341, एमबीए ऑनर्स 17, एमबीए कंस्ट्रक्षन 7, एमबीए एफएमबी 35, एमबीए एलएससीएम 14, एमसीए 102, एमफार्म फार्माकोलॉजी 13, एमफार्म फार्मास्यूटिक्स 15, एलएलएम बीएफआइएल 1, एलएलएम सीडीपीएल के 7 विद्यार्थियों की उपाधि अनुमोदित की गई है। इसके अलावा डिप्लोमा कैमिकल के 10, डिप्लोमा सिविल इंजी. के 63, डिप्लोमा सीएस के 62, डिप्लोमा ईई 87, डिप्लोमा ईसी के 9, डिप्लोमा एमई के 146 तथा डिप्लोमा इन फार्मेसी के 45 विद्यार्थियों को डिप्लोमा सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

यह रहे उपस्थित

महापौर विनोद अग्रवाल, पूर्व सांसद चौ. तेजवीर सिंह, एमएलएसी ठा. ओमप्रकाश सिंह, विधायक पूरन प्रकाश, पिछडा आयोग के सदस्य भुवन भूषण कमल, डा. कमलकांत उपमन्यु, मुकेश खंडेलवाल, पूर्व विधायक गोवर्धन ठा. कारिंदा सिंह, कमल किशोर वार्ष्णेय आदि उपस्थित रहे।

पीएचडी डिग्री धारक

सीईए से निखिल गोविल, सौरभ आनंद, अंशी सिंह, जुगिंदर पाल सिंह, रवि प्रकाश वार्ष्णेय, अरविंद सिंह चौधरी, पुनीत शर्मा, आशीष तिवारी, गुंजन वर्मा, एजुकेशन से प्रति वर्मा, ज्योति शर्मा, रविकांत, मैकेनिकल इंजीनियरिंग से एम वी एन मोहन, अजय कुमार, कर्मवीर, फार्मेसी से मीनाक्षी पाण्डेय, गणेश लाल, अमन श्रीवास्तव, रजत गर्ग, शशांक चतुर्वेदी, मैनेजमेंट से खुशबू श्रीवास्तव, शुभी अग्रवाल, सिंह विवेक देवव्रत, सतवीर सिंह, दीपिका बॉदिल, आकांक्षा सिंघल, अविराज चौहान, अभिनव श्रीवास्तव, रेवा चिब, मीतू जैन, भूपेन्द्र गोयल, निहारिका सिंह, मेघा अग्रवाल, इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग से नितिन अग्रवाल, पी बचन, शैलेष कृष्ण सारस्वत, बायोटेक्नोलॉजी से अतुल कुमार वर्मा, तरूवाला शर्मा, कृष्णा षर्मा, मंथेना नवभारत, हिमश्वेता सिंह, आषीश गौड, रोहित कुमार शर्मा, तरूणा मोहिनानी, साक्षी गौतम, दीपिका, अंग्रेजी से शिरीन जैदी, प्रांशुल गौतम, अंकुश महाजन, शोर्मिता बोस, गणित से श्वेता, फिजिक्स से वर्षा रघुनाथजी गेडाम, ऐजाज अहमद खान, मिस्बा हामिद, मोहसिन रहमान खान, सौम्या राय, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग से इंद्रेश यादव, सिविल इंजीनियरिंग से अनस शाहिद मुल्तानी, उज्जवल शर्मा को पीएचडी की उपाधि प्राप्त हुई।

इन्हें मिले मेरिट सर्टिफिकेट

बीए ऑनर्स इकोनोमिक्स के प्रणव सिंह, बीए ऑनर्स एलएलबी के रोहित कुमार सोलंकी, बीकॉम एलएलबी के शौर्य जैन, बीकॉम ऑनर्स ग्लोबल एकाउंटिंग से भूमि मित्तल, बीटेक सीएस सीसीवी से पलक सिंघानिया, बीटेक सीएस सीएसएफ से अमन सिंह चौहान, बीटेक सीएस डीए प्रथम कुमार, बीटेक सीएस आईओटी तुषार अग्रवाल, बीटेक इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग रविकांत गर्ग, बीटेक एमई मेकाट्रॉनिक्स से औंकार निगम, बीटेक एमई ऑटोमोबाइल से चेतन सिंह पूनिया, बीबीए फैमिली बिजनेस आकर्ष अग्रवाल, एमएससी कैमिस्ट्री से देव पाठक, एमएससी मैथमेटिक्स से गिरिजा चौधरी, एमएससी माइक्रोबायोलॉजी एंड इम्यूनोलॉजी से रसनप्रीत कौर, एमएससी फिजिक्स से सिद्धार्थ शर्मा, एमटेक सिविल इंजीनियरिंग से रामबहादुर, एमटेक सीएस आरती जैन, एमटेक ईई से अनुपम जैन, एमटेक ईसी से ईभा दीप्ति सिंह, एमटेक एमई से महेश शर्मा, एमबीए एलएससीएम से सोमेश वार्ष्णेय, एमबीए कंस्ट्रक्षन अनुज यादव, एमफार्म फार्माकोलॉजी से नंदिनी दुबे, एलएलएम सीडीपीएल से अक्षिता अग्रवाल, डिप्लोमा फार्मेसी से याचना वत्स सहित पॉलीटेक्निक (डिप्लोमा) के अवनीष कुमार, विजय सिंह, गौतम, मुनीष गौतम, नीलेष शाक्य, जगदीश चौधरी को मेरिट सर्टिफिकेट से नवाजा गया।

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, मंगलवार 19 दिसंबर 2023
sheelshukla100@gmail.com

संपादकीय

अच्छे इरादों का इजहार

जीवाश्म ऊर्जा का इस्तेमाल क्रमिक रूप से रोकने की कोई समयबद्ध योजना तय नहीं की गई है। इस प्रक्रिया के लिए ध न और तकनीक उपलब्ध कराने के इरादे जरूर जताए गए हैं, लेकिन इस दिशा में कौन कितनी जिम्मेदारी निभाएगा, यह तय नहीं हुआ है। संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित कॉप–28 में सभी देश जीवाश्म ऊर्जा का इस्तेमाल क्रमिक रूप से घटाने पर सहमत हुए। उनमें अक्षय ऊर्जा का उपयोग बढ़ाने पर सहमति बनी। मीडिया रिपोर्टों में इस समझौते को ऐतिहासिक बताया गया है। लेकिन खुद उन्हीं खबरों में यह बताया गया है कि जीवाश्म ऊर्जा का इस्तेमाल रोकने और अक्षय ऊर्जा को पूरी तरह अपना लेने की कोई समयसीमा या समयबद्ध योजना तय नहीं की गई है। इस प्रक्रिया के लिए धन और तकनीक उपलब्ध कराने के इरादे जरूर जताए गए हैं, लेकिन इस दिशा में कौन कितनी जिम्मेदारी निभाएगा, यह तय नहीं हुआ है। कॉप–28 में जुटे नुमाइंदों ने तापमान वृद्धि को सीमित करने संबंधी पेरिस जलवायु संधि में तय लक्ष्य के प्रति अपने को फिर से वचनबद्ध किया, इसे एक बड़ी सफलता माना गया है। 2015 में हुई पेरिस संधि में तय किया गया था कि तमाम देश ऐसे कदम उठाएंगे ताकि धरती का तापमान (औद्योगिक युग शुरू होने के समय जो औसत तापमान था, उसकी तुलना में) 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक नहीं बढ़ पाए। उसके बाद से हर साल होने वाले कॉप (संयुक्त राष्ट्र जलवायु वार्ता में शामिल पक्षों के) सम्मेलन में इस लक्ष्य को दोहराया गया है। लेकिन बुनियादी सवाल यह है कि आखिर इस दिशा में अब तक क्या प्रगति हुई है? दरअसल, उचित तो यह होगा कि 1992 में शुरू हुई जलवायु वार्ता के बाद से अब तक की प्रगति का जायजा लिया जाए। खुद संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टों में बार–बार बताया गया है कि यह प्रगति बेहद असंतोषजनक है। प्रगति की यही रफ्तार रही तो साल 2100 से बहुत पहले ही धरती का तापमान खतरनाक सीमा तक बढ़ जाएगा। समस्या यह रही है कि विकसित देश अपनी जीवन–शैली और आर्थिक हितों पर कोई समझौता करने को तैयार नहीं हुए हैं। यूक्रेन युद्ध के बाद बने हालात में तो यूरोप में भी ऊर्जा नीतियां नकारात्मक दिशा में चली गई हैं, जो जलवायु के सवाल पर सबसे अधिक संवेदनशील था। ऐसे में यूएई में हुआ करार अच्छे इरादों के इजहार से अधिक कुछ हो पाएगा, क्या ऐसी उम्मीद रखी जा सकती है?

अब यूपी में सक्रिय होंगे नीतीश

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जदयू के नेता उत्तर प्रदेश को लेकर अक्सर कोई न कोई योजना बनाते रहते हैं। कई बार जदयू ने यूपी में विस्तार करने की योजना बनाई। पार्टी के प्रधान महासचिव केसी त्यागी इसकी कोशिश में रहे तो जब आरसीपी सिंह पार्टी के अध्यक्ष थे तब उन्होंने भी प्रयास किया था। लेकिन कभी कामयाबी नहीं मिली। जब से बिहार में जाति गणना हुई है और नीतीश कुमार को राष्ट्रीय स्तर पर प्रोजेक्ट करने के प्रयास शुरू हुए हैं तब से चर्चा है कि नीतीश उत्तर प्रदेश से चुनाव लड़ सकते हैं। कुछ समय पहले फूलपुर के कुछ लोग पटना जाकर नीतीश और पार्टी के अन्य नेताओं से मिले थे और उनसे फूलपुर सीट पर चुनाव लडने का आग्रह किया था। लव–कुश यानी कोईरी–कुर्मी समीकरण वाले इस सीट पर कांग्रेस नेता प्रियंक गांधी वाड्रा के भी चुनाव लडने की चर्चा चलती रहती है क्योंकि पारंपरिक रूप से यह सीट कांग्रेस की रही है और पंडित जवाहरलाल नेहरू इस सीट से चुनाव लड़ते थे। बहरहाल, फूलपुर के अलावा नीतीश कुमार को लेकर यह भी चर्चा रही है कि वे वाराणसी सीट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ लड़ सकते हैं। प्रधानमंत्री बनने की आकांक्षा रखने वाले अरविंद केजरीवाल 2014 में वाराणसी लड़े थे लेकिन उसके बाद फिर वहां नहीं गए। प्रियंका गांधी वाड्रा के भी वाराणसी लडने की खबरें आती रहती हैं और पार्टी के प्रदेश अध यक्ष अजय राय ने यह संकेत भी दिया था कि इस बारे में चर्चा हुई है। बहरहाल, अब खबर है कि नीतीश कुमार 24 दिसंबर को वाराणसी लोकसभा क्षेत्र के तहत आने वाली रोहनिया सीट पर एक जनसभा करेंगे। यह कुर्मी बहुल इलाका है। वहां से नीतीश कुमार कोई मैसेज दे सकते हैं। वे वाराणसी या फूलपुर से चुनाव लड़ेंगे या नहीं यह तय नहीं है लेकिन यह तय है कि वे पूर्वी उत्तर प्रदेश में अपनी पार्टी के विस्तार को लेकर गंभीर है। अभी तक मोटे तौर पर कोईरी–कुर्मी का रूझान उत्तर प्रदेश में भाजपा की ओर है। अगर नीतीश सक्रिय होते हैं तो विपक्षी गठबंधन को इसका कुछ फायदा हो सकता है।

ममता की चुनौती सबसे बड़ी है

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस की नेता ममता बनर्जी की मुश्किलें बाकी क्षत्रपों से अलग हैं। हिंदी पट्टी के राज्यों में भाजपा हमेशा एक बड़ी ताकत रही है लेकिन पश्चिम बंगाल में भाजपा का उभार नया नया है। वह 2016 के विधानसभा चुनाव तक बिल्कुल हाशिए की पार्टी थी। सिर्फ दो–चार सीट जीतने वाली पार्टी। लेकिन 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 18 सीटें जीतीं और फिर 2021 के विधानसभा चुनाव में वह 77 सीटों पर जीत गई। कांग्रेस और लेफ्ट दोनों साफ हो गए। हालांकि 2021 के विधानसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी और अमित शाह दोनों के बहुत जोर लगाने के बावजूद भाजपा 77 सीट ही जीत पाई इसलिए ममता बनर्जी को लग रहा है कि आमने–सामने के मुकाबले में वे भाजपा का रथ रोक देंगी। लेकिन हकीकत यह है कि भाजपा के साथ मोमेंटम है। उसने पश्चिम बंगाल में अभी जीतना शुरू किया है और उसका वोट आधार मजबूत हुआ है। पश्चिम बंगाल में 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को करीब 41 फीसदी से कुछ ज्यादा वोट मिले थे और 18 सीटें मिली थीं। 2021 के विधानसभा चुनाव में जब ममता ने अस्मिता का दांव खूब खुल कर खेला और मोदी, शाह को बाहरी बता कर चुनाव लड़ा तब भी भाजपा को 38 फीसदी वोट मिले। यानी लोकसभा से सिर्फ दो फीसदी कम हुआ। इस तरह उसका वोट उसके साथ बना रहा। अगर बंगाल की जनसंख्या संरचना देखें तो वहां 30 फीसदी मुस्लिम आबादी है। हिंदू आबादी 70 फीसदी है। जाहिर है मुस्लिम वोट भाजपा को नहीं मिलता है। सो, भाजपा को लोकसभा में करीब 41 फीसदी वोट मिलने का मतलब है कि 60 फीसदी हिंदुओं ने उसको वोट दिया। विधानसभा चुनाव में भी 55 फीसदी के करीब हिंदू वोट भाजपा को मिला। यह सामान्य से अधिक हिंदू ध्रुवीकरण का संकेत है। पूरे देश में भाजपा को औसतन 40 से 45 फीसदी हिंदू वोट मिलते हैं। लेकिन बंगाल में यह 55 से 60 फीसदी है। इसका मतलब है कि राज्य की 30 फीसदी मुस्लिम आबादी की प्रतिक्रिया में हिंदू ध्रुवीकरण भाजपा के पक्ष में हो रहा है। अगले चुनाव में इस स्तर का या इससे ज्यादा हिंदू ध्रुवीकरण नहीं होगा, यह मानने की कोई तार्किक वजह नहीं दिखती है।भाजपा ने पहले से ज्यादा आक्रामक तरीके से हिंदू–मुस्लिम का नैरेटिव बनाया है। तृणमूल कांग्रेस को मुस्लिम तुष्टिकरण करने वाला बताया है।

संसद में सुरक्षा चूक की घटना को महंगाई और बेरोजगारी से जोड़कर देखना गलत

संसद में हुई आतंकी घटना को बेरोजगारी से जोड़कर विपक्ष बड़ी चालाकी से युवाओं को भड़काना चाहता है। वो चाहता है कि युवा सड़कों पर उतरकर धरना, प्रदर्शन कर सरकार का विरोध करें जिससे सरकार की छवि को ठोस पहुंचे और चुनाव में वो लोगों की नाराजगी को अपने पक्ष में भुना सकें। पिछले दिनों लोकसभा की दर्शक दीर्घा से दो युवक सांसदों की मेज पर कूद गए। एक युवक ने जूते से कुछ निकाला और सदन के अंदर पीला धुआं छा गया। आरोपियों को पुलिस ने पकड़ लिया। संसद की सुरक्षा में हुई चूक के मामले में कांग्रेस और बीजेपी आमने–सामने हैं। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सांसद नेता राहुल गांधी से संसद में सुरक्षा चूक पर मीडिया ने सवाल पूछा। उन्होंने कहा कि सिक्योरिटी ब्रीच जरूर हुई है, लेकिन इसका सबसे बड़ा कारण बेरोजगारी और महंगाई है। मोदी जी की पॉलिसीज के कारण देश के युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा। राहुल के बयान के बाद बीजेपी की प्रतिक्रिया आना स्वाभाविक था। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने भी बीजेपी को घेरते हुए बयान दिया है कि लोकसभा में विजिटर गैलरी से कूदने वाले आरोपी बेरोजगारी की समस्या पर देश का ध्यान खींचना चाहते थे। ऐसे में अहम सवाल यह है कि क्या इस गंभीर एवं संवेदनशील मामले में राजनीति होनी चाहिए? क्या असल में इस घटना की वजह बेरोजगारी है? जांच एजेंसियां आरोपियों से पूछताछ में जुटी हैं। उम्मीद है कुछ दिनों में सच भी सामने आ ही जाएगा। लेकिन प्रथम दृष्टया विपक्षी दल अपने बयानों से आरोपियों का बचाव करते दिखाई दे रहे हैं। वास्तव में विपक्षी दलों के प्रमुख नेताओं की बयानबाजी सोची समझी रणनीति का हिस्सा लगती है। आतंकी घटना को अंजाम देने वाले युवकों को बेरोजगारी से पीड़ित और कुंठित बताकर विपक्ष मोदी सरकार को घेरने की जो तैयारी कर रही है, उसकी परतें धीरे–धीरे खुलने लगी हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में विपक्ष और इंडिया गठबंधन ने बीजेपी को पराजित करने के सारे यत्न किए। लेकिन समझदार जनता ने विपक्ष की नीति और नीयत को अच्छे से पहचान कर न्याय कर दिया। हिंदी पट्टी के तीन राज्यों में मतदाताओं ने कांग्रेस को जो पटखनी दी है, उसने कांग्रेस को बहुत गहरी चोट दी है। मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में समाजवादी पार्टी को भी काफी उम्मीदें थीं। लेकिन इस बार उसका प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा। ऐसे में विपक्ष और खासकर इंडिया गठबंधन में शामिल दलों को यह समझ नहीं आ रहा कि, 2024 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी का मुकाबला वो कैसे करेंगे। लोकसभा चुनाव में वो जनता के सामने क्या मुद्दा और एजेण्डा लेकर जाएंगे। असल में जन सरोकारों से दूर सत्ता पाने की बेचौनी में विपक्ष के पास मोदी सरकार को घेरने के लिए कोई बड़ा मुद्दा नहीं है। ऐसे में विपक्ष का सारा जोर इस बात पर है कि येन केन प्रकारेण मोदी सरकार की छवि को धूमिल किया जाए। किसी भी यत्न से जनता के मन में मोदी के प्रति प्यार, स्नेह और समर्थन की बजाय क्रोध और असम्मान का भाव जागृत हो जाए। संसद की घटना के चार दिनों के भीतर ही विपक्षी दलों के नेताओं के बयानों और उनके हमदर्दों के चेहरे से ये तो साफ हो गया है कि ये आतंकी मानसिकता के युवा किसी षड्यंत्रकारी ताकत के मोहरे भर हैं। वर्ष 2014 में जब से मोदी सरकार ने देश की सत्ता संभाली हैं, तब से तमाम देशविरोध ी ताकतें किसी ने किसी बहाने देश और मोदी सरकार की छवि धूमिल करने की कोशिशें करती रहती हैं। देश में एक ऐसा गैंग हैं,

जिसे देश में और देश से बाहर बैठी ताकतें खाद पानी उपलब्ध कराती हैं। आंदोलनजीवी ये गैंग देश विरोधी ताकतों के इशारे पर कभी शाहीन बाग, कभी किसान आंदोलन और कभी पहलवान आंदोलन के जरिये मोदी सरकार को घेरने और देश की प्रतिष्ठा ध ूमिल करने का काम करते हैं। इस गैंग ने नोट बंदी, धारा 370 को हटाते समय और कोविड काल में भी देश में अराजकता फैलाने की पूरी कोशिश की। लेकिन जनता इनके बहकावे में नहीं आई। इस गैंग का मकसद किसी भी तरीके से देश में अस्थिरता और अराजकता का माहौल बनाना है। ऐसा करके वो देश के बुरे हालातों और घटनाओं को ठिकरा मोदी सरकार के सिर फोड़कर सत्ता प्राप्ति के मंसूबों में कामयाब होना चाहते हैं। इस गैंग ने देश हित में उठाये गये हर कदम का विरोध संसद से लेकर सड़क तक किया है। लेकिन जनता इस देश विरोधी गैंग के हथकंडों और प्रपंचों को अब समझने लगी है। इसलिए वो इनके झांसे में नहीं आती। हालिया विधानसभा चुनाव में जनता ने जिस विवेकशीलता का परिचय दिया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए वो कम है। संसद में हुई आतंकी घटना को बेरोजगारी से जोड़कर विपक्ष बड़ी चालाकी से युवाओं को भड़काना चाहता है। वो चाहता है कि लोकसभा चुनाव से पूर्व युवा सड़कों पर उतरकर धरना, प्रदर्शन कर सरकार का विरोध करें जिससे सरकार की छवि को ठोस पहुंचे और चुनाव में वो लोगों की नाराजगी को अपने पक्ष में भुना सकें। बेरोजगारी पिछले दस वर्षों में पैदा हुई समस्या नहीं है। देश में छह दशक तक और राज्यों में सर्वाधि ाक समय तक कांग्रेस की सरकारें रही हैं। कांग्रेस के कार्यकाल में बेरोजगारी से निपटने के लिए हुए कार्य सबके सामने हैं। अगर कांग्रेस ने अपने लंबे कार्यकाल में इस समस्या पर ढंग से काम किया होता तो आज बेरोजगारी की समस्या इतनी विकराल और गंभीर न होती। लेकिन जब केवल विरोध के लिए विरोध करना हो तो फिर तर्क, तथ्य और गंभीर प्रश्न नेपथ्य में चले जाते हैं। राहुल और अखिलेश यादव आज युवाओं की बेरोजगारी का राग अलाप रहे हैं, उन्हें देश को बताना चाहिए कि जब उनके दल सत्ता मेंथे तो उन्होंने कितनी गंभीरता से इस बारे में कदम उठाये थे।

बदला है भारतीय न्यायपालिका का नजरिया ?

सत्येन्द्र रंजन

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि अनुच्छेद 370 का मकसद जम्मू–कश्मीर का शेष भारत के साथ एकीकरण था। तब यह प्रश्न उठेगा कि अगर अनुच्छेद 370 का यह उद्देश्य था, तो फिर अनुच्छेद 371 का क्या मकसद है? इस अनुच्छेद की उपराधाराओं ए लेकर जे तक के जरिए महाराष्ट्र एवं गुजरात, नगालैंड, असम, मणिपुर, आंध्र प्रदेश, सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश और गोवा को कई प्रकार के विशेष अधिकार और संरक्षण मिले हुए हैं। आम समझ में अनुच्छेद 370 को इसी क्रम में देखा जाता रहा है। लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट ने इसकी अलग व्याख्या सामने रखी है। अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बारे में सुप्रीम कोर्ट का फैसला कई रूपों में असहज करने वाला है। उनमें पहला मुद्दा अनुच्छेद 370 के बारे में कोर्ट की कुछ टिप्पणियां हैं। मसलन, प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ ने कहा,'अनुच्छेद 370 का मकसद जम्मू–कश्मीर का क्रमिक रूप से शेष भारत के साथ एकीकरण था।'यह अनुच्छेद सिर्फ एक अस्थायी प्रावधान था (यानी इसे खत्म होना ही था)।'राष्ट्रपति को अनुच्छेद 370 (3) के तहत वह प्राप्त अधिकार था, जिसका इस्तेमाल करते हुए वे अनुच्छेद 370 का अस्तित्व खत्म करने की अधिसूचना जारी सकते थे।'जम्मू–कश्मीर की संविधान सभा के भंग हो जाने के बावजूद अनुच्छेद 370 को निरस्त कर सकने की राष्ट्रपति की शक्ति बनी रही।ये टिप्पणियां इसलिए असहज करने वाली हैं, क्योंकि ऐतिहासिक संदर्भ की आम समझ यही है कि जम्मू–कश्मीर कुछ खास शर्तों के साथ भारत में शामिल हुआ था। इन शर्तों के तहत उसने अपने कुछ अधिकार केंद्र को सौंपे, जबकि आंतरिक स्वायत्तता संबंधी ज्यादातर अधि ाकार उसने अपने पास रखे। अनुच्छेद 370 के तहत भारतीय संविधान में इस व्यवस्था को स्वीकार किया गया था। इसके तहत भारतीय राज्य ने जम्मू–कश्मीर के लोगों को उनकी स्वायत्तता की रक्षा का वचन दिया था। इस वचन की रक्षा भारतीय राज्य–व्यवस्था का ऐतिहासिक दायित्व था।आम समझ है कि संविधान में इस अनुच्छेद को शामिल करते समय इसे अस्थायी प्रावधान सिर्फ इस अर्थ में कहा गया था कि जब तक जम्मू–कश्मीर की संविधान सभा अपना संविधान नहीं बना लेती, वहां का प्रशासन और भारतीय संघ से उसका रिश्ता अनुच्छेद 370 के आधार पर निर्धारित होगा। लेकिन अब कोर्ट ने इसे इस रूप में अस्थायी बताया है कि इसका मकसद जम्मू–कश्मीर का एकीकरण था। स्पष्टतरू कोर्ट ने इस पहलू को बिल्कुल अलग नजरिए से देखा है।जब कोर्ट ने बिल्कुल अलग दृष्टिकोण अपना लिया, तो उसका इस निष्कर्ष पर पहुंचना लाजिमी था कि जम्मू–कश्मीर की संविधान सभा की बिना सहमति के भी अनुच्छेद 370 को निरस्त किया जा सकता था।

मगर यहां विडंबना यह है कि इसके लिए अपनाए गए माध्यम को खुद कोर्ट ने समस्याग्रस्त माना है। अनुच्छेद 370 को संशोधित करने के लिए अनुच्छेद 367 में सुधार किया गया। इसके लिए संवैधानिक आदेश 272 जारी किया गया। कोर्ट ने इस आदेश को असंवैधानिक बताया है। मतलब सुप्रीम कोर्ट की यह राय है कि किसी दूसरे अनुच्छेद को संशोधित करने के लिए किसी अन्य अनुच्छेद में बदलाव संविध ान के अनुरूप नहीं है। यानी सरकार को जिस अनुच्छेद में संशोधन करना हो, उसे प्रत्यक्ष रूप से उसके लिए ही कदम उठाने चाहिए, ऐसा बैकडोर से नहीं करना चाहिए। मुद्दा यह है कि अगर वह आदेश असंवैध ानिक था, तो उसके परिणामस्वरूप उठाया गया कदम संवैधानिक कैसे हो सकता है? सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि अनुच्छेद 370 का मकसद जम्मू–कश्मीर का शेष भारत के साथ एकीकरण था। तब यह प्रश्न उठेगा कि अगर अनुच्छेद 370 का यह उद्देश्य था, तो फिर अनुच्छेद 371 का क्या मकसद है? इस अनुच्छेद की उपराधाराओं ए लेकर जे तक के जरिए महाराष्ट्र एवं गुजरात, नगालैंड, असम, मणिपुर, आंध्र प्रदेश, सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश और गोवा को कई प्रकार के विशेष अधिकार और संरक्षण मिले हुए हैं। आम समझ में अनुच्छेद 370 को इसी क्रम में देखा जाता रहा है। लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट ने इसकी अलग व्याख्या सामने रखी है। बेशक, अनुच्छेद 370 के रहते हुए भी इसके जरिए जम्मू–कश्मीर के अनेक संरक्षित अधिकार क्रमिक रूप से केंद्र ने हासिल कर लिए थे। बल्कि अधिकांश विशेषज्ञों का मानना है कि गुजरे दशकों में आगे बढ़ी इस प्रक्रिया के कारण अनुच्छेद 370 के मूल स्वरूप में काफी हद तक क्षरण हो चुका था। इस हकीकत के बावजूद सच यह है कि जम्मू–कश्मीर की खास राजनीतिक पहचान और वहां के बाशिंदों के मनोवैज्ञानिक संरक्षण के तौर पर इस अनुच्छेद की उपयोगिता बनी हुई थी। वैसे अगर भारतीय जनता पार्टी के वैचारिक नजरिए से देखें, तो (इस पार्टी के पूर्व संस्करण भारतीय जन संघ की स्थापना के समय से ही) यह अनुच्छेद हमेशा ही एक राजनीतिक मसला था, जिसे भारतीय राज्य अपनी शक्ति के इस्तेमाल से हल कर सकता था। भाजपा नेता हमेशा यह कहते थे कि कांग्रेस नेतृत्व की ष्कमजोरीष या उसकी ष्वोट बैंक की सियासतष के कारण यह अनुच्छेद संविधान का हिस्सा बना रहा। उनका हमेशा से वादा था कि जब कभी वे सत्ता में आएंगे, वे इस अनुच्छेद को खत्म कर देंगे। इसलिए भाजपा सरकार ने यह कदम उठाया, तो यह उनकी घोषणाओं के अनुरूप ही था।

भाजपा और उसके मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विमर्श पर गौर करें, तो यह साफ हो जाता है कि इस अनुच्छेद से उनके विरोध का एक प्रमुख कारण जम्मू–कश्मीर का मुस्लिम बहुल राज्य होना रहा है। दूसरी बात यह रही है कि आरएसएस की विचारधारा भारत के संघीय स्वरूप के साथ सहज कभी नहीं रही। भारत को एकात्मक व्यवस्था का रूप देना उसकी सोच का अभिन्न अंग रहा है। इसलिए अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के साथ वर्तमान भाजपा सरकार ने जम्मू–कश्मीर का दर्जा गिरा कर उसे केंद्र शासित प्रदेश बनाया और इस प्रदेश को एकतरफा ढंग से दो भागों (जम्मू–कश्मीर और लद्दाख) में बांट दिया, तो इसमें उसे कोई वैचारिक या नैतिक अवरोध ा नजर नहीं आया।

मगर अब हमारे सामने हकीकत यह है कि सुप्रीम कोर्ट ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन दोनों ही बातों को स्वीकृति दे दी है। कोर्ट के सामने एक बड़ा मुद्दा यह था कि क्या भारतीय संवैध ानिक व्यवस्था के तहत किसी राज्य को केंद्र शासित प्रदेश में बदला जा सकता है? विशेषज्ञों ने ध्यान दिलाया है कि संविधान के अनुच्छेद 3 के तहत किसी राज्य को उसकी सहमति से विभाजित किया जा सकता है, उसके किसी एक हिस्से को केंद्र शासित प्रदेश बनाया जा सकता है, लेकिन पूरे राज्य को केंद्र शासित प्रदेश नहीं बनाया जा सकता। आखिर सुप्रीम कोर्ट इतने बड़े सवाल को अनसुलझा कैसे छोड़ सकता था?

इस मुद्दे पर उसने निर्णय देने से यह कहते हुए इनकार कर दिया कि केंद्र सरकार की तरफ से सुनवाई के दौरान उसे आश्वासन दिया गया कि जम्मू–कश्मीर के पूर्ण राज्य के दर्जे को बहाल कर दिया जाएगा। क्या इसे कोर्ट का विचित्र रुख नहीं कहा जाएगा? इसलिए कि सुप्रीम कोर्ट को निर्णय पांच अगस्त 2019 को उठाए गए संसद के कदम (यानी राज्य का दर्जा गिराने) की संवैधानिकता पर देना था। इस पर नहीं कि भविष्य में क्या होगा। स्पष्टतरू इस मुद्दे पर चुप रह कर सुप्रीम कोर्ट ने भारत के हर राज्य के भविष्य को अधर में लटका दिया है। इसका अर्थ यह है कि भविष्य में कभी कोई सरकार राष्ट्रपति शासन लागू कर उसी प्रक्रिया से किसी राज्य को विभाजित कर सकती है या उसका दर्जा गिरा सकती है, जैसाकि जम्मू–कश्मीर के मामले में किया गया। मतलब यह कि अब पूरी संघीय व्यवस्था केंद्र की मर्जी पर निर्भर हो गई है।

1990 के दशक में एसआर बोम्मई मामले में आए फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने संघीय व्यवस्था को भारतीय संविधान के बुनियादी ढांचे का हिस्सा घोषित किया था। केशवानंद भारती से लेकर नौवीं अनुसूची की वैध ता से संबंधी मामलों में सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के बुनियादी ढांचे की रक्षा को अपनी जिम्मेदारी माना था। तो यह प्रश्न उठा है कि जम्मू–कश्मीर का दर्जा गिराने के बारे में दो टूक निर्णय ना देना क्या सुप्रीम कोर्ट का अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोडना नहीं है?

ये सारे संवैधानिक सवाल हैं। ये गंभीर प्रश्न हैं। इसलिए कि भारतीय संविधान की जो विचारध ारा है और उसका जो बुनियादी ढांचा है, सुप्रीम कोर्ट का ताजा निर्णय उनके अनुरूप मालूम नहीं पड़ता।

आज का राशिफल

मेष राशि– आज का दिन खुशियों से भरा रहेगा। आप परिवार के साथ समय बिताएंगे। घर का वातावरण खुशनुमा बना रहेगा। छोटे बच्चों को कोई बड़ा सरप्राइज मिल सकता है। कुछ लोग आपके किसी काम में मदद भी कर सकते हैं। आपको किस्मत का पूरा–पूरा साथ मिलेगा। दूसरे लोग आपके कामकाज से प्रभावित होंगे। आपकी तरक्की के नये रास्ते खुलेंगे। आप किसी काम को नये सिरे से। शुरू करने के बारे में विचार कर सकते हैं। इसके लिए आपको कुछ सहयोगियों की जरूरत पड़ सकती है। सेहत को लेकर थोड़ा ध्यान रखने की जरूरत है।

' शुभ रंग और अंक– लाल, 4

वृष राशि– आज का दिन आपके लिए बेहद खास रहने वाला है। ऑफिस के किसी काम से आपकी लम्बी यात्रा हो सकती है। यात्रा लाभदायक रहेगी। बुजुर्ग अपने किसी बचपन के दोस्त से मिलकर अपनी पुरानी यादों को फिर से ताजा करेंगे। आज आपके आर्थिक स्थिति में काफी सुधार आयेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिहाज से आज का दिन बेहतर है। आप हर काम को धैर्य और समझदारी से पूरा करने की कोशिश करेंगे। जो लोग फिल्म जगत से जुड़े हैं उनको आज काम का अच्छा ऑफर मिल सकता है।

' शुभ रंग और अंक– नीला, 2

मिथुन राशि–आज आपका दिन उत्साह से भरा रहने वाला है। आपका रुझान अध्यात्म की तरफ रहेगा, आप किसी धार्मिक कार्यक्रम की योजना बना सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपको बढ़ोत्तरी के नये अवसर मिलेंगे। इस राशि के जो लोग मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते हैं। उनके लिए लाभ के योग बन रहे हैं। अगर आप कोई नई कार खरीदने का मन बना रहे हैं तो आज आपके लिए शुभ दिन है। घर में खुशियां बनी रहेंगी। आज शत्रु पक्ष आपके सामने नतमस्तक होगा। छात्र किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने का मन बनाएंगे।

' शुभ रंग और अंक– पिच, 6

कर्क राशि– आज का दिन आपके लिए मिला–जुला रहेगा। किसी जरूरी चीज को खरीदने में आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। इस राशि के जो लेखक हैं, उनकी कोई कविता लोगों को काफी पसंद आएगी। आपको किसी संस्था के द्वारा सम्मानित भी किया जा सकता है। जीवनसाथी के साथ आपका ताल मेल अच्छा बना रहेगा, घर का फैंसी डेकोरेशन करवाने का मन बना सकते हैं। आपको किसी जरूरी काम में पड़ोसियों का सहयोग मिलेगा, आपका बिगड़ता काम बन जायेगा। माता–पिता का आशीर्वाद आपके साथ बना रहेगा। स्टूडेंट आज कोई नया कोर्स ज्वाइन कर सकते हैं।

' शुभ रंग और अंक– मैहरून, 7

सिंह राशि– आज का दिन शानदार रहेगा। ऑफिस में आपको मनपसंद काम दिया जा सकता है। काम करने में मन लगा रहेगा। आपसे एक्सपर्ट के तौर पर।सलाह ली जा सकती है। इस राशि के लोगों की प्राइवेट नौकरी में प्रमोशन के साथ ही।इनकम बढने के भी चांस नजर आ रहे हैं। छात्र अपने कुछ विषयों को लेकर अधिक रुचि दिखायेंगे। एजुकेशन सेक्टर में काम कर रहे लोगों का दिन राहत से भरा रहेगा। बिजनेसमैन को काम में कुछ नए अनुभव मिल सकते हैं।

' शुभ रंग और अंक– सिल्वर, 8

कन्या राशि– आपके लिए दिन अनुकूल रहने वाला है। लोग आपके काम की तारीफ करेंगे। आप खुद भी अपने काम से संतुष्ट रहेंगे। जीवनसाथी के साथ बाहर डिनर पर जाने का अच्छा मौका है, किसी रेस्टोरेंट जयेंगे। स्पोर्ट्स से जुड़े लोग किसी नई एक्टिविटी में भाग लेंगे। आज आपकी सेहत अच्छी बनी रहेगी।

छात्र अपने करियर के लिए किसी सीनियर से सलाह ले सकते हैं, सही सलाह आपके करियर को किसी अच्छे मुकाम पर पहुंचा सकती है। आपको काम में मुनाफा मिलेगा।

' शुभ रंग और अंक– बैंगनी, 9

तुला राशि– आज का दिन आपके लिए अच्छा है। आपके सभी काम समय से पूरे होंगे।ऑफिस में आपको सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। आपके सकारात्मक विचार किसी व्यक्ति को प्रभावित कर सकते हैं। आपकी मदद दूसरों के लिए फायदेमंद होगी। स्टूडेंट्स अपनी पढ़ाई को लेकर कुछ बदलाव कर सकते हैं।

क्या था डोभाल का सीक्रेट प्लान, जब 18 साल पहले हमेशा के लिए खत्म हो जाती दाऊद की कहानी, लेकिन मुंबई पुलिस...

पाकिस्तान की ओर से सालों तक इस बात को बार बार नकारा गया है। लेकिन कराची में दाऊद के नाम पर तीन मकान हैं। दशकों से भारत में मोस्ट वॉन्टेड रहे दाऊद को पकड़ने की तमाम कोशिशें नाकाम रहीं। उसे ठिकाने लगाने के एक प्लान में तो खुद अजीत डोभाल शामिल थे। अंडरवर्लड डॉन दाऊद के मामले पर पाकिस्तान लगातार छुपाता रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स में आशंका जताई जा रही है कि सालों से पाकिस्तान में रह रहे दाऊद को जहर दिया गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक दाऊद इब्राहिम को कराची के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया। उसकी हालात गंभीर बताई जा रही है। दावा किया जा रहा है कि दाऊद को उसके घर पर ही जहर दिया गया है। वैसे एक जगह तो ये भी दावा किया गया कि दाऊद इब्राहिम को 15 दिसंबर को जहर दिया गया था और 17 दिसंबर को वो मर भी गया। लेकिन इस बात की कई पुष्टि नहीं है। दाऊद इब्राहिम के करीबी रिश्तेदार और पूर्व क्रिकेटर जावेद मियांदाद समेत पूरे परिवार को हाउस अरेस्ट कर लिया गया है। इसके अलावा पाकिस्तान में इंटरनेट की सेवाएं ठप कर दी गई हैं। हालांकि रक्षा मामलों के जानकारों के अनुसार पाकिस्तान कभी इस खबर की पुष्टि नहीं करेगा। हिंदुस्तान का दुश्मन नं 1 दाऊद इब्राहिम 1993 के मुंबई हमले का आरोपी है। अमेरिका ने भी उसे आतंकी घोषित किया हुआ है। मुंबई ब्लास्ट के बाद दाऊद भारत से भाग गया था। ये डी कंपनी का सरगना भी है। संयुक्त राष्ट्र की ओर से घोषित आतंकवादी और 1993 के मुंबई धमाकों का मुख्य आरोपी दाऊद कराची में रहता है। ये कई बार दुनिया के सामने आया है। पाकिस्तान की ओर से सालों तक इस बात को बार बार नकारा गया है। लेकिन कराची में दाऊद के नाम पर तीन मकान हैं। दशकों से भारत में मोस्ट वॉन्टेड रहे दाऊद को पकड़ने की तमाम कोशिशें नाकाम रहीं। उसे ठिकाने लगाने के एक प्लान में तो खुद अजीत डोभाल शामिल थे। आज से करीब 18 साल पहले दाउद इब्राहिम की कहानी हमेशा–हमेशा के लिए खत्म हो जाती। 23 जुलाई 2005, ये वो तारीख थी जो दाऊद की मौत के लिए तय की गई थी। ये वो तारीख थी जब दाऊद की बेटी का वलीमा यानी रिसेप्शन था। दाऊद को दुबई के उसी होटल में मारा जाना था जहां रिसेप्शन था। लेकिन भारतीय खुफिया एजेंसी का ये पूरा आपरेशन मुंबई पुलिस की एक जरा सी गलती ने नाकाम बना दिया। ये खुलासा आरके सिंह ने किया जो उस वक्त देश के गृह सचिव थे। दाऊद की बेटी मारूख शेख का निकाह पाकिस्तान के क्रिकेटर जावेद मियांदाद के बेटे जुनैद से मक्का में हुआ था। निकाह की खबर बेहद गोपनीय रखी गई थी। बस गिनती के लोगों को इसकी खबर थी। 1993 के सिरियल ब्लास्ट के बाद दाउद लगातार दुबई और पाकिस्तान के बीच ही घूम रहा था। लेकिन 2000 के मध्य में संयुक्त राष्ट्र ने जैसे ही दाऊद को अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी घोषित किया, पाकिस्तान पर चौतरफा दबाव पड़ने लगा। इसी के बाद से दाऊद के मूवमेंट को लेकर बेहद गोपनीयता बरती जाने लगी थी। मुंबई पुलिस ने फेर दिया डोभाल के प्लान पर पानी मक्का में दाउद की बेटी के निकाह की खबर दिल्ली तक पहुंच गई थी। सारी एजेंसियों के कान खड़े हो गए थे। मौजूदा राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तब बस पांच महीने पहले ही जनवरी 2004 में आईबी यानी खुफिया ब्यूरो के निदेशक पद से रिटायर हुए थे। निकाह के बाद दावत ए वलीमा यानी रिसेप्शन की बारी थी। मियांदाद और दाऊद रिसेप्शन करांची में ही करना चाहते थे। पर पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों ने इसकी मंजूरी नहीं दी। लिहाजा ये तय हुआ कि दुबई के होटल ग्रैंड हयात में रिसेप्शन 23 जुलाई को होगा। इस बात की खबर पहली बार भारतीय एजेंसियों को लगी थी कि दाऊद किस तारीख को किस दिन कितने बजे कहां होगा। आईबी को पता था कि दाउद को मारने का इससे बेहतर अवसर नहीं मिलेगा। इसी के बाद आपरेशन दाऊद पर भारत सरकार द्वारा छोटा राजन गैंग के गुर्गों को महाराष्ट्र के बाहर किसी खुफिया जगह पर ट्रेनिंग दी जा रही थी। तभी मुंबई पुलिस के अधिकारी ट्रेनिंग स्पॉट पर अरेस्ट वॉरंट के साथ आए थे और यह खुफिया ऑपरेशन अपने अंजाम तक नहीं पहुंच सका था।

यूरोप में इस्लाम की कोई जगह नहीं...इटालियन पीएम जार्जिया मेलोनी की चरमपंथ पर दो टूक

वीडियो में इटली के प्रधानमंत्री को इटालियन भाषा में बोलते हुए सुना गया। मेलोनी की टिप्पणी रोम में उनकी धुर दक्षिणपंथी पार्टी ब्रदर्स ऑफ इटली द्वारा आयोजित एक राजनीतिक उत्सव में आई। इटली की प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी ने कहा कि इस्लामी संस्कृति पूरी तरह से यूरोपीय सभ्यता के अनुकूल नहीं है, उन्होंने कहा कि वह इटली में शरिया कानून लागू नहीं होने देंगी। इतालवी प्रधान मंत्री ने कहा कि इस्लामी संस्कृति और यूरोपीय सभ्यता के मूल्यों और अधिकारों में संगतता समस्याहै। इटली के प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी ने कहा कि मेरा मानना है कि इस्लामिक संस्कृति और हमारी सभ्यता के मूल्यों और अधिकारों के बीच अनुकूलता की समस्या है। इटली में शरिया कानून लागू नहीं होने देंगे।इ हमारी सभ्यता भिन्न है!वीडियो में इटली के प्रधानमंत्री को इटालियन भाषा में बोलते हुए सुना गया। मेलोनी की टिप्पणी रोम में उनकी धुर दक्षिणपंथी पार्टी ब्रदर्स ऑफ इटली द्वारा आयोजित एक राजनीतिक उत्सव में आई। इस कार्यक्रम में ब्रिटिश प्रधान मंत्री ऋषि सुनक भी शामिल हुए। उन्होंने आगे कहा कि यह बात मेरी समझ से बाहर नहीं है कि इटली के अधिकांश इस्लामी सांस्कृतिक केंद्रों को सऊदी अरब द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। मेलोनी ने सख्त शरिया कानून के लिए सऊदी अरब की भी आलोचना की। सऊदी अरब एक ऐसा देश है जो शरिया कानून लागू करता है और शरिया का अर्थ है व्यभिचार के लिए लापरवाही और धर्मत्याग और समलैंगिकता के लिए मौत की सजा। मेरा मानना घ्है कि इन्हें उठाया जाना चाहिए, जिसका मतलब इस्लाम पर सामान्यीकरण करना नहीं है। इसका मतलब यह समस्या उठाना है कि यूरोप में इस्लामीकरण की एक प्रक्रिया चल रही है जो हमारी सभ्यता के मूल्यों से बहुत दूर है।

अमेरिकी राष्ट्रपति के सुरक्षा काफिले से तेज रफ्तार कार की टक्कर, जानिए फिर क्या हुआ

17 दिसंबर को रात 8 बजे (स्थानीय समयानुसार) एक तेज आवाज सुनाई दी, जब सेडान ने अमेरिकी गुप्त सेवा वाहन को टक्कर मार दी, जो बाइडेन लगभग 40 मीटर (130 फीट) दूर पास के चौराहे को बंद करने के लिए खड़ा था। अमेरिका के डेलावेयर के विलमिंगटन में अमेरिकी राष्ट्ररपति जो बाइडेन के काफिले के एक हिस्से से कार की टक्कर हो गई। ये टक्कर 17 दिसंबर को हुई, जब बाइडेन अपनी पत्नी जिल बाइडेन के साथ एक कार्यक्रम में शिरकत करने के बाद वापस जा रहे थे। हालांकि एपी की रिपोर्ट के अनुसार दोनों को कोई नुकसान नहीं हुआ। 17 दिसंबर को रात 8 बजे (स्थानीय समयानुसार) एक तेज आवाज सुनाई दी, जब सेडान ने अमेरिकी गुप्त सेवा वाहन को टक्कर मार दी, जो बाइडेन लगभग 40 मीटर (130 फीट) दूर पास के चौराहे को बंद करने के लिए खड़ा था। इससे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के सीक्रेट सर्विस मैन ने कार को हथियारों के साथ घेर लिया और चालक को अपने हाथ ऊपर करने का निर्देश दिया। इस बीच बाइडेन को दूसरे वाहन में ले जाया गया। जहां उनकी पत्नी पहले से ही कार में बैठी थी। सीक्रेट सर्विस ने घटना पर तुरंत कोई टिप्पणी नहीं की है।

नहीं मरा है डान दाऊद इब्राहिम, किसी ने नहीं दिया डान को जहर! पाकिस्तानी मीडिया ने सभी खबरों को बताया फर्जी

अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम, जिसे 1993 के मुंबई विस्फोटों में उसकी भूमिका के लिए भारत खोज रहा था वह पाकिस्तान में छुपा बैठा था। सालों से पाकिस्तान की सरकार ने दाऊद को पनह दे रही थी लेकिन अब किसी ने दाऊद को खलास करने की प्लानिंग रच दी। नई दिल्लीरू अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम, जिसे 1993 के मुंबई विस्फोटों में उसकी भूमिका के लिए भारत खोज रहा था वह पाकिस्तान में छुपा बैठा था। सालों से पाकिस्तान की सरकार ने दाऊद को पनह दे रही थी लेकिन अब किसी ने दाऊद को खलास करने की प्लानिंग रच दी। कथित तौर पर पाकिस्तान में जहर दे दिया गया और उसे कराची के एक अस्पताल में ले जाया गया। हालाँकि, इस खबर की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है और कथित जहर के पीछे के स्रोत और उद्देश्य स्पष्ट नहीं हैं। पाकिस्तान की कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दाऊद को उसके किसी करीबी ने जहर दे दिया था और वह अस्वस्थ हो गया था। इसके बाद उन्हें कराची के एक अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है। रिपोर्ट्स में यह भी दावा किया गया है कि दाऊद की हालत गंभीर है और उसे कड़ी सुरक्षा में रखा गया है। हालाँकि, पाकिस्तान के अन्य मीडिया आउटलेट्स ने इन रिपोर्टों को आधारहीन और मनगढ़ंत बताते हुए खारिज कर दिया है और कहा है कि दाऊद ठीक है और कराची में अपने सुरक्षित घर में रह रहा है। उन्होंने भारत पर दाऊद के सहयोगियों और समर्थकों के बीच दहशत और भ्रम पैदा करने के लिए उसके स्वास्थ्य के बारे में झूठी अफवाहें फैलाने का भी आरोप लगाया। पाकिस्तान के कराची में कुख्यात अंडरवर्ल्ड शख्स दाऊद इब्राहिम के अस्पताल में भर्ती होने की खबरें सामने आ रही हैं, जिससे उसकी बिगड़ती सेहत के पीछे जहर देने की अटकलें लगाई जा रही हैं। भारतीय अधिकारियों द्वारा लंबे समय से वांछित 65 वर्षीय भगोड़ा वैश्विक स्तर पर कानून प्रवर्तन एजेंसियों से बचने के लिए कराची में रह रहा है। पाकिस्तान ने खारिज की दाऊद इब्राहिम को जहर देने की खबरें पाकिस्तान के जियो टीवी न्यूज ने भी दाऊद इब्राहिम के कराची अस्पताल में भर्ती होने के बाद उसके स्वास्थ्य को लेकर चल रही अफवाहों को स्वीकार करते हुए सोशल मीडिया पर चल रही चर्चाओं पर रिपोर्ट दी। रिपोर्टों से पता चलता है कि उनके अस्पताल में भर्ती होने का कारण जहर है, हालांकि कोई ठोस सबूत या पुष्टि नहीं दी गई है। 1993 के मुंबई सीरियल ब्लास्ट का मास्टरमाइंड दाऊद इब्राहिम भगोड़ा है और कई सालों से पाकिस्तान में रह रहा है। विनाशकारी बम विस्फोटों में 250 से अधिक लोग हताहत हुए और हजारों घायल हो गए। बढ़ती चिंताओं और उड़ती अफवाहों के बीच अधिकारी उनकी स्वास्थ्य स्थिति पर बारीकी से नजर रख रहे हैं। उन पर भारत में आतंकवाद, संगठित अपराध और मादक पदार्थों की तस्करी सहित कई आरोप हैं। 2003 में वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित दाऊद इब्राहिम का आपराधिक गतिविधियों का एक लंबा इतिहास रहा है। दिसंबर 1955 में महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में जन्मे दाऊद इब्राहिम का परिवार बाद में मुंबई के डोंगरी इलाके में चला गया। 1970 के दशक में, वह मुंबई के अंडरवर्ल्ड में प्रमुखता से उभरे, शुरुआत में वह हाजी मस्तान गिरोह से जुड़े थे। समय के साथ, उसने प्रभाव प्राप्त कर लिया, जिससे उसके गिरोह की पहचान कुख्यात ष्डी–कंपनीष् के रूप में होने लगी। दाऊद इब्राहिम के स्वास्थ्य के बारे में चल रही अटकलों के बावजूद, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इन दावों में आधिकारिक सत्यापन का अभाव है। अंडरवर्ल्ड के इस शख्स का आपराधिक गतिविधियों से जुड़ाव और उसकी भगोड़ा स्थिति ने उसे दशकों तक सुर्खियों में बनाए रखा है, जिससे वर्तमान स्थिति में जटिलता की परत जुड़ गई है।

पाक में न्यायाधीशों, उनके जीवनसाथियों को हवाई अड्डों पर जामा–तलाशी से छूट मिलेगी

'द न्यूज' ने 16 दिसंबर को अपनी खबर में बताया था कि पाकिस्तान विकसित देशों के समान स्व–आव्रजन सेवाओं के लिए कराची, लाहौर और इस्लामाबाद हवाई अड्डों पर 'ईगेट्स' स्थापित करने के लिए संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) कंपनी के साथ बातचीत कर रहा है। पाकिस्तान के विमानन मंत्रालय ने उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के बाद सेवारत न्यायाधीशों और उनके जीवन साथियों को देश के सभी हवाई अड्डों पर जामा–तलाशी से छूट दे दी। मीडिया में आई एक खबर में यह जानकारी दी गई है। 'जियो न्यूज' की खबर के अनुसार, विमानन सचिव के निर्देश पर हवाई अड्डा सुरक्षा बल (एएसएफ) के महानिदेशक ने एक आदेश जारी किया है। विमानन मंत्रालय द्वारा 12 अक्टूबर को जारी एक अधिसूचना में कहा गया है कि सभी हवाई अड्डों पर पाकिस्तान के सेवारत न्यायाधीशों और उच्चतम न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश के जीवन साथियों को जामा–तलाशी से छूट दी जाएगी। 'द न्यूज' ने 16 दिसंबर को अपनी खबर में बताया था कि पाकिस्तान विकसित देशों के समान स्व–आव्रजन सेवाओं के लिए कराची, लाहौर और इस्लामाबाद हवाई अड्डों पर 'ईगेट्स' स्थापित करने के लिए संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) कंपनी के साथ बातचीत कर रहा है। आव्रजन सूत्रों के मुताबिक ई–पासपोर्ट धारक यात्री ही 'ई–गेट्स' सुविधा का इस्तेमाल कर सकेंगे।

गुआनाजुआतो में क्रिसमस पार्टी के दौरान गोलीबारी, 16 लोगों की मौत

मेक्सिको के उत्तर–मध्य राज्य गुआनाजुआतो के साल्वाटियेरा शहर में रविवार तड़के एक क्रिसमस पार्टी के दौरान बंधूकधारियों के हमले में 16 लोगों की मौत हो गई। अभियोजकों ने यह जानकारी दी। मेक्सिको के उत्तर–मध्य राज्य गुआनाजुआतो के साल्वाटियेरा शहर में रविवार तड़के एक क्रिसमस पार्टी के दौरान बंधूकधारियों के हमले में 16 लोगों की मौत हो गई। अभियोजकों ने यह जानकारी दी। राज्य अभियोजकों ने यह भी बताया कि सलामांका शहर में गोलीबारी में चार अन्य लोगों की भी मौत हुई। हालांकि, उन्होंने हमले की वजह के बारे में कोई जानकारी नहीं दी। स्थानीय मीडिया के मुताबिक, पीड़ित पोसाडा' नामक क्रिसमस पार्टी के बाद एक कार्यक्रम हॉल से बाहर निकल रहे थे, तभी बंदूकधारियों ने उन पर गोलियां चला दी।शहर में 'जलिस्को कार्टेल' और 'सिनालोआ कार्टेल' द्वारा समर्थित स्थानीय गिरोहों के बीच वर्चस्व की लड़ाई को लेकर खूनी संघर्ष लंबे समय से चल रहा है।

श्रीलंका को आर्थिक मंदी से मुक्ति दिलाने के लिए आईएमएफ कार्यक्रम का कोई विकल्प नही राष्ट्रपति विक्रमसिंघे

सुधारों के विरोध में विपक्षी दलों की कड़ी आलोचना का जवाब देते हुए राष्ट्रपति विक्रमसिंघे ने कहा कि उन्होंने आईएमएफ कार्यक्रम को चुना क्योंकि यह एकमात्र उपलब्ध विकल्प था। विक्रमसिंघे वित्त मंत्री भी हैं। श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे ने रविवार को कहा कि देश को आर्थिक संकट से बाहर निकालने के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) कार्यक्रम के अलावा कोई विकल्प नहीं है। पिछले हफ्ते आईएमएफ ने श्रीलंका को 33.7 करोड़ अमेरिकी डॉलर की दूसरी किश्त जारी करने की मंजूरी दे दी। सुधारों के विरोध में विपक्षी दलों की कड़ी आलोचना का जवाब देते हुए राष्ट्रपति विक्रमसिंघे ने कहा कि उन्होंने आईएमएफ कार्यक्रम को चुना क्योंकि यह एकमात्र उपलब्ध विकल्प था। विक्रमसिंघे वित्त मंत्री भी हैं। उन्होंने कहा, ''जो सिर्फ लोगों को खुश करने के लिए बयान देते हैं वे आवश्यक कठोर निर्णय लेने के लिए तैयार नहीं होते हैं। मैंने आईएमएफ कार्यक्रम को चुना क्योंकि यह एकमात्र उपलब्ध विकल्प था।'' उन्होंने कहा और सभी राजनीतिक दलों से 2.9 अरब अमेरीकी डॉलर के बेलआउट की निंदा करते हुए जिम्मेदारी से कार्य करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि अतीत की आर्थिक गलतियों को सुधारने के लिए कड़े फैसले लेने होंगे। विक्रमसिंघे ने कहा, ''कुछ लोग कहते हैं कि वे आईएमएफ कार्यक्रम पर फिर से बातचीत करेंगे। यह झूठ है।

सीओपी 28 करार कोयला प्रचलन और समय से बाहर, आस्ट्रेलिया इस बात को पहले ही जानता है

इन परियोजनाओं का समर्थन करके, संघीय सरकार इस विचार का समर्थन कर रही है कि सीओपी28 वक्तव्य की आकांक्षाएं केवल ख्याली पुलाव रह जाएंगी, और ऑस्ट्रेलिया दुनिया के विनाशकारीताप से लाभ उठा सकता है। ऑस्ट्रेलिया को अब यह तय करना होगा कि वह किस प्रकार की ऊर्जा महाशक्ति बनना चाहता हैरू एक स्थायी भविष्य का घर, या कोयला और गैस निष्कर्षण का अंतिम आश्रय। इस सप्ताह दुबई में सीओपी 28 जलवायु शिखर सम्मेलन में, राष्ट्र कोयला, तेल और गैस से दूरी बनाने पर सहमत हुए। 30 वर्षों की सीओपी बैठकों के बाद, दुनिया अंततः जलवायु परिवर्तन के इन कार्बन–आधारित चालकों से खुद को दूर करने के लिए प्रतिबद्ध हो गई है। जैसा कि जलवायु परिवर्तन मंत्री क्रिस बोवेन ने मीडिया को बताया, यह करार ''दुनिया के बाजारों, निवेशकों और व्यवसायों को एक संकेत भेजता है कि यह दुनिया भर के देशों के लिए यात्रा की नयी दिशा है। सीओपी का यह बयान जलवायु संकट को जन्म देने वाले सभी कार्बन–आधारित ईंधनों का नाम लेने और उन्हें दोषी ठहराने वाला पहला है – न केवल कोयला, जिसका उल्लेख पिछले सीओपी समझौतों में किया गया है, बल्कि तेल और गैस भी है। यह सौदा कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौते के बजाय एक सामूहिक वैश्विक आकांक्षा है।

अमेरिका और कनाडा के बीच जमीन आसमान का फर्क, खालिस्तान समर्थकों की हत्या के आरोपों पर आया विदेश मंत्री एस जयशंकर का बयान

इस संबंध में विदेश मंत्री ने कहा कि अगर किसी देश के सामने किसी तरह की समस्या है तो वह उसे हमारे सामने रख सकते हैं। भारत इनपुट के आधार पर हमेशा ऐसे मामलों को देखने के लिए तैयार रहता है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने भी मुद्दा उठाया और उसके बारे में इनपुट भी दिए। कनाडा और अमेरिका में खालिस्तानी आतंकियों की हत्या की साजिश रचने के आरोप को लेकर विदेश मंत्री एस जयशंकर का बड़ा बयान सामने आया है। भारतीय विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा है कि दोनों ही बातों में जमीन आसमान का अंतर है। उन्होंने कहा कि कनाडा ने जिस तरह से भारत पर बुनियाद आरोप लगाए हैं वह बिल्कुल निराधार और गलत है। वहीं अमेरिका द्वारा उठाए गए मुद्दों पर उन्होंने कहा कि अमेरिका ने कुछ बातों की ओर संकेत किया था जिसको मजबूती के साथ पेश करने के लिए उन्होंने कुछ सबूत भी दिए थे। विदेश मंत्री एस जयशंकर का कहना है कि भारत किसी भी देश द्वारा उठाए गए मुद्दों पर बात करने, उनसे निपटने और चर्चा करने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों द्वारा रखे गए मुद्दे एक समान नहीं है। इस संबंध में विदेश मंत्री ने कहा कि अगर किसी देश के सामने किसी तरह की समस्या है तो वह उसे हमारे सामने रख सकते हैं। भारत इनपुट के आधार पर हमेशा ऐसे मामलों को देखने के लिए तैयार रहता है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने भी मुद्दा उठाया और उसके बारे में इनपुट भी दिए। वही कनाडा को लेकर उन्होंने कहा कि कनाडा को भी हमने बता दिया कि सिर्फ आरोप लगाने से बात नहीं होती। किसी मुद्दे को लेकर ठोस सबूत भी देना चाहिए तभी उस पर विचार किया जा सकता है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि अमेरिका ने भारत से कहा कि खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह की हत्या की साजिश को लेकर जांच में सहयोग होना चाहिए। इसके बाद अमेरिकी डिपार्मेंट आफ जस्टिस ने निखिल गुप्ता नमक व्यक्ति के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया था। माना जा रहा था कि निखिल गुप्ता को सुपारी किलर हायर करने के बारे में जानकारी दी जा रही थी। यह जानकारी निखिल गुप्ता को कोई भारतीय अधिकारी दे रहा था। वहीं विदेश मंत्रालय इस मामले को पता लगाने में जुटा हुआ है ।

सिराज का समर्थन करने के लिए अधिक गेंदबाजी विकल्प हासिल करना प्राथमिकता आरसीबी क्रिकेट निदेशक

बोबाट ने कहा, '' हमारे पास मुख्य खिलाड़ियों का एक मजबूत समूह है। टीम का शीर्ष क्रम काफी मजबूत है।खिलाड़ियों को रिलीज करने का हमारा फैसला का एक हिस्सा मध्य क्रम को मजबूत करने की कोशिश करना था। कैमरून ग्रीन को टीम में लाना एक शानदार था कदम है।'' आरसीबी के पास 40.75 करोड़ रुपये का पर्स है और खिलाड़ियों को साइन करने के लिए कुल सात स्लॉट उपलब्ध हैं। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के क्रिकेट निदेशक मो बोबट ने सोमवार को कहा कि आगामी आईपीएल नीलामी में तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज का समर्थन करने के लिए अधिक गेंदबाजी विकल्प हासिल करना टीम की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। आरसीबी ने स्टार बल्लेबाज विराट कोहली, कप्तान फाफ डु प्लेसिस, ग्लेन मैक्सवेल और सिराज समेत 18 खिलाड़ियों को रिटेन (टीम में बरकरार)किया है और 11 खिलाड़ियों को रिलीज (टीम से बाहर) कर दिया है। जिन खिलाड़ियों को रिलीज किया गया है उनमें मध्यम तेज गेंदबाज हर्षल पटेल, श्रीलंका के लेग स्पिनर वानिंदु हसरंगा और ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड की तिकड़ी शामिल हैं। इससे टीम की गेंदबाजी कमजोर हुई है। बोबाट ने यहां जारी मीडिया विज्ञप्ति में कहा, '' हम जो करते हैं मोहम्मद सिराज उसका मुख्य हिस्सा है। हमारे लिए सिराज का समर्थन करने के लिए गेंदबाजी विदेशी गेंदबाज सहित कुछ और गेंदबाजी विकल्पों को टीम में शामिल करना एक वास्तविक प्राथमिकता होगी।'' उन्होंने कहा, '' हमारे पास स्थानीय स्पिनरों का एक समूह है, जो मुझे लगता है कि काफी मजबूत है। उनमें से कुछ को पिछले एक या दो वर्षों में सीमित अवसर मिले हैं और वे आगे चलकर अधिक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।'' शीर्ष क्रम में दिग्गज बल्लेबाजों से सजी आरसीबी ने अपने मध्य क्रम को मजबूत करने के लिए ऑस्ट्रेलिया के ऑलराउंडर कैमरून ग्रीन को मुंबई इंडियंस से 17.5 करोड़ रुपये में खरीदा। बोबाट ने कहा, '' हमारे पास मुख्य खिलाड़ियों का एक मजबूत समूह है। टीम का शीर्ष क्रम काफी मजबूत है।खिलाड़ियों को रिलीज करने का हमारा फैसला का एक हिस्सा मध्य क्रम को मजबूत करने की कोशिश करना था। कैमरून ग्रीन को टीम में लाना एक शानदार था कदम है।'' आरसीबी के पास 40.75 करोड़ रुपये का पर्स है और खिलाड़ियों को साइन करने के लिए कुल सात स्लॉट उपलब्ध हैं।

आईपीएल 2024 आरसीबी के डायरेक्टर ने किया अपने प्लान का खुलासा, बताया क्या रहेगी रणनीति

आरसीबी के डायरेक्टर मो बोबाट ने आरसीबी इनोवेशन लैब लीडर मीट इंडिया के दौरान कहा कि, हमारे पास खिलाड़ियों को बनाए रखने का एक मजबूत केंद्र है और हमारे पास मजबूत टॉप क्रम भी है। हमारा खिलाड़ियों को रिलीज करने का फैसला मध्यक्रम को मजबूत बनाने का एक हिस्सा था। आईपीएल 2024 नीलामी को अब महज कुछ ही घंटे शेष रह गए हैं। इसके लिए सभी फ्रेंचाइजियों ने अपनी तैयारियां पूरी कर ली हैं। इस बीच आरसीबी के डायरेक्टर ने ऑक्शन के लिए अपने प्लान का खुलासा किया है। दरअसल, आरसीबी के डायरेक्टर मो बोबाट ने आरसीबी इनोवेशन लैब लीडर मीट इंडिया के दौरान कहा कि, हमारे पास खिलाड़ियों को बनाए रखने का एक मजबूत केंद्र है और हमारे पास मजबूत टॉप क्रम भी है। हमारा खिलाड़ियों को रिलीज करने का फैसला मध्यक्रम को मजबूत बनाने का एक हिस्सा था। आरसीबी ने हाल ही में ऑलराउंडर कैमरून ग्रीन को 17.5 करोड़ रुपयों की ट्रेड में अपने स्क्वॉड में शामिल किया था। आरसीबी के डायरेक्टर ने इस ट्रेड पर बताते हुए कहा कि कैमरून ग्रीन को आरसीबी से जोड़ना एक शानदार कदम था। वहीं आईपीएल 2024 ऑक्शन में आरसीबी अपने पेस अटैक को मजबूत करने पर जोर देगी। इसका खुलासा भी खुद मो बोबाट ने ही किया है। उन्होंने कहा कि हम जो करते हैं, मोहम्मद सिराज उसका मुख्य हिस्सा हैं। विदेशी गेदंबाजों सहित कुछ और गेंदबाजी विकल्पों समेत सिराज का समर्थन करना हमारी प्राथमिकता रहेगी। बोबाट ने कहा कि स्वभाविक रूप से क्रिकेट आकर्षित होता है। तेज गेंदबाजों के नियंत्रण और पार्श्व गति जैसी चीजों की ओर ध्यान देंगे लेकिन हमें जो करना चाहिए वह उन खिलाड़ियों की पहचान करना है जिनके पास गति और संतुलन हो। वहीं बता दें कि, आरसीबी ने इन खिलाड़ियों को ट्रेड किया है। जिनमें सनराइजर्स हैदराबाद से मयंक डागर, मुंबई इंडियंस से कैमरून ग्रीन जैसे खिलाड़ी हैं। फिलहाल, नीलामी के लिए आरसीबी के पर्स में 23.25 करोड़ रुपये शेष है। जिसमें उसे अपनी 6 खाली स्लॉट को भरना है। इनमें 3 विदेशी खिलाड़ी भी शामिल हैं।

भारत को मिली बढ़त, पाक की हार के बाद रोहित ब्रिगेड को मिली बादशाहत

वहीं ऑस्ट्रेलिया की टीम में पांचवें स्थान पर है। ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के खिलाफ पर टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान के समक्ष 450 रनों का बड़ा स्कोर खड़ा कर दिया था। पहली बारी में कंगारू ने खेलते हुए 487 रनों का विशाल लक्ष्य पाकिस्तान को दिया था। ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच पहला टेस्ट मैच कंगारूओ ने जीत लिया है। रविवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पाकिस्तान को 360 रन से हार का सामना करना पड़ा है। पहले टेस्ट मैच में हारने के बाद तीन मैचों की सीरीज में ऑस्ट्रेलिया 1–0 से आगे हो गई है। ऑस्ट्रेलिया के पर्थ के मैदान पर यह पहला टेस्ट मैच खेला गया था जिसमें शान मसूद की अगुवाई में पाकिस्तान की टीम को करारी हार मिली है। पाकिस्तान की टीम को सिर्फ मैच ही नहीं गंवाना पड़ा बल्कि अपना स्थान भी गंवाना पड़ा है। पाकिस्तान की टीम को मिली 360 रनों की करारी हार के बाद भारतीय टीम को जबरदस्त फायदा हुआ है। वर्ल्ड टेस्ट चौंपियनशिप 2023–25 की प्वाइंट्स टेबल में भारतीय टीम को पाकिस्तान की हार का लाभ मिला है। चौंपियनशिप के लिए पॉइंट्स टेबल में भारतीय टीम अब शीर्ष पर आ गई है और पाकिस्तान की टीम दूसरे पायदान पर पहुंच गई है। बता दें कि वर्ल्ड टेस्ट चौंपियनशिप के मौजूदा सत्र के लिए भारतीय टीम ने सिर्फ एक टेस्ट सीरीज खेली है जो वेस्टइंडीज के खिलाफ थी। दो मैचों की इस टेस्ट सीरीज में एक मुकाबले भारत ने जीता जबकि दूसरा मैच ड्रॉ रहा था। इस कारण भारत की जीत का प्रतिशत 66.67 रहा है। वहीं अब भारतीय टीम को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है जिसकी शुरुआत 26 दिसंबर से होने जा रही है। वहीं पाकिस्तान की बात करें तो पाकिस्तान की टीम अपनी दूसरी टेस्ट सीरीज खेल रही है। इससे पहले पाकिस्तान श्रीलंका के साथ दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेल चुकी है जिसमें उसे 2–0 से जीत मिली थी। पाकिस्तान की जीत का प्रतिशत भी 66.67 ही है। मगर भारतीय टीम कोई मुकाबला नहीं हारी है इसलिए वो पाकिस्तान से आगे निकलकर शीर्ष पर पहुंच गई है। वही टॉप थ्री पोजीशन की बात करें तो न्यूजीलैंड की टीम अभी तीसरे स्थान पर बनी हुई है। वहीं ऑस्ट्रेलिया की टीम में पांचवें स्थान पर है। ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के खिलाफ पर टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान के समक्ष 450 रनों का बड़ा स्कोर खड़ा कर दिया था। पहली बारी में कंगारू ने खेलते हुए 487 रनों का विशाल लक्ष्य पाकिस्तान को दिया था। मेजबान टीम ने रविवार को लंच किया आधे घंटे के बाद 233 रनों पर अपनी दूसरी पारी को घोषित कर दिया। हालांकि पाकिस्तान की टीम लंच के बाद कोई खास कमाल नहीं कर सकी और सिर्फ 89 रनों के स्कोर पर ऑल आउट हो गई। बता दें कि ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट मैच में पाकिस्तान की टीम की यह लगातार 15वीं हार है।

मंगलवार को आईपीएल 2024 की नीलामी, जानें टेलीकास्ट और खिलाड़ियों से जुड़ी पूरी जानकारी

ये पहली बार होगा जब आईपीएल में खिलाड़ियों की नीलामी देश से बाहर यानी विदेश में होगी। दुबई में इस एरिना हाई प्रोफाइल इवेंट का आयोजन होगा। बीसीसीआई ने उन 333 खिलाड़ियों के नाम शेयर किए हैं जो आईपीएल की मिनी ऑक्शन में शामिल होंगे। इंडियन प्रीमियर लीग के 2024 सीजन के लिए खिलाड़ियों की बोली कल यानी मंगलवार 19 दिसंबर को होगी। ये पहली बार होगा जब आईपीएल में खिलाड़ियों की नीलामी देश से बाहर यानी विदेश में होगी। दुबई में इस एरिना हाई प्रोफाइल इवेंट का आयोजन होगा। बीसीसीआई ने उन 333 खिलाड़ियों के नाम शेयर किए हैं जो आईपीएल की मिनी ऑक्शन में शामिल होंगे। 10 टीमों के बीच 77 स्लॉट खाली हैं। इसका मतलब ये है कि 333 में से 77 खिलाड़ी नीलाम होंगे जिनमें से 30 विदेशी रहेंगे। आईपीएल 2024 सीजन के लिए नीलामी भारतीय समयानुसार दोपहर 1 बजे से शुरू होगी। आईपीएल 2024 नीलामी की लाइव स्ट्रीमिंग जियो सिनेमा पर उपलब्ध होगी। जबकि स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क अपने कई चौनलों पर इस कार्यक्रम का प्रसारण करेगा। वहीं इस बार नीलामी में कुल कितने खिलाड़ी उपलब्ध रहेंगे? कुल 333 खिलाड़ियों की नीलामी होगी जिनमें 214 भारतीय और 119 विदेश खिलाड़ी शामिल हैं। एक टीम ज्यादा से ज्यादा कितने खिलाड़ी रख सकती है? हर आईपीएल टीम ज्यादा से ज्यादा 25 सदस्य और न्यूनतम 18 सदस्य हो सकते हैं। हर टीम में अधिकतम आठ विदेशी खिलाड़ी हो सकते हैं। रिटेन किए गए खिलाड़ी की संख्या कितनी है और आईपीएल 2024 की नीलामी में टीमों के लिए शेष राशि कितनी है? आईपीएल की 10 टीमों ने कुल मिलाकर 173 खिलाड़ियों को रिटेन किया है, जिनमें 50 विदेशी क्रिकेटर हैं। सीएसके, लखनऊ सुपर जायंट्स और सनराइजर्स हैदराबाद ने सबसे ज्यादा 19 खिलाड़ियों को रिटेन किया है। आईपीएल 2024 के लिए ऑक्शन कौन होगा? आईपीएल 2024 के लिए ऑक्शन मल्लिका सागर होंगी। ये आईपीएल इतिहास में पहली बार होगा जब कोई महिला ऑक्शनर द्वारा नीलामी आयोजित की जाएगी।

भारत ने आठ विकेट से जीता पहला ओडीआई 17 ओवर में श्रेयस–सुदर्शन के तूफान में बिखरी साउथ अफ्रीका

पहले गेंदबाजी करने उतरी भारतीय टीम ने शानदार गेंदबाजी करते हुए दक्षिण अफ्रीका को 116 रनों के छोटे स्कोर पर ही पवेलियन लौटा दिया था। वहीं भारतीय टीम को जीत के लिए 117 रन चाहिए थे, जो टीम ने 16.4 ओवर में ही हासिल कर लिया। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच पहले वनडे मैच में भारत ने शानदार जीत दर्ज की है। पहले वनडे मुकाबले में आठ विकेट से भारत ने दक्षिण अफ्रीका को हरा दिया है। भारतीय टीम ने तीन मैचों की सीरीज के पहले मुकाबले में जीत हासिल र 1–0 से सीरीज में बढ़त बनाई है। पहले गेंदबाजी करने उतरी भारतीय टीम ने शानदार गेंदबाजी करते हुए दक्षिण अफ्रीका को 116 रनों के छोटे स्कोर पर ही पवेलियन लौटा दिया था। वहीं भारतीय टीम को जीत के लिए 117 रन चाहिए थे, जो टीम ने 16.4 ओवर में ही हासिल कर लिया। अब दोनों टीमों के बीच दूसरा एकदिवसीय मुकाबले 19 दिसंबर को पोर्ट एलिजाबेथ में खेला जाएगा। पहले वनडे मुकाबले में भारतीय टीम को टारगेट का पीछा करने में किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। भारतीय टीम का पहला विकेट ऋतुराज गायकवाड़ के तौर पर आउट हुआ जो 23 रन बनाकर पवेलियन लौटे। इसके बाद साइन सुदर्शन और श्रेयस अय्यर ने 88 रनों की साझेदारी की और मैच में भारत को शानदार जीत दिला दी। इस मैच में शानदार प्रदर्शन साइ सुदर्शन ने किया। चाइनीस मैच में 43 गेंद में नाबार्ड 55 रनों की पारी खेली। बता दे की साइन सुदर्शन का यह डेब्यू मुकाबला था। वही साइन का इस जीत में साथ दिया श्रेयस ने जिन्होंने 45 गेंद में 52 रनों की बेहतरीन पारी खेली। ऐसा रहा था मैच भारतीय तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह और आवेश खान की शानदार गेंदबाजी के सामने दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाजों ने घुटने टेक दिये जिससे तीन मैचों की श्रृंखला के पहले वनडे में टीम 27.3 ओवर के अंदर महज 116 रन पर आउट हो गयी। अर्शदीप ने अपने 10 ओवर के कोटे में 37 रन देकर पांच विकेट लिये जबकि आवेश ने आठ ओवर में 27 रन पर चार विकेट चटकाये। एक सफलता कुलदीप यादव (तीन रन पर एक विकेट) को मिली। दक्षिण अफ्रीका के लिए एंडिले फेहलुकवायो ने 33 और सलामी बल्लेबाज टोनी डी जोरजी ने 28 रन का योगदान दिया। मोहम्मद शमी और जसप्रीत बुमराह की गैरमौजूदगी में युवा भारतीय तेज गेंदबाजों के सामने दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज असहज नजर आये। अर्शदीप, आवेश और मुकेश कुमार (सात ओवर में बिना किसी सफलता के 46 रन) की तिकड़ी ने इस मैच से पहले कुल सात विकेट लिये थे लेकिन इस मैच में ही उन्होंने नौ विकेट साझा किये। मुकेश को हालांकि किस्मत का साथ नहीं मिला।

टेस्ट में विकेटकीपिंग के लिए तैयार हैं केएल राहुल, रिंकू के वनडे पदार्पण का संकेत दिया

उन्होंने कहा, ''हम वनडे में कैसा खेलना चाहते हैं, इसमें ज्यादा कुछ नहीं बदलेगा। लेकिन एक नये खिलाड़ी से आते ही यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह वही भूमिका निभाये जो रोहित शर्मा और विराट कोहली ने विश्व कप में निभायी थी। ध्यान अब टी20 विश्व कप है जो आने ही वाला है इसलिये ध्यान इसी पर लगा होगा। '' राहुल ने कहा, ''टेस्ट क्रिकेट हमेशा हमारे देश के लिए महत्वपूर्ण प्रारूप रहेगा। पर अभी भारतीय क्रिकेट टीम वनडे श्रृंखला पूरी करेगी जो बहुत ही मजबूत दक्षिण अफ्रीका टीम के खिलाफ है और हमारा ध्यान अभी इसी पर लगा है। केएल राहुल वनडे में विकेटकीपिंग जारी रखेंगे और उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अगर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 'बॉक्सिंग डे' टेस्ट में उन्हें स्टंप के पीछे की जिम्मेदारी उठाने के लिए कहा जाता है तो उन्हें इससे गुरेज नहीं होगा। नियमित कप्तान रोहित शर्मा ने दक्षिण अफ्रीका दौरे के दौरान सफेद गेंद की श्रृंखला के लिए ब्रेक लिया है जिसके बाद राहुल वनडे टीम का नेतृत्व कर रहे हैं। इस स्टाइलिश दायें हाथ के बल्लेबाज ने संकेत दिए कि टी20 श्रृंखला में शानदार जज्बा और तकनीक दिखाने वाले रिंकू सिंह को वनडे पदार्पण का मौका दिया जा सकता है। यह पूछने पर कि क्या वह रविवार से शुरू हो रही वनडे श्रृंखला में विकेटकीपिंग करेंगे तो राहुल ने सकारात्मक जवाब देते हुए कहा, ''हां, मैं विकेटकीपिंग करूंगा और मध्यक्रम में बल्लेबाजी करूंगा। और इसके बाद टेस्ट मैचों में भी विकेटकीपिंग करने में खुशी होगी। '' राहुल ने मैच पूर्व संध्या पर आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में कहा, ''मैं हमेशा नयी भूमिका निभाने के लिए और टीम जो भी भूमिका में मुझे प्रदर्शन करते हुए देखना चाहती हूं, उसके लिए तैयार रहा हूं। अगर प्रबंधन मुझे इसी भूमिका में देखना चाहता है तो मुझे इसमें खुशी होगी। '' उन्होंने साथ ही यह भी संकेत दिया

डायबिटीज के मरीज डार्क चाकलेट खा सकते हैं ?

नया साल आने में कुछ दिन ही बाकी है. उससे पहले क्रिसमस पार्टी में चॉकलेट खाना तो लाजमी है. ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या डायबिटीज के मरीज डार्क चॉकलेट खा सकते हैं? दूध से बने चॉकलेट से परहेज करना चाहिए? आपकी जानकारी के लिए बता दें कि अधिकतर चॉकलेट दूध से बनाएं जाते हैं साथ ही उसमें भरपूर मात्रा में चीनी होती है. चीनी इसलिए मिलाई जाती है ताकी उसमें कोको की कड़वाहट छीप जाए. जिसके कारण इसमें भरपूर मात्रा में फैट और कैलोरी होते हैं. इसलिए चॉकलेट में चीनी और कौलोरी दोनों बढ़ जाती है. जिसे खाने के बाद लाजमी है कि वजन बढ़ सकता है. साथ ही साथ कोलेस्ट्रॉल भी बढ़ जाती है.

डायबिटीज के मरीज को डार्क चॉकलेट खाना चाहिए?

कई लोग तर्क देते हैं कि डार्क चॉकलेट मधुमेह वाले लोगों के लिए सेफ होती है क्योंकि उनमें चीनी की मात्रा कम होती है. क्योंकि उनमें 70 प्रतिशत कोको होता है. लेकिन फिर भी इसमें चीनी मिलाई जाती है. इसलिए सावधान रहें. इसके अलावा इनमें पॉलीफेनोल्स होते हैं, जो एंटीऑक्सिडेंट के रूप में काम करते हैं और शोध में दिखाया गया है कि यह ब्लड में शुगर लेवल को कंट्रोल में रखता है. शरीर को अपने इंसुलिन का अधिक कुशलता से उपयोग करने में मदद करता है. लेकिन वे आपके रक्त शर्करा के स्तर को कम करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं और मधुमेह से पीडिघ्त लोगों के लिए मिठाई के विकल्प के रूप में इसकी सिफारिश नहीं की जा सकती है.

इसके अलावा प्रसंस्कृत डार्क चॉकलेट इन स्वास्थ्य लाभों को पूरी तरह खत्म कर देती है इसलिए बिना रूके डार्क चॉकलेट खा सकते हैं. अगर डार्क चॉकलेट खाना ही है तो लीमिट खाना चाहिए. एचबीए1सी (तीन महीने के लिए औसत रक्त शर्करा गिनती) का स्तर सामान्य या 5.7 प्रतिशत से कम और सामान्य सीमा के भीतर है तो थोड़ी मात्रा में चॉकलेट खाने से आपके रक्त शर्करा के स्तर पर कोई असर नहीं पड़ेगा. यदि आपका स्तर ऊंचा है तो दूर रहें.

चॉकलेट में भरपूर मात्रा में कैलोरी होती है. इसलिए चॉकलेट की कैलोरी की गणना करें और सुनिश्चित करें कि इसका भार दैनिक कैलोरी भत्ते से अधिक न हो. इसका मतलब है कि आपको उपचार के दिन अन्य कैलोरी स्रोतों को खत्म करना होगा. सुनिश्चित करें कि चॉकलेट का एक वर्ग एक संतुलित आहार से बेअसर हो जिसमें साबुत अनाज, फलियां, बीन्स, पत्तेदार सब्जियां और फल शामिल हों

सर्दियों में क्यों बढ़ जाता है कान का इन्फेक्शन ? डाक्टर से जानें कारण और बचाव का तरीका

भारत के कई राज्यों में ठंड तेजी से बढ़ रही है. इस मौसम में स्वास्थ्य समस्याएं बढने लगती हैं. जिनसे हर उम्र के लोग परेशान हो जाते हैं. इस मौसम में कान से जुड़े संक्रमण का खतरा भी बढ़ जाता है. कई लोगों के कान के अंदर और बाहर संक्रमण दिखता है. इस मौसम में बैक्टीरिया या वायरस से कान में सूजन भी हो सकती है. डॉक्टरों के अनुसार ठंड के मौसम में कान का संक्रमण होने के कारण कई मरीज इलाज के लिए आ रहे हैं.

सर्दियों से जुड़ी कई स्वास्थ्य समस्याओं के अलावा, हाल ही में सभी आयु समूहों में कान के संक्रमण के मामले बढे हैं. ठंड का मौसम बैक्टीरिया और वायरस को बढने और आगे की समस्याएं पैदा करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है. आमतौर पर बैक्टीरिया या वायरस सूजन से होता है, जो कानों को नुकसान पहुंचा सकता हैं. कान की सूजन का एक कारण ठंड में कमजोर प्रतिरक्षा को माना जाता है.

एक्सपर्ट्स के अनुसार यदि साइनसाइटिस का इलाज नहीं किया जाता है, तो ये कानों के लिए भी मुश्किलें पैदा कर सकता है, क्योंकि कान का संक्रमण नाक और गले के संक्रमण से जुड़ा होता है. सर्दियों के मौसम के दौरान, लोगों को कानों में अत्यधिक सूखापन और एलर्जिक राइनाइटिस के कारण कान में संक्रमण होता हैं. ठंड का मौसम भी कान में दर्द का कारण बनता है. ठंड के महीनों में रक्त संचार कम होने से कान में संक्रमण बढ़ सकता है.

कान का संक्रमण कान में दर्द, चक्कर आना, सिरदर्द, कोमलता, सूजन, असामान्य स्राव और अस्थायी सुनवाई हानि यह कान में संक्रमण होने के लक्षण हैं. खुली जगह में ठंडी हवा के संपर्क में आने पर कान का दर्द गंभीर हो सकता है और इसके लिए जल्द से जल्द इलाज करना जरूरी है. कान में संक्रमण हो तो तुरंत कान की बूंदों का उपयोग करें और उपचार करने वाले डॉक्टर द्वारा सुझाए गए उपचार के तरीके का पालन करें. डॉक्टर की सलाह लेकर एंटीबायोटिक्स, एंटीहिस्टामाइन और दर्द निवारक दवाई का सेवन करें.

जरूरी सलाह कान के दर्द को कम करने के लिए आइस पैक या गर्म सेक जैसे हीटिंग पैड या नम कपड़े का इस्तेमाल करें. कानों में पानी जमा होने न दे. टोपी, स्कार्फ पहनकर कानों को गर्म रखें हवा से बचाने के लिए

रणबीर कपूर की एनिमल ने तोड़े बाक्स आफिस रिकार्ड, दो हफ्ते में वर्ल्डवाइड कमाए 784.45 करोड़!

बॉलीवुड एक्टर रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल की हर तरफ चर्चा हो रही है। इस फिल्म को सिनेमाघरों में लगे हुए दो सप्ताह पूरे हो चुके हैं। 1 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है इस फिल्म का बॉक्स ऑफिस पर जलवा चल रहा है। रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल को भारत सहित तमाम देशों में काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है और जिसका नतीजा बॉक्स ऑफिस पर दिख रहा है। आइए जानते हैं कि इस फिल्म ने दो सप्ताह में बॉक्स ऑफिस पर कितना कलेक्शन कर लिया है।

रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल जब से अनाउंस हुई थी तब से इसको लेकर काफी बज था। फिल्म के रिलीज होने के बाद इसके बॉक्स ऑफिस कलेक्शन ने साबित कर दिया कि लोग इसका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल को भारत सहित दुनिया की तमाम काफी ज्यादा पसंद की जा रही है। रणबीर कपूर की फिल्म को सिनेमाघरों में दो सप्ताह हो हो गए हैं और इसके वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस के आंकड़े सामने आ गए हैं। टी–सीरीज ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल के वर्ल्डवाइड आंकड़े दिए हैं। इस फिल्म ने 14 दिन में 784.45 करोड़ रुपये का कलेक्शन कर लिया है। इस तरह से फिल्म 800 करोड़ रुपये की कमाई से दो कदम दूर है। संदीप वंगा रेड्डी के डायरेक्शन में बनी फिल्म एनिमल में रणबीर कपूर और रश्मिका मंदाना के अलावा अनिल कपूर, बॉबी देओल और तृप्ति डिमरी भी हैं। फिल्म एनिमल की कहानी एक गैंगस्टर फैमिली की है। जिसमें अनिल कपूर पिता हैं और रणबीर कपूर उनके बेटे के तौर पर नजर आ रहे हैं। फिल्म एनिमल में बॉबी देओल ने विलेन का रोल किया है। फिल्म एनिमल मे रणबीर कपूर और बॉबी देओल फाइट सीन को काफी ज्यादा पसंद किया गया। इस फिल्म को रिलीज हुए भले ही दो सप्ताह हो गए हैं

लेकिन इसको लेकर एक्साइटमेंट कम नहीं हुआ है।

इंडियन पुलिस फोर्स का टीजर जारी, पुलिस वर्दी में खूब जंचे सिद्धाथ संग शिल्पा

रोहित शेट्टी की अपकमिग सीरीज श्इंडियन पुलिस फोर्स्च का हर कोई बेसब्री से इंतजार कर रहा है. वहीं फैंस की एक्साइटमेंट को बढ़ाते हुए रोहित शेटटी ने फाइनली आज अपनी मोस्ट अवेटेड सीरीज श्इंडियन पुलिस फोर्स्च का एक्शन पैक्ड टीजर जारी कर दिया है.टीजर बेहद शानदार है.आज रोहित शेट्टी ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर सीरीज श्इंडियन पुलिस फोर्स्च का धांसू टीजर शेयर किया और लिखा, यह मेरे लिए घर वापसी है! कार, पुलिस, एक्शन, हाई वोल्टेज ड्रामा और डायलॉग बैक टू बेसिक!!!टीजर की शुरुआत एक बीप की साउंड से होती है. इसके बाद टीजर दिल्ली की कई सड़कों से होकर गुजरता है, हर फ्रेम बम पर लगी घड़ी की टिक–टिक के सस्पेंस को बढ़ाता जाका है और फिर एक विस्फोट होता है. इसके बाद इस पुलिस ड्रामा के ब्रेव हीरो सिद्धार्थ मल्होत्रा, विवेक ओबेरॉय और शिल्पा शेट्टी कुंद्रा की पुलिस की वर्दी में धांसू एंट्री होती है जो बम विस्फोटों के पीछे के मास्टरमाइंडों का पता लगाने की कोशिश में जुटे हैं. टीजर में देशभक्ति की भावना भी दिखती है तो वहीं इमोशन और भरपूर एक्शन की भी झलक मिलकी है. ओवरऑल सीरीज श्इंडियन पुलिस फोर्स्च का टीजर रौंगटे खड़े कर देने वाला है.रोहित शेट्टी

और सुशांत प्रकाश द्वारा निर्देशित, इंडियन पुलिस फोर्स सात–एपिसोड की एक्शन से भरपूर सीरीज है ये वेब शो देश भर के पुलिस अधिकारियों की निस्वार्थ सेवा, अनकंडीशनल कमिटमेंट और उग्र देशभक्ति के लिए एक हार्दिक श्रद्धांजलि है, जो हमें सुरक्षित रखने का कर्तव्य निभाते हुए अपना सब कुछ दांव पर लगा देते हैं इंडियन पुलिस फोर्स से रोहित शेट्टी डिजिटल डेब्यू भी कर रहे है इस सीरीज में सिद्धार्थ मल्होत्रा पुलिस वाले के किरदार में नजर आएंगे वहीं उनके साथ शिल्पा शेट्टी कुंद्रा, विवेक ओबेरॉय, श्वेता तिवारी, निकितिन धीर, ऋतुराज सिंह, मुकेश ऋषि, ललित परिमू भी अहम भूमिकाओं में है इस सीरीज का प्रीमियर एक्सक्लूसिवली 19 जनवरी 2024 को प्राइम वीडियो पर होने वाला है

शाहरुख खान की डंकी को सेंसर बोर्ड से मिली हरी झंडी, यूए सर्टिफिकेट के साथ होगी रिलीज

सुपरस्टार शाहरुख खान की मच अवेटेड फिल्म डंकी की रिलीज से फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. अगले कुछ ही दिनों में ये फिल्म थिएटर्स में दस्तक देगी. फिल्म को लेकर एडवांस बुकिंग भी शुरू हो चुकी है. इस बीच शाहरुख खान की फिल्म डंकी से जुड़ा नया अपडेट सामने आया है, जो ये है कि सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन (सीबीएफसी) से फिल्म पास हो चुकी है.

रिपोर्ट के मुताबिक, शाहरुख खान की डंकी को सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन से यूध्ए सर्टिफिकेट देकर पास किया गया है. इसके साथ ही फिल्म के रनटाइम का भी खुलासा हो चुका है. डंकी का रनटाइम 2 घंटे 41 मिनट होगा. मालूम हो कि डंकी के लिए एडवांस बुकिंग शुरू होने से पहले ही मेकर्स ने सीबीएफसी बोर्ड के पास सर्टिफिकेशन के लिए फिल्म भेज दी थी. दिलचस्प बात ये है कि शाहरुख खान की डंकी से साउथ सुपरस्टार प्रभास की सालार क्लैश होगी. दोनों ही फिल्में 21 दिसंबर, 2023 को एक साथ सिनेमाघरों में रिलीज हो रही हैं. बताया जा रहा था कि सालार के मेकर्स फिल्म की रिलीज डेट को पोस्टपोन कर सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ. अब देखना होगा कि बॉक्स ऑफिस पर कौन सी फिल्म बाजी मार पाने में कामयाब साबित होती है. शाहरुख खान की फिल्म डंकी का निर्देशन राजकुमार हिरानी ने किया है. दोनों की साथ में ये पहली फिल्म है. हालांकि, इससे पहले राजुकमार ने शाहरुख खान को अपनी कई फिल्में अप्रोच की थी, लेकिन बात नहीं बन पाई. शाहरुख खान की डंकी में विक्की कौशल और तापसी पन्नू भी अहम किरदार में नजर आएंगे. वहीं, बोमन ईरानी, विक्रम कोचर और अनिल ग्रोवर भी फिल्म का हिस्सा हैं. डंकी को राजकुमार हिरानी और गौरी खान ने मिलकर प्रोड्यूस किया है.

अदिवी शेष ने किया अपनी नई पैन इंडिया फिल्म का ऐलान, पहला पोस्टर जारी

दक्षिण भारतीय सिनेमा के लोकप्रिय अभिनेता अदिवी शेष ने अपनी नई पैन इंडिया फिल्म का ऐलान कर दिया है।इसमें उनकी जोड़ी साउथ की अभिनेत्री श्रुति हासन के साथ बनी है। फिलहाल फिल्म के शीर्षक का ऐलान नहीं किया गया है।नई फिल्म से अदिवी की पहली झलक सामने आ चुकी है, जिसमें उनका दमदार अवतार देखने को मिल रहा है।इसके साथ उन्होंने खुलासा किया कि फिल्म का नाम 18 दिसंबर को बताया जाएगा।पोस्टर में उनके चेहरे को काले कपड़े से छिपाया गया है और उनकी आंखें सारे राज खोलती हुई नजर आ रही हैं। उनके दाहिने कान में सोने की बाली उनके लुक में स्टाइल और स्वैग का एहसास जोड़ती है।श्रुति हासन ने अपने इंस्टाग्राम पर अदिवि शेष के फर्स्ट लुक की तस्वीर पोस्ट की और लिखा, क्या उनके आगमन से उनके जीवन में तूफान आएगा? टाइटल और फर्स्ट लुक 18 दिसंबर को आएगा। यह मेगा प्रोजेक्ट हिंदी और तेलुगु में शूट किया जाएगा, सुप्रिया यारलागड्डा द्वारा निर्मित यह फिल्म शेनिल देव द्वारा निर्देशित है।2022 की फिल्म मेजर के बाद अदिवि शेष की लगातार यह दूसरी हिंदी फिल्म होगी, जिसमें उन्हें मेजर संदीप उन्नीकृष्णन के रूप में दिखाया गया था। यह फिल्म शेनिल के फीचर निर्देशन की पहली फिल्म होगी, जो पहले कई तेलुगु ब्लॉकबस्टर्स के लिए फोटोग्राफी के निदेशक के रूप में काम कर चुके हैं, जिन्हें अदिवी शेष ने हेडलाइन किया था।

लोग अपनी पसंद और नापसंद के बारे में विचार रख सकते हैं तृप्ति डिमरी

ब्लॉकबस्टर फिल्म एनिमल में छोटे से रोल से धमाल मचाने वाली एक्ट्रेस तृप्ति डिमरी का कहना है कि सिनेमा स्वतंत्र कलात्मक अभिव्यक्ति के बारे में है। उन्होंने फिल्म के लिए निर्देशक के विजन को प्रस्तुत किया, हालांकि इसे स्त्री विरोधी का टैग दिया गया है।

फिल्म एनिमल हिंसा, रोमांस और इंटिमेट सीन्स से भरपूर है। एक्ट्रेस तृप्ति डिमरी ने बताया, मेरा मानना है कि सिनेमा स्वतंत्र कलात्मक अभिव्यक्ति के बारे में है और ऐसा ही होना चाहिए।

एक्ट्रेस ने कहा, जब मैंने फिल्म बुलबुल में बलात्कार और फिल्म कला में आत्महत्या का सीन किया, तो बहुत सारे लोग थे, जो मेरे पास पहुंचे। उन्होंने कहा कि मुझे वह सीन नहीं करना चाहिए क्योंकि यह एक सुखद सीन नहीं है, या आपको आत्महत्या का सीन नहीं करना चाहिए था, क्योंकि इससे लोग जीवन में ऐसा कदम उठा सकते हैं।

एक्ट्रेस ने कहा कि यदि वो सीन नहीं जोड़े जाते तो इसका कोई मतलब नहीं होता। मुझे भी ऐसा ही लगता है, यहां जिन

सीन्स के बारे में लोग बात कर रहे हैं, वे कहानी का एक अभिन्न हिस्सा थे, और हमें उन्हें जोडना पड़ा।

उन्होंने आगे कहा, उनके लिए एक एक्ट्रेस के रूप में यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि वह जिस किरदार को निभा रही हैं, उसे जज न करें।

उनके मुताबिक, मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जो मैंने अपने एक्टिंग कोच से अपनी एक्टिंग क्लासेज में सीखा है। हर बार जब आपको कोई किरदार निभाने के लिए दिया जाता है तो इसे पूरी ईमानदारी से निभाएं।

एक्ट्रेस ने कहा, भले ही आपका कैरेक्टर लोगों को मार रहा हो या कुछ बुरा कर रहा हो या किसी को नुकसान पहुंचा रहा हो, आपको वह सब कुछ महसूस करना होगा, जो कैरेक्टर को महसूस करना चाहिए क्योंकि उसके माइंड में जो कहीं से आ रहा है वह उचित है।

एक्ट्रेस तृप्ति डिमरी ने कहा कि वह अपने किरदारों कला, बुलबुल या जोया जैसी नहीं हैं और एक व्यक्ति के तौर पर उन्होंने जो किया है, उससे वह सहमत नहीं हैं।

एक्ट्रेस तृप्ति डिमरी ने कहा, मैंने अपने जीवन में ऐसा नहीं किया होगा। लेकिन उस स्थिति में उस पल में, मुझे निर्देशक के विजन के सामने समर्पण करना होगा और मुझे वही करना होगा, जो कैरेक्टर और स्क्रिप्ट मुझसे मांग करती है और इसे पूरी ईमानदारी से करना है, क्योंकि लोगों को अपनी राय पेश करने का अधिकार है। हम फिल्में बनाते हैं। हर फिल्म पर चर्चा होनी चाहिए।

तृप्ति डिमरी इस बात से सहमत हैं कि लोग अपनी पसंद और नापसंद के बारे में विचार रख सकते हैं। तृप्ति को यह बहुत अच्छा लगता है कि लोग फिल्म के बारे में बात कर रहे हैं। बता दें कि एक्ट्रेस फोर्ब्स एशिया की 2021 की 30 अंडर 30 सूची में शामिल थी।

तेजा सज्जा स्टारर सुपरहीरो फिल्म हनु–मन का ट्रेलर 19 दिसंबर को होगी रिलीज

हनु–मन, भारत की पहली सुपरहीरो फिल्म की शुरुआत करने वाला एक अभूतपूर्व उद्यम, प्रशांत वर्मा सिनेमैटिक यूनिवर्स की व्यापक दुनिया को उजागर करने के लिए तैयार है। तेजा सज्जा और अमृता अय्यर अभिनीत यह फिल्म 12 जनवरी, 2024 को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होने वाली है, जो भारतीय सिनेमा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।19 दिसंबर, 2023 को रिलीज होने वाले बहुप्रतीक्षित ट्रेलर के साथ रिलीज को लेकर उत्साह तेज हो गया है। देश भर के दर्शक उत्सुकता से दिनों की गिनती कर रहे हैं, अंजनाद्रि के काल्पनिक क्षेत्र में एक झलक पाने के लिए उत्सुक हैं।के निरंजन रेड्डी के निर्माण कौशल और श्रीमती चौतन्य की प्रस्तुति के तहत, हनु–मन में वरलक्ष्मी सरथकुमार, विनय राय, गेटअप श्रीनु, सत्या, राज दीपक शेट्टी और अन्य कलाकारों की एक प्रभावशाली टोली शामिल है , जो एक ऐसे सिनेमाई अनुभव का वादा करना जो सामान्य से परे हो।इस सिनेमाई प्रयास का मार्गदर्शन करने वाले प्रमुख व्यक्ति हैं जैसे कार्यकारी निर्माता अश्रिन रेड्डी, लाइन निर्माता वेंकट कुमार जेट्टी, और एसोसिएट निर्माता कुशाल रेड्डी, प्रत्येक ने इस सुपरहीरो गाथा के सावधानीपूर्वक निर्माण में योगदान दिया है।कथा में एक सिम्फोनिक परत जोड़ते हुए, गौरहरि, अनुदीप देव और कृष्णा सौरभ की संगीत रचनाएँ फिल्म के भावनात्मक और एक्शन से भरपूर दृश्यों को ऊंचा करने के लिए तैयार हैं।भाषाई सीमाओं से परे हनु–मान का वैश्विक दायरा उल्लेखनीय है। यह फिल्म न केवल विभिन्न भारतीय भाषाओं में बल्कि अंग्रेजी, स्पेनिश, कोरियाई, चीनी और जापानी में भी दर्शकों को लुभाने के लिए तैयार है, जो वास्तव में एक वैश्विक तमाशा सुनिश्चित करती है। जैसे–जैसे रिलीज की तारीख नजदीक आ रही है, हनु–मन भारतीय सिनेमा के उभरते परिदृश्य के लिए एक प्रमाण के रूप में खड़ा है, जो न केवल मनोरंजन बल्कि सुपरहीरो शैली में एक अग्रणी छलांग का वादा करता है। 12 जनवरी, 2024 को एक सिनेमाई ब्रह्मांड के जन्म और भारत के अपने सुपरहीरो के उद्भव को देखने के लिए तैयार हो जाइए।

42 की उम्र में शमा सिकंदर की खूबसूरती ने बनाया दिवाना, अदाओं से नजरें हटाना हुआ मुश्किल

शमा सिकंदर अपने किसी भी वर्क प्रोजेक्ट से ज्यादा नए और स्टाइलिश लुक्स के कारण अक्सर चर्चा में बनी रहती हैं. शमा ने अपने लंबे एक्टिंग करियर में कई फिल्मों और टीवी सीरियल्स में भी काफी काम किया है. हालांकि, इसके बावजूद अपनी एक्टिंग का खास जादू दर्शकों पर नहीं चला पाईं, लेकिन अपनी खूबसूरती और बोल्डनेस के दम पर वह हमेशा ही लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं. अब फिर से शमा का नया लुक वायरल हो रहा है. शमा काफी समय से सोशल मीडिया पर बहुत एक्टिव हो गई हैं. देखते ही देखते एक्ट्रेस इंटरनेट सेंसेशन बन चुकी हैं. फैंस तो उनकी एक झलक के लिए बेताब रहते हैं. शमा भी अपने चाहने वालों के साथ जुड़ी रहने के लिए इंस्टाग्राम पर काफी एक्टिव हो गई हैं. अब लेटेस्ट लुक में शमा खूबसूरत व्हाइट लहंगा पहने हुए नजर आ रही हैं. इसके साथ उन्होंने डीपनेक ब्लाउज कैरी किया है और साइड दुपट्टा लिया है. शमा ने अपने इस लुक को हैवी मेकअप किया है. उन्होंने सटल शाइनी बेस के साथ न्यू

ग्लॉसी लिप्स रखे हैं और स्मोकी आई मेकअप किया है. हेयर स्टाइल के लिए शमा ने अपने बालों को सॉफ्ट कर्ल्स का टच देकर ओपन रखा हुआ है. वहीं, एक्ट्रेस ने एक्सेसरीज के लिए भारी चोकर नेकपीस और हैवी ईयररिंग्स कैरी किए हैं. उन्होंने यहां एक हाथ में मैचिंग के बैंगल्स पहने हैं.

शमा इस एथानिक लुक में भी बेहद खूबसूरत और स्टनिंग दिख रही हैं. फैंस के बीच उनका ये नया लुक भी वायरल होने लगा है.

शमा की इतनी स्टाइलिश अदाओं और फिटनेस को देखकर अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता कि एक्ट्रेस 42 साल की हो चुकी हैं. अब शमा के चाहने वाले उन पर प्यार लुटाते हुए खूब कमेंट्स कर रहे हैं.

एनिमल के आगे घुटने टेकने को तैयार नहीं सैम बहादुर, 15वें दिन विक्की कौशल की फिल्म ने जमकर छापे नोट

विक्की कौशल की श्सैम बहादुरश्य एक दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी. वॉर बेस्ड ये फिल्म पहले दिन से ही क्राइम थ्रिलर एनिमल का डटकर मुकाबला कर रही है. कछुए की चाल से चलने के बावजूद श्सैम बहादुरश्य ने अपना पूरा बजट वसूल लिया है. चलिए यहां जानते हैं श्सैम बहादुरश्य ने रिलीज के 15वें दिन कितनी कमाई की है? श्सैम बहादुरश्य टिकट खिड़की पर एनिमल के तूफान के आगे डटी हुई है और रिलीज के 15 दिनों बाद भी विक्की कौशल की ये फिल्म करोड़ो में कारोबार कर रही है. हालांकि फिल्म धीमी स्पीड से आगे बढ़ रही लेकिन इसने बॉक्स ऑफिस पर 60 करोड़ से ज्यादा का कलेक्शन कर लिया है. फिल्म की कमाई की बात करें तो श्सैम बहादुरश्य का पहले हफ्ते का कलेक्शन 38.8 करोड रुपये रहा था. वहीं दूसरे हफ्ते फिल्म ने 25.8 करोड़ की कमाई की. श्सैम बहादुरश्य अब रिलीज के तीसरे हफ्ते में पहुंच चुकी है. इसी के साथ विक्की कौशल की फिल्म की रिलीज के तीसरे शुक्रवार यानी 15वें दिन की कमाई के शुरूआती आंकडे भी आ गए हैं. रिपोर्ट के मुताबिक श्सैम

बहादुरश्य ने रिलीज के 15वें दिन यानी तीसरे शुक्रवार को 2.25 करोड़ का कलेक्शन किया है. इसी के साथ श्सैम बहादुरश्य की 15 दिनों की कुल कमाई अब 66.85 करोड़ रुपये हो गई है.

राज्यमंत्री ने ग्रामीणों को आवास योजना के बांटे प्रमाण पत्र

- सांड़ी गांव में आयोजित हुआ विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम

संवाददाता।

पैलानी । तहसील अन्तर्गत सांडीध गांव में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा में पहुंचे जलशक्ति राज्य मंत्री रामकेश निषाद ने भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। ग्राम प्रधान पतराखन निषाद व ग्राम पंचायत अधिकारी अंकित अवस्थी ने जलशक्ति राज्यमंत्री रामकेश निषाद व ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधित्व अजय प्रताप सिंह का माल्यार्पण कर स्वागत किया। वहीं अन्य अतिथियों का भी मल्यार्पण व बैच अलंकरण किया गया। वहीं जल शक्ति राज्यमंत्री रामकेश निषाद ने विकसित भारत संकल्प यात्रा में ग्रामीणों को शपथ दिलाई। गांव की सखी, गेंदिया, रामदेवी, चुनकी आदि महिलाओं को प्रधानमंत्री आवास के प्रमाण पत्र सौंपे तथा रामधानी, संजय, रघुराज आदि को प्रधानमंत्री सम्मान निधि के प्रमाण

पत्र वितरित किए। वहीं मंडल अध्यक्ष पैलानी अमित निगम ने विकसित भारत संकल्प यात्रा को लेकर कहा कि यह यात्रा प्रत्येक गांव में चलाई जा रही है। विकास कार्यों को गांव–गांव जाकर मोदी और योगी सरकार द्वारा किया गया। विकास जगजाहिर है। बुंदेलखंड एक्सप्रेस–वे विकसित भारत संकल्प यात्रा का उदाहरण है। वहीं ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि अजय प्रताप सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गरीब असहाय, किसानों को विकास का पिटारा खोल दिया है। वहीं गंभीर बीमारियों के लिए पांच लाख का मुफ्त इलाज विधवा पेंशन, वृद्धा पेंशन व किसान सम्मान निधि इसके उदाहरण हैं। वहीं जल शक्ति राज्यमंत्री रामकेश निषाद ने कहा कि बुंदेलखंड में किसानों के नलकूपों में फ्री बिजली देने के साथ बुंदेलखंड कारिडोर बनाया जा रहा है, जिससे लोगों को रोजगार मिलेगा। वहीं आज मनरेगा का भुगतान खातों से हो रहा है। इस गांव के लिए उन्होंने सरकार भेदभाव करती थी। केवल दो जिलों में ही बिजली दी जाती थी, लेकिन आज हमारी सरकार में 75 जिलों में बिजली दी जा रही है। वहीं यहां भूरागढ़ व पैलानी में बैराज दिए गए हैं। यहां इस गांव में 600 शौचालय व 55 रिबोर ट्यूबवेल को ठीक किया गया है। इस दौरान प्रधान संघ ब्लाक अध्यक्ष तिंदवारी सुरेंद्र सिंह उर्फ छेदू सिंह, मंडल अध्यक्ष पैलानी अमित निगम, प्रधान मैना देवी निषाद, शिवबली निषाद, राकेश सिंह चौहान, ग्राम प्रधान खर्रे गोरेलाल निषाद, आलोक, राहुल अवस्थी, सीओ सदर अंबुजा त्रिवेदी, चौकी इंचार्ज खपटिहाकला मनोज पांडे, सब इंस्पेक्टर पैलानी चंद्रकांत शुक्ला आदि रहे। वहीं पशुपालन विभाग, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, सांड़ी जैविक समूह, आर्यावर्त विकास रथ जैसे प्रमुख स्टालों को भी लगाया गया।

319 करोड़ रुपये की लागत की इंडियन आयल बैतालपुर टर्मिनल पर अतिरिक्त सुविधाएं राष्ट्र को समर्पित कीं

ब्यूरो

देवरिया (उ0प्र0) देवरिया जिले मे भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 319 करोड़ रुपये की लागत की इंडियन ऑयल के बैतालपुर टर्मिनल पर अतिरिक्त सुविधाएं राष्ट्र को समर्पित कीं। प्रधान मंत्री द्वारा इन सुविधाओं का लोकार्पण वाराणसी से एक वर्चुअल समारोह के माध्यम से किया गया।इंडियन ऑयल के बैतालपुर टर्मिनल पर इस लोकार्पण समारोह में श्री शलभ मणि त्रिपाठी, विधायक, देवरिया सदर, देवरिया–कुशीनगर, श्री अखंड प्रताप सिंह, जिला मजिस्ट्रेट, देवरिया श्री संकल्प शर्मा, पुलिस अधीक्षक, देवरियाय भाजपा जिलाध्यक्ष श्री भूपेंद्र सिंह, श्री अंतरयामी सिंह,श्री देवेन्द्र सिंह, महाप्रबंधक (संचालन), यूपीएसओ–ए, इंडियनऑयल और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ जिला प्रशासन और इंडियन ऑयल के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।पूर्वी उत्तर प्रदेश में बढ़ती ऊर्जा मांगों को पूरा करने के लिए इस टर्मिनल पर 319 करोड़ की लागत से मौजूदा सुविधाओं में वृद्धि की गई है। इसकी भंडारण क्षमता 30,000 किलोलीटर से बढ़ाकर 1,02,000 किलोलीटर कर दी गई है। इस टर्मिनल में नए टैंकों का निर्माण किया गया है और कुछ मौजूदा टैंकों की भंडारण क्षमता को सुरक्षा मानदंडों को पूरा करते हुए बढ़ाया गया है। संशोधित टर्मिनल में 2 8 बे टैंक ट्रक लोडिंग गैन्ट्री और एमएस, एचएसडी, इथेनॉल और बायोडीजल के भंडारण टैंक भी शामिल है। यह टर्मिनल अब पटना–मोतिहारी–बैतालपुर पाइपलाइन से जुड़ चुका है। पाइपलाइन कनेक्टिविटी होने से प्रति वर्ष लगभग 14,000 टन कार्बन उत्सर्जन कम होने की उम्मीद है। इस टर्मिनल पर अब रेल वैगनों या पाइपलाइन के माध्यम से पेट्रोलियम उत्पाद प्राप्त करने की सुविधा उपलब्धा है। संवर्धित टर्मिनल पर वित्त वर्ष 23–24 के लिए अनुमानित श्रूपुट 1,090 टीएमटीपीए (एमएसरू 1230 केएलध्प्रतिदिन और एचएसडीरू 1970 केएलध प्रतिदिन) है।

क्षेत्र और राज्य के औद्योगिक

विकास और आर्थिक प्रगति में इस टर्मिनल का योगदान महत्वपूर्ण होगा। बॉटम लोडिंग सुविधाओं के साथ टैंक ट्रक लोडिंग का अत्याधुनिक स्वचालन सिस्टम न सिर्फ लोडिंग संचालन को सुव्यवस्थित करेगा वल्कि यह इस क्षेत्र में पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति बढ़ाने में भी सहायक होगा। इस सुधार से पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल में पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति व्यवस्था सुद्रण हो जायेगी। वाष्प पुनर्प्राप्ति इकाई के साथ मिलकर बॉटम लोडिंग सुविधाएं पर्यावरण में वीओसी के उत्सर्जन को कम करने में मदद करेंगी। इथेनॉल और बायो–डीजल की बढ़ी हुई भंडारण क्षमता पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थायी ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में इस टर्मिनल से क्षेत्र से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होने के साथ–साथ सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने की भी उम्मीद है।

देश को समृद्ध बनाना डबल इंजन की सरकार का संकल्प– विधायक

संवाददाता।

नरैनी । गांव–गांव और शहरी निकायों में जाकर सभी लक्षित लाभार्थियों को कल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलाना ही मोदी की गारंटी वाली गाड़ी का लक्ष्य है। देश को समृद्धि की ऊंचाइयों में पहुंचाना हमारी डबल इंजन सरकार का संकल्प है। विकसित भारत संकल्प यात्रा को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय विधायक ने यह बातें कहीं। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के अधिकारी और कर्मचारियों ने संबंधित योजनाओं की जानकारी ग्रामवासियों को दी गई।ब्लाक क्षेत्र के पंचमपुर और पोंगरी ग्राम पंचायत में विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया। शुभारंभ मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक ओममणी वर्मा ने मां सरस्वती के चित्र में दीपांजलि देकर की। विधायक ने कहा कि गांव गरीब किसानों और महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से समृद्ध बनाना ही डबल इंजन सरकार की प्रतिबद्धता है। कोई भी

भाई–बहन निराश न हों। सभी लक्षित पात्रों को जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए ही मोदी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा आयोजित की है। बताया कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाना ही हमारा सबका लक्ष्य है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे खंड विकास अधिकारी प्रमोद कुमार सिंह ने उपस्थित ग्रामवासियों को अपने विभाग के माध्यम से मिलने वाली कई योजनाओं की संपूर्ण जानकारी दी। कृषि विभाग के तकनीकी सहायक अमित कुमार ने किसान सम्मान निधि व उन्नत बीज वितरण सहित अपने विभाग की योजनाओं की, स्वास्थ्य विभाग से फार्मासिस्ट संदीप दुबे ने आयुष्मान योजना, इफको के अतुल पटेल ने नैनो उर्वरक के प्रयोग और लाभ आदि की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में उपस्थित किसान सम्मान निधि के लाभार्थियों को स्वीकृति प्रमाण पत्र दिए गए तथा लाभार्थियों से संवाद भी किया गया। सभी लाभार्थी किसानों ने किसान सम्मान निधि द्वारा खाद बीज आदि खरीदने में सहूलियत के बारे में अनुभव साझा किया और गर्मजोशी से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर जेईएमआई सुशील श्रीवास्तव, दोनो गांवों के ग्राम प्रधान, वरिष्ठ भाजपा नेता ओमप्रकाश पाण्डेय, वीरेंद्र द्विवेदी, आशा बहू ऊषा मिश्रा और रामपति गुप्ता, एएनएम पुष्पा राजपूत, वार्ड ब्वाय देवकुमार और रतीभान, समूह की महिलाओं और लाभार्थियों सहित सैकड़ों ग्रामवासी उपस्थित रहे।

सिपाही पर पत्नी ने घर से निकालने और जान से मरने का लगाया आरोप

ब्यूरो

देवरिया (उ0प्र0) देवरिया जिले के एक थाना पर तैनात सिपाही की पत्नी ने सिपाही और उसके परिजनों पर गंभीर आरोप लगाते हुए एसपी से मिलकर न्याय की गुहार लगाई। एसपी ने महिला के आरोपों की जांचकर कार्यवाई का भरोसा दिया। जिले के रुद्रपुर कोतवाली क्षेत्र के हणहा गांव निवासी रिंकू यादव का विवाह 28 जून 2020 में उत्तर प्रदेश पुलिस के सिपाही वेद प्रकाश यादव निवासी बेलहरा थाना महुली जिला संत कबीर नगर के साथ हुई थी। शादी में वर पक्ष की मांग के अनुरूप दान दहेज भी दिया गया था। शुरू में तो सब ठीक था लेकिन रिंकू जब गर्भवती हुई तो परिजनों का व्यवहार बदल गया। ससुराली उनके साथ दुर्व्यवहार करने लगे और प्रताड़ित करने लगे। बच्चा होने के बाद ससुरालियों ने रखने से मना कर दिया। इसको लेकर बकौल रिंकू चार बार पंचायत भी हो चुकी है। 15 दिन पहले ससुराल से मायके में लौटी रिंकू बदहवास हैं। उनका कहना है कि ससुर उसके दरोगा हैं और गोंडा में तैनात हैं और चचेरे ससुर ट्रैफिक में। पूरा परिवार पुलिस में है इन लोगों की योजना थी कि गोंडा ले जाकर मारकर फेंक देंगे। पुलिस में हैं किसी को पता भी नहीं चलेगा। यह सब जानकर मैं गोंडा जाने के बजाय मायके चली आई। पहले मैं ससुरालियों के अत्याचार को सहती रही लेकिन बच्चा डेढ़ साल का है। पति खर्च देने से मना कर रहा है। थक हारकर मैंने एसपी साहब से न्याय की गुहार लगाई है। पत्नी के आरोपों के बाबत मईल थाना में तैनात सिपाही वेद प्रकाश यादव से संपर्क नहीं होने से उनका पक्ष नहीं जाना जा सका।

शिक्षामित्रों के गैरहाजिर मिलने पर डीएम ने तलब किया स्पष्टीकरण

संवाददाता।

बांदा । डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने सोमवार को विकास खण्ड बड़ोखर खुर्द के प्राथमिक विद्यालय दुरेड़ी भाग–1 और भाग–2 का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान प्राथमिक विद्यालय दुरेड़ी भाग–1 में दो सहायक अध्यापक और दो शिक्षामित्र तैनात हैं, जिसमें से एक शिक्षामित्र के अनुपस्थित मिलने पर स्पष्टीकरण देने के निर्देश दिए। उन्होंने विद्यालय के प्रधानाध्यापक को विद्यालय के प्रत्येक कक्ष में तत्काल ट्यूबलाइट लगाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने शिक्षा की गुणवत्ता की परखने के लिए कक्षा–5 के बच्चों से हिन्दी की पुस्तक और 7 व 11 के पहाडेध एवं हिन्दी भाषा के शब्दों के अर्थ के बारे में बच्चों से पूंछा, जिस पर बच्चों द्वारा सही उत्तर दिया गया। उन्होंने विद्यालय में मिड–डे–मील वितरण के अन्तर्गत मीनू के अनुसार कराये जाने तथा विद्यालय में पानी की समुचित व्यवस्था एवं साफ–सफाई दुरूस्त रखने के निर्देश दिये।

बिजली की रौशनी से जगमगाएगा रनगढ़ किला – डीएम

संवाददाता

नरैनी । रंनगढ़ किला में बिजली पहुंचाकर रोशन करने का डीएम ने भरोसा दिया। जिलाधिकारी दुर्गाशक्ति नागपाल ने जलीयदुर्ग रंनगढ़ किले का अवलोकन किया। मौके पर मौजूद ग्रामीणों की मांग पर उपजिलाधिकारी से दुर्ग के विकास से जुड़ी व्यवस्थाओं की रूपरेखा तैयार करने का निर्देश दिया।रविवार को तहसील क्षेत्र के पनगरा गांव के मजरा शिवपुर गांव के निकट केन नदी की जलधारा के बीच बने रंनगढ़ दुर्ग में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने पहुंचकर भ्रमण किया। ऐतिहासिक दुर्ग के ऊपर पहुंची डीएम ने वहां की प्रकृति सुंदरता को देखा। वहां मौजूद दिव्य शिव प्रतिमा के दर्शन किये। साथ ही मूर्ति बनाने वाले मूर्तिकार विनोद दीक्षित को मौके पर बुलाकर शिव प्रतिमा के बारे में जानकारी ली। इस दौरान सूचना पाकर मौके पर पहुचे ग्रामीण रामबाबू कोटेदार, राजकुमार कल्लू, अजीज खां आदि ने दुर्ग को संरक्षित किये जाने की मांग की। बताया कि किले के ऊपर चारों तरफ की दीवारें टूटकर क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं। सीढ़ियां भी पूरी तरह जर्जर हो चुकी हैं। दुर्ग के उपर आने जाने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। बताया कि प्रत्येक वर्ष मकर संक्रांति पर्व पर दुर्ग में दो दिवसीय विशाल मेले का आयोजन होता है। रात्रि के पहर में अंधेरा हो जाता है, इससे लोगो को ठहरने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इस दौरान यूपी और एमपी के समीपस्थ गांवों के लोगो का जमघट लगता है। तमाम सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। जिलाधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल ने ग्रामीणों को दुर्ग के विकास और यहां पर जल्द ही बिजली की व्यवस्था करवाए जाने का आश्वासन दिया। मौके पर मौजूद एसडीएम विकास यादव को ग्रामीणो से मिलकर दुर्ग के विकास से जुड़ी रूपरेखा का मसौदा तैयार कराने के निर्देश दिए।

ग्राम प्रधान जगदीश यादव ने दुर्ग में बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाये जाने की मांग की। साथ ही पनगरा मुख्य सड़क से लेकर किले तक के मार्ग की दुरुस्त करवाये जाने की मांग भी की गई। डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने दुर्ग के विकास को लेकर काफी उत्साहित दिखी। ग्रामीणों को किले के सम्पूर्ण विकास का आश्वासन दिया।

जनक विलाप सुनकर दर्शको के छलक आए आंसू

संवाददाता।

बबेरू। दिन में प्रहलाद भक्त नाटक का मंचन कर दर्शको का मनमोह लिया। रात में धनुष यज्ञ रामलीला का मंचन किया गया। जिसकी फटी न पैर विवांई सो क्या जाने पीर पराई। जिसने कन्या न जाई वो क्या जाने दुख पराई। राजा जनक रंगशाला में राजाओं के सामने विलाप करते हुए सुनाया तो दर्शको के आंसू छलक आए। श्रीराम ने धनुष को भंग किया तो पंडाल जय श्रीराम के जयकारों से गूंज उठा। हजारों दर्शको ने परशुराम लक्ष्मण संवाद का आनंद उठाया। मौनी बाबा धाम में तीन दिवसीय राष्ट्रीय मेला एवं भंडारे के साथ आयोजित नाटक एवं रामलीला के तीसरे दिन सुबह से लेकर शाम तक भक्त प्रहलाद नाटक का मंचन किया गया और रात में धनुष यज्ञ रामलीला का मंचन उत्तर भारत के प्रसिद्ध कलाकरों ने प्रस्तुत किया। राजा जनक ने सीता स्वयंबर के लिए प्रण ठान लिया। जो धनुष को तोडेगा उसी के साथ सीता का स्वयंबर होगा। देश देशान्तर के राजाओं को आमांत्रण दिया। बडे बडे सूरमा राजाओं ने पधार कर धनुष को तोडने का प्रयास किया लेकिन कोई धुनष को हिला नही सके है। रावण और बाणासुर भी रंगशाला में पधार कर धनुष को प्रणाम किया। रावण बाणासुर संवाद से दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। मिथला नरेश जनक ने बिलाप करते हुए कहा कि जिसकी फटी न पैर विवांई सो क्या जाने पीर पराई और उपास्थित राजाओं को धिक्कारते हुए कहा कि वसुन्धरा बीरो से खाली है। जनक विलाप सुनकर दर्शको के आसू निकल आए। लक्ष्मण ने जनक के कठोर बचनों को सुनकर कहा कि यह अपमान है। श्रीराम का आदेश पाऊ तो इस धनुष के खंड खंड कर डालू। विश्वामित्र का आदेश पाकर श्रीराम ने धनुष को तोड़ दिया।

धनुष टूटते ही जय श्रीराम के जयकारों से पंडाल गूंज उठा। परसुराम मिथला की रंगशाला में धनुष टूटा देखकर क्रोधित हो गए। कहा कि जिसने धनुष तोड़ा हो वह समाज से अलग हो जाए। परशुराम लक्ष्मण संवाद सुबह तक चलता रहा। हजारों दर्शको ने सुबह तक संबाद का आनंद उठाया।

ट्रेन की चपेट आने से ब्यक्ति की मौत

ब्यूरो

देवरिया (उ0प्र0) देवरिया जिले मे गोरखपुर छपरा रेल खण्ड पर भाटपार रानी बनकटा रेलवे स्टेशन के बीच बनकटा रेलवे स्टेशन से करीब 2 किलोमीटर पश्चिम में ग्राम पंचायत गौरा निवासी पेशे से होम गार्ड नन्द जी यादव जो वर्तमान समय में थाना श्रीराम पुर में अपनी ड्यूटी कर रहे थे वह कुल दो भाइयों में छोटे भाई थे जबकि उनके बड़े भाई नैनीताल उत्तराखंड में रहते हैं बताया जा रहा है की उनके द्वारा अपने ही गांव निवासी स्वर्गीय राम देव यादव के ब्रह्मभोज में सामिल होने हेतु जाते समय रेल खण्ड के रेल ट्रैक पर दोनों तरफ से अचानक से ट्रेन आ जाने की वजह से आज दिनांक 18ध्12ध्023ध्0 की साम को 4 बजे के करीब ग्राम पंचायत गौरा निवासी उपरोक्त नन्द जी यादव होम गार्ड के अचानक दोनों तरफ की रेल पटरी पर एक साथ आई ट्रेन से पटरी पर ट्रेन के चपेट में आकर दुखद मृत्यु हो गई यह समाचार प्राप्त होते ही गांव में कोहराम मच गया वहीं स्थानीय पुलिस द्वारा शव को कब्जे में ले कर पोस्टमार्टम हेतु भेज दीजिए जाने की खबर है इसको ले कर गांव में मातम छा गया है।

लक्ष्य तय करें और फिर मेहनत करें, तभी मिलेगी सफलता

– जिला स्तरीय कैरियर गाइडेंस और प्रतिभा सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

संवाददाता। बांदा । लोधी क्षत्रिय एंपलाइज एसोसिएशन (लक्ष्य) के द्वारा जिला स्तरीय कैरियर गाइडेंस और प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

इस दौरान मुख्य अतिथि राजकुमार भारती राष्ट्रीय महासचिव व धर्मपाल सिंह लोधी राष्ट्रीय अध्यक्ष मौजूद रहे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अमरपाल सिंह लोधी राष्ट्रीय लक्ष्य संरक्षक आईआरएस ने बच्चों को जीवन में सफल होने के लिए जागरूक किया। इसमें अमरपाल सिंह द्वारा अमल शब्द पर विशेष गौर करने के लिए बच्चों को बताया गया। 'अ' का मतलब अध्ययन 'म' मतलब मनन 'ल' का मतलब लिखना पर विशेष ध्यान देने के लिए

बच्चों को कहा। बीएल महान द्वारा स्वामी ब्रह्मानंद के जीवन दर्शन में शिक्षा के लिए उनका अपना तन मन धन समर्पित करने के प्रति सभी लोगों को बताया गया। राजकुमार भारतीय अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट ने बच्चों से कहा कि आप जीवन में कुछ भी कर सकते हो, यदि आपका अपना लक्ष्य स्पष्ट हो। जिला कासगंज अध्यक्ष देवदत्त द्वारा बांदा की एक अनाथ बेटी शिवानी राजपूत को इंटर तक की पढ़ाई के लिए गोद लिया। प्रत्येक ग्राम पंचायत से हाई स्कूल, इंटर, स्नातक, परास्नातक, खिलाड़ियों तथा समाज के नवीनियुक्त, सेवानिवृत्त तथा बच्चों को सम्मानित किया गया।

सड़क हादसे में घायल किसान ने दम तोड़ा

- घर जाते समय पीछे से बाइक सवार ने मारी थी टक्कर
- तिंदवारी थाना क्षेत्र के परसौड़ा गांव में हुई थी दुर्घटना

संवाददाता बांदा । तिंदवारी थाना क्षेत्र के परसौड़ा गांव में सड़क हादसे में घायल हुए किसान की उपचार के दौरान रविवार की सुबह जिला अस्पताल में मौत हो गई। मौत की खबर मिलते ही परिवारीजनों का रो–रोकर बुरा हाल हो गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

परसौड़ा गांव निवासी वीरेंद्र कुमार (45) पुत्र शिवनारायण 6 दिसंबर की शाम को खेतों से अपने घर वापस लौट रहा था। तभी जूनियर हाईस्कूल के पास पीछे से आ रहे बाइक सवार ने टक्कर मारकर जख्मी कर दिया था। इससे वीरेंद्र गंभीर रूप से जख्मी हो गया था। परिजनों ने उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया, वहां पर उपचार के दौरान रविवार की सुबह वीरेंद्र की मौत हो गई। मौत की खबर मिलते ही परिवारीजनों का रो–रोकर बुरा हाल हो गया।

खबर पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक के छोटे भाई अवधनारायण ने बताया कि वीरेंद्र तीन भाइयों में दूसरे नंबर का था। अभी तक उसकी शादी नहीं हुई थी। सड़क हादसे में घायल हो जाने के कारण उसकी मौत हो गई। परिजनों का रो–रोकर बुरा हाल है।

जमीनी विवाद में युवक को डंडों से पीटकर किया लहूलुहान

संवाददाता।

बांदा। जमीनी विवाद में एक युवक को खेत में डंडों से पीटकर लहूलुहान कर दिया गया। ग्रामीण दौड़े तो हमलावर वहां से भाग निकले। जख्मी युवक को रानी दुर्गावती मेडिकल कालेज में दाखिल कराया गया, वहां उसका उपचार किया जा रहा है। मामले की सूचना पुलिस को दे दी गई है। एक अन्य घटना में बटवारे का विवाद होने पर दंपति को मारपीट कर जख्मी कर दिया गया। शहर कोतवाली क्षेत्र के मवई गांव निवासी रामचरन (26) पुत्र विजयकरन रविवार की दोपहर खेत गया था। इसी बीच दबंग खेत में आ धमके और उसे गाली गालौज करने लगे। विरोध करने में रामचरन को डंडो से पीट कर घायल कर दिया। शोर सुनकर आस पास खेतो में काम कर रहे ग्रामीण दौड़ पड़े। हमवार मौके से फरार हो गए। घायल को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां डाक्टरो ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे रानी दुर्गावती मेडिकल कालेज रेफर कर दिया। घायल के भतीजे बउवा ने बताया कि उसके पिता ने साढेध चार विस्वा जमीन बेची थी। एक साल पहले उसके पिता की मौत हो चुकी है। दबंग रामचरन की शेष पड़ी जमीन और मांग रहे है। मना करने पर उसे मारपीट कर घायल कर दिया। घटना की सूचना पुलिस को दे दी गई है। एक अन्य घटना में शहर कोतवाली क्षेत्र के कुरौली गांव निवासी दिनेश ने अपने छोटे भाई के साथ मिलकर दस हजार रूपए का प्रिज खरीदा था। दिनेश मुम्बई में रहता है। वह दीपावली में घर आया। उसने छोटे भाई से प्रिज मांगा छोटे भाई ने उससे प्रिज का आधा रूपया मांगा।

हिन्दी दैनिक विजडम इंडिया
स्वामी,मुद्रक एवं प्रकाशक श्री शील कुमार शुक्ला द्वारा हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा लि0 ,94, एम0जी0 मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से छपवाकर 633/387,गेहमर कुंज कालोनी, फैजाबाद रोड, चिनहट, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।
सम्पादक–शील कुमार शुक्ला
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ मान्य होगा।